Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 21 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, शनिवार 29 जून 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

विश्व में सबसे अधिक शक्ति आत्मा में है।

The Self (Soul) is the strongest power in the world.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

संक्षिप्त समाचार

डिप्टी एनएसए विक्रम मिस्री होंगे अगले विदेश सचिव, सरकार ने जारी किया आदेश

नई दिल्ली (आरएनएस)। राष्ट्रीय उप सुरक्षा सलाहकार और भारतीय विदेश सेवा (आईएफएस) के वरिष्ठ अधिकारी विक्रम मिस्री विदेश मंत्रालय के अगले सचिव होंगे। वह निवर्तमान विदेश सचिव विनय क्वात्रा का स्थान लेंगे। मंत्रिमंडल की नियुक्ति संबंधी समिति के निर्णय के अनुसार क्वात्रा का विस्तारित कार्यकाल 14 जुलाई को समाप्त हो जायेगा और उसके बाद मिस्री विदेश मंत्रालय में विदेश सचिव की जिम्मेदारी संभालेंगे। कार्मिक लोक शिकायत एवं पेंशन मंत्रालय के शुक्रवार को जारी एक अधिशासी आदेश के अनुसार मिस्री की नियुक्त 15 जुलाई से प्रभावी होगी।

डेरा ब्यास मुखी से मिले हरियाणा के सीएम नायब सैनी

अमृतसर (आरएनएस)। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी आज पंजाब के दौरे पर हैं। वह राधा स्वामी सत्संग डेरा ब्यास पहुंचे। यहां उन्होंने बाबा गुरिंदर सिंह ढिल्लों से मुलाकात की। मुख्यमंत्री नायब सैनी गोल्डन टेंपल भी गए। सैनी ने राधा स्वामी सत्संग ब्यास के दर्शन करने के बाद सोशल मीडिया पर एक पोस्ट भी शेयर की। पोस्ट में उन्होंने लिखा 'राधा स्वामी सत्संग ब्यास के आध्यात्मिक प्रमुख बाबा गुरिंदर सिंह ढिल्लों के कुशल नेतृत्व में आरएसएसबी कई सामुदायिक सेवा प्रयासों में सबसे आगे रहा है।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की अध्यक्षता में यूनिफाईड कमाण्ड की बैठक सम्पन्न

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने आज सर्किट हाउस रायपुर में आयोजित यूनिफाईड कमाण्ड की बैठक में कहा कि छत्तीसगढ़ राज्य में माओवादी गतिविधियों में निरन्तर कमी आ रही है। राज्य में केन्द्रीय सुरक्षा बलों और छत्तीसगढ़ पुलिस द्वारा बेहतर तालमेल के साथ माओवादियों के विरूद्ध सफलतापूर्वक चलाये जा रहे संयुक्त अभियान के कारण यह संभव हो सका है। माओवादियों के विरूद्ध चलाये जा रहे सघन अभियान के साथ-साथ शासन की नवीन ''नियद नेल्लानार योजना'' के तहत विकास कार्यों में भी तेजी लायी जा रही है, जिससे आम जनता का शासन व प्रशासन के प्रति विश्वास बढ़ा है।

छत्तीसगढ़ से माओवादी समस्या के समूल उन्मूलन पर दिया गया जोर

मुख्यमंत्री श्री साय ने माओवाद प्रभावित क्षेत्रों में विकास कार्यों को प्राथमिकता देते हुए सुचारू आवागमन हेतु सड़क, पुल-पुलियों एवं अन्य शासकीय निर्माण कार्यों को उच्च गुणवत्ता के साथ निर्धारित समय सीमा में पूर्ण करने के निर्देश दिए। माओवाद प्रभावित क्षेत्रों में संचालित निर्माण कार्यों को शीघ्र पूरा किये जाने हेतु आवश्यक सुरक्षा व्यवस्था उपलब्ध कराने के भी निर्देश मुख्यमंत्री श्री साय द्वारा दिये गये। बैठक में माओवाद प्रभावित क्षेत्रों में पुलिस के सूचना तंत्र को और अधिक मजबूत बनाये जाने तथा स्थानीय ग्रामीणों को विश्वास में लेकर माओवाद के विरूद्ध अभियान चलाने के निर्देश दिये गये। साथ ही माओवाद प्रभावित क्षेत्रों में तैनात केन्द्रीय और राज्य के सुरक्षा बलों के जवानों की समस्याओं को लेकर भी चर्चा की गई तथा सुरक्षा बलों के कैम्पों में जवानों को आवश्यक मूलभूत सुविधाएं और संसाधन उपलब्ध कराने के निर्देश दिये गये। बैठक में छत्तीसगढ़ राज्य के सीमावर्ती राज्यों विशेषत: महाराष्ट्र, तेलंगाना, आन्ध्रप्रदेश और उड़ीसा के साथ बेहतर समन्वय, सीमावर्ती क्षेत्रों में संयुक्त कार्यवाही, सम्पर्क मार्गों पर सुरक्षा बलों द्वारा सतत निगरानी के निर्देश दिये गये और सीमावर्ती राज्यों के साथ सूचनाओं को साझा किये जाने पर भी जोर दिया गया। साथ ही यह भी निर्देश दिये गये कि माओवादियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान में यह सुनिश्चित किया जाए कि स्थानीय ग्रामीणों को किसी प्रकार की असुविधा नहीं हो।

नीट मामले में संसद में हंगामा, राहुल गांधी बोले- देश के युवा घबराए, प्रधान बोले- हम जवाब देने को तैयार

नई दिल्ली (आरएनएस)। नीट पेपर लीक मामले में पूरे देश में सियासत गरमाई हुई है। सड़क पर हंगामा और संसद में संग्राम जारी है। आज संसद के दोनों सदनों में राष्ट्रपति के अभिभाषण के लिए धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा शुरू हुई। लोकसभा में चर्चा के पहले ही विपक्ष ने नीट को लेकर हंगामा शुरू कर दिया। इसके बाद निचले सदन की कार्यवाही सोमवार सुबह तक के लिए स्थगित कर दी गई। विपक्ष हृश्वश्वज्ञ पर चर्चा की मांग को लेकर स्थगन प्रस्ताव लाया था।

लोकसभा स्पीकर ने कहा कि नियमों के मुताबिक राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद के बीच स्थगन प्रस्ताव नहीं लाया जाता। उधर, संसद में जाने से पहले राहुल गांधी ने कहा, 'मैं पीएम से रिक्वेस्ट करता हूं कि हृश्वश्वज्ञ मामले पर रिस्पेक्टफुली चर्चा करें। देश के युवा घबराए हुए हैं। उन्हें नहीं पता क्या होने वाला है। संसद से यह मैसेज जाना चाहिए कि सरकार और विपक्ष उनकी चिंताओं को लेकर एक साथ हैं। नीट मामले पर शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि सरकार हृश्वश्वज्ञ पर जवाब देने के लिए तैयार है. उन्होंने कहा कि नीट पर विपक्ष भ्रमित न करे, हम चर्चा से भाग नहीं रहे। छात्रों और अभिभावकों से सुझाव मांगे गए हैं। शिक्षा मंत्री ने कहा कि सरकार प्रतिबद्धता से मामले की जांच करवा रही है, दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा।

मल्लिकार्जुन खड़गे ने उठाया एयरपोर्ट के स्ट्रक्चर का मुद्दा

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने सदन में कहा कि बुनियादी ढांचे से जुड़े स्ट्रक्चर ताश के पत्तों की तरह ढह रहे हैं। केंद्र की मोदी सरकार का भ्रष्टाचार और आपराधिक लापरवाही इसके लिए जिम्मेदार है। दिल्ली हवाई अड्डे (टी1) की छत गिरी है। इसके अलावा जबलपुर हवाई अड्डे की छत गिरी, अयोध्या की नई सड़कों की हालत खस्ता है। राम मंदिर लीकेज, मुंबई ट्रांस हार्बर लिंक रोड में दरारें, 2023 और 2024 में बिहार में 13 नए पुल टूटे।

कांग्रेस ने लगाया संसद में राहुल गांधी की माइक बंद करने का आरोप

स्पीकर बोले- हमारे पास नहीं है कोई बटन

नई दिल्ली (आरएनएस)। नीट पेपर लीक के मुद्दे को लेकर शुक्रवार को संसद में भारी हंगामा देखने को मिला। इसी बीच कांग्रेस पार्टी ने आरोप लगाया है कि लोकसभा में नीट पेपर लीक पर चर्चा की मांग करने के दौरान राहुल गांधी की माइक बंद कर दी गई।

कांग्रेस ने सोशल मीडिया एक्स पर वीडियो शेयर करते हुए लिखा, जहां एक ओर पीएम नरेंद्र मोदी नीट पर कुछ नहीं बोल रहे, उस वक्त विपक्ष के नेता राहुल गांधी युवाओं की आवाज सदन में उठा रहे हैं। लेकिन, ऐसे गंभीर मुद्दे पर माइक बंद करने जैसी ओछी हरकत कर युवाओं की आवाज को दबाने की साजिश की जा रही है।

कांग्रेस द्वारा शेयर किए गए वीडियो में देखा जा सकता है कि राहुल गांधी लोकसभा में अपनी बात रख रहे थे कि अचानक से उनकी माइक बंद की गई या फिर आवाज नहीं आई। जिसके बाद विपक्षी दलों के नेता माइक-माइक बोलने लगे। इस पर स्पीकर कहते हैं कि मैं माइक बंद नहीं करता हूं, यहां कोई बटन नहीं है।

दिल्ली एयरपोर्ट के टर्मिनल 1 से उड़ानें अनिश्चितकाल के लिए बंद

मृतक के परिजनों को 20 लाख के मुआवजे का ऐलान

नई दिल्ली (आरएनएस)। दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट के टर्मिनल 1 से विमानों का संचालन अनिश्चितकालीन के लिए बंद कर दिया गया है। यहां शुक्रवार सुबह ही छत का एक बड़ा हिस्सा गिर गया था, जिसमें एक व्यक्ति की मौत हो गई थी और 6 घायल हुए थे। हादसे में मारे गए व्यक्ति के परिजनों को 20 लाख रुपए का मुआवजा देने का ऐलान किया गया है। साथ ही दिल्ली एयरपोर्ट ने कहा है कि सभी घायलों को तीन-तीन लाख रुपए का मुआवजा दिया जायगा। भारी बारिश के बाद शुक्रवार को एयरपोर्ट के टर्मिनल वन पर छत गिरने से हुए हादसे में एक व्यक्ति की मौत हो गई और आठ लोग घायल हो गए। दिल्ली एयरपोर्ट ने एक्स पर कहा है कि टर्मिनल वन की सभी फ्लाइट रात 11 बजे तक टर्मिनल दो और तीन से जाएंगी और लैंड करेगी।

स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने किया आरोग्य मेले का उद्घाटन

रायपुर (विश्व परिवार)। पीएचडी चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (PHDCCI) ने आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से 28-30 जून 2024 को कृषि मंडपम, ड्डत्यङ्क, रायपुर, छत्तीसगढ़ में 3 दिवसीय रायपुर आरोग्य मेले का आयोजन किया है। आज कार्यक्रम का उद्घाटन छत्तीसगढ़ के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल ने किया। उद्घाटन समारोह के अन्य गणमान्य व्यक्तियों में ड्डत्यङ्क के माननीय कुलपति डॉ. गिरीश चंदेल, आयुष निदेशालय, छत्तीसगढ़ के संयुक्त निदेशक डॉ. सुनील कुमार दास, ड्डत्यङ्क के डीन डॉ. जी. के. दास, छत्तीसगढ़ चैप्टर PHDCCI के चेयरमैन श्री शंकर बजाज, निदेशक सुश्री मिली दुबे शामिल थे। इस कार्यक्रम का उद्देश्य आयुष, आयुर्वेद, जैविक उत्पाद, यूनानी, सिद्ध, हर्बल, प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ, कोल्ड चेन, उद्योग और कोल्ड सप्लाई चेन नेटवर्क पर ध्यान केंद्रित करना है, जिसका उद्देश्य निवेश और व्यापार के अवसरों को बढ़ाना है। यह विभिन्न हितधारकों, उद्योग, शैक्षणिक और नीति एजेंसियों को एक सामान्य मंच पर लाकर योजनाओं और प्रोत्साहनों, बाजार विकास प्रक्रियाओं, विकास और प्रबंधन प्रथाओं, बहु-मॉडल परिवहन सुविधाओं, और संबंधित वस्तुओं पर राज्य और केंद्रीय सरकारों के साथ संवाद स्थापित करने का एक मंच प्रदान करेगा।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन छत्तीसगढ़ को मिला सम्मान

आयुष्मान भारत, गुणवत्त स्वास्थ्य कार्यक्रम में किया गया राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन छत्तीसगढ़ की टीम का सम्मान

रायपुर (विश्व परिवार)। विज्ञान भवन नई दिल्ली में आयोजित आयुष्मान भारत, गुणवत्त स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत राज्य के बलौदाबाजार के आयुष्मान आरोग्य मंदिर उप स्वास्थ्य केन्द्र सहसा व जिला चिकित्सालय कोंडागांव की टीम का दिल्ली में सम्मान किया गया । विदित हो कि स्वास्थ्य सेवाओं के गुणवत्ता पूर्ण प्रदायगी व राष्ट्रीय स्तर कड़े मानकों पर खरा उतरने वाले अस्पतालों को ही केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा गुणवत्ता प्रमाण-पत्र जारी किए जाते हैं।

छत्तीसगढ़ के स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल के नेतृत्व में स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों कर्मचारियों ने अभूतपूर्व प्रदर्शन करते हुए बेहतर स्वास्थ्य सेवा प्रदायगी व अस्पताल की सेवाओं और संतुष्टि स्तर पर खरा उतरते हुए यह सम्मान प्राप्त किया है। आयुष्मान भारत, गुणवत्त स्वास्थ्य कार्यक्रम के दौरान केंद्रीय राज्य मंत्री, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, अनुप्रिया पटेल द्वारा सम्मान प्राप्त सभी राज्यों के प्रतिनिधियों को सम्मानित किया गया।

छत्तीसगढ़ के स्वास्थ्य विभाग के अपर मुख्य सचिव श्री मनोज पिंगुआ के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के मिशन संचालक डॉ. जगदीश सोनकर, उप संचालक गुणवत्ता आश्वासन डॉ डी. के. तुर्रे, राज्य कार्यक्रम प्रबंधक श्री आनन्द साहू, विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी डॉ अभ्युदय शक्ति तिवारी, राज्य कार्यक्रम प्रबंधक शहरी स्वास्थ्य डॉ प्रदीप टंडन, राज्य सलाहकार आयुष्मान आरोग्य मंदिर डॉ नरेंद्र सिन्हा, राज्य सलाहकार गुणवत्ता आश्वासन डॉ विक्रम शर्मा, राज्य सलाहकार ब्रिज कार्यक्रम अंकिता तिवारी के साथ राज्य व जिलों से आये अधिकारी कर्मचारी सम्मिलित हुए।

हंगामें के बीच संसद में बेहोश हुईं कांग्रेस सांसद फूलो देवी नेताम

नई दिल्ली (आरएनएस)। राज्यसभा में शुक्रवार को राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा-स्नातक (नीट-यूजी) के मुद्दे पर हंगामे के बीच कांग्रेस सांसद फूलो देवी नेताम शुक्रवार को अचानक गिरीं और बेहोश हो गईं जिसके बाद उन्हें स्ट्रेचर पर राम मनोहर लोहिया अस्पताल ले जाया गया। पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने यह जानकारी दी। उन्होंने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर पोस्ट किया, नीट, यूजीसी-नेट और अन्य पेपर लीक घोटालों पर तत्काल चर्चा से सरकार के इंकार के कारण आज राज्यसभा में हुए शोर शराबे के बीच कांग्रेस सांसद फूलो देवी नेताम अचानक गिरीं और बेहोश हो गईं। कुछ दिन पहले ही उन्हें डेंगू हुआ था। रमेश ने कहा, फूलो देवी नेताम को राम मनोहर लोहिया अस्पताल ले जाना पड़ा। हमें उम्मीद है कि वह जल्द ठीक हो जाएंगी।

राजधानी में 5 स्थानों पर लगेंगे फास्ट चार्जिंग स्टेशन

नागरिकों को जल्द मिलेगी 4 व्हीलर ई व्हीकल चार्जिंग स्टेशन की सुविधा

रायपुर नगर निगम और आईओसीएल के बीच हुआ एमओयू

रायपुर (विश्व परिवार)। वाहनों से बढ़ते वायु और ध्वनि प्रदूषण को कम करने सरकार द्वारा विभिन्न कदम उठाए जा रहे हैं। इसमें ग्रीन एनर्जी का उपयोग एक महत्वपूर्ण कदम है जिसमें इलेक्ट्रिक वाहनों के उपयोग को बढ़ाने पर जोर दिया जा रहा है। रायपुर के नागरिक भी ई व्हीकल का उपयोग कर रहे हैं। इसी संदर्भ में जिला प्रशासन ने नागरिकों को फोर व्हीलर इलेक्ट्रिक वाहन के फास्ट चार्जिंग की सुविधा प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाया है।

कलेक्टर डॉ गौरव सिंह की उपस्थिति में आज कलेक्टर सभाकक्ष में नगर निगम रायपुर और इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड के मध्य एक महत्वपूर्ण एमओयू पर हस्ताक्षर किया। इस एमओयू के तहत राजधानी के पांच प्रमुख स्थानों पर आईओसएल द्वारा फास्ट चार्जिंग स्टेशन स्थापित किए जाएंगे जिससे वाहनों का जल्द से जल्द रीचार्ज हो पाएगा।

नागरिकों को इलेक्ट्रिक व्हीकल के लिए फास्ट चार्जिंग की सुविधा देने के लिए जिले के सुभाष स्टेडियम परिसर, पुराना स्मार्ट सिटी ऑफिस परिसर, गांधी उद्यान, अनुपम गार्डन और जवाहर बाज़ार पार्किंग। इस एमओयू के अंतर्गत, आईओसएल द्वारा स्थापित किए जाने वाले चार्जिंग स्टेशनों से होने वाली आय का 10त्न हिस्सा रायपुर नगर निगम के साथ साझा किया जाएगा।

इस समझौते के होने से रायपुर में इलेक्ट्रिक वाहनों के उपयोग को अधिक बढ़ावा मिलेगा और शहर की हरित पहल को मजबूत करने में मदद मिलेगी। फास्ट चार्जिंग स्टेशनों की स्थापना, नागरिकों को सुविधा प्रदान करने और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस पहल से रायपुर में पर्यावरण संरक्षण और तकनीकी विकास का मेल होगा।

इस अवसर पर नगर निगम के आयुक्त श्री अबिनास मिश्रा, जिला पंचायत के सीईओ श्री विश्वदीप, सहायक कलेक्टर सुश्री अनुपमा आनंद एवं आईओसीएल के सीनियर इंजीनियरिंग ऑफिसर श्री सौरभ प्रियदर्शन उपस्थित थे।

राष्ट्रपति के अभिभाषण पर विपक्ष चर्चा नहीं करना चाहता : बृजमोहन अग्रवाल

राष्ट्रपति के अभिभाषण पर नीट सहित सभी विषय पर चर्चा की जा सकती थी

रायपुर (विश्व परिवार)। शुक्रवार को लोकसभा में कांग्रेस व अन्य विपक्षी दलों के सदस्यों की 'नीट' परीक्षा में कथित अनियमितता पर चर्चा कराने की मांग को लेकर हंगामे के कारण लोकसभा की कार्यवाही सोमवार 1 जुलाई सुबह 11 बजे तक के लिए स्थगित कर दी गई। जिस पर रायपुर सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल ने पत्रकारों से बात करते हुए अपनी प्रतिक्रिया दी।

श्री अग्रवाल ने कहा कि, आज के दिन राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा होनी थी। लेकिन विपक्ष राष्ट्रपति के अभिभाषण पर चर्चा नहीं करना चाहता था। विपक्ष चाहता तो अभिभाषण पर चर्चा में जो भी कहना चाहते वो कह सकते थे। लेकिन कांग्रेस समेत विपक्षी दलों ने नियमों के विरुद्ध जाकर और हंगामा करके लोकसभा की कार्यवाही को स्थगित करवा दिया।

कांग्रेस का मकसद चर्चा करना नहीं है बल्कि हंगामा करना है।

श्री अग्रवाल ने कहा कि 18वीं लोकसभा का यह पहला सत्र है जब देश भर से चुनकर आए नए सांसद भी कार्यवाही को जानना और समझना चाहते हैं। ऐसे समय हंगामा करके लोकसभा की कार्यवाही को बाधित करना सही नहीं है। नीट मामले का राष्ट्रपति जी ने पहले ही अपने भाषण में उल्लेख किया है। लेकिन विपक्ष ने मामले में हंगामा करके देश की जनता की जन आकांक्षा को तोड़कर चर्चा से भाग गए यह निंदनीय है।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/दुर्ग-भिलाई/बलौदाबाजार
रायपुर, शनिवार 29 जून 2024
www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

राज्यपाल विश्वभूषण हरिचंदन के विधिक सलाहकार को दी गई भावभीनी विदाई

रायपुर (विश्व परिवार)। राज्यपाल श्री विश्वभूषण हरिचंदन के विधिक सलाहकार श्री राजेश श्रीवास्तव अपनी अर्धवार्षिकी सेवा पूर्ण कर सेवानिवृत्त हो रहे है। इस अवसर पर उनको आज राजभवन में भावभीनी विदाई दी गई। राज्यपाल श्री विश्वभूषण हरिचंदन ने उनके उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि श्री श्रीवास्तव ने राजभवन में पदस्थापना के दौरान अपने दायित्वों का निर्वहन कुशलता पूर्वक किया है। किसी भी फाइल के निराकरण में कानूनी पहलूओं की जानकारी महत्वपूर्ण होती है। विधिक सलाहकार के पद पर रहते हुए श्री श्रीवास्तव ने दक्षता पूर्वक अपना कार्य करते हुए फाइलों के सही तरीके से निराकरण में सहयोग किया। भगवान जगन्नाथ से प्रार्थना है कि उनका भावी जीवन सुखमय रहे। राज्यपाल ने श्री श्रीवास्तव को शाल और स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। राज्यपाल के सचिव श्री यशंवत कुमार ने भी श्री श्रीवास्तव के सुखद भविष्य के लिए उन्हें शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर उप सचिव श्रीमती हिना अनिमेष नेताम सहित राजभवन के अन्य अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित थे।

किसान यूनियन को देशद्रोही बताने वाले भाजपा नेता के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज हो : तेजराम विद्रोही

राजिम (विश्व परिवार)। देश के प्रमुख किसान संगठन भारतीय किसान यूनियन (टिकैत) जिसने देश के तमाम राज्य सरकारों तथा सभी वर्गों के प्रशासनिक अधिकारियों, नेताओं से वार्ता करके किसान समस्याओं का समाधान निकालने में सक्षम है। नगरनार में चल रहे झाड़ेश्वर संघर्ष समिति के आठ सूत्रीय आंदोलन का भारतीय किसान यूनियन ने समर्थन दिया है जिससे एक भाजपा नेता द्वारा राष्ट्रद्रोह कहा गया है। यह गाली सिर्फ किसान वर्ग को नहीं बल्कि देश के आदिवासियों, शोषितों, दलितों, पिछड़े वर्ग को दी गयी है जिनकी आवाज कॉरपोरेट दलाल एवं शोषणकारी मानसिकता के लोग दिल्ली तक नहीं पहुँचने देना चाहते हैं। भारतीय किसान यूनियन देश भर के सभी आदिवासियों, शोषितों, दलितों, पिछड़ों की आवाज प्रमुखता से दिल्ली तक उठाती है। तीन काले कृषि कानूनों को रद्द करवाने के लिए दिल्ली में चले किसान आंदोलन में शामिल किसानों को आतंकवादी, खालिस्तानी, देशद्रोही, गुंडे, बदमाश कहा गया और अब यह छत्तीसगढ़ में भी हो रहा है। सत्ताधारी पार्टी के लोगो द्वारा किसानो को राष्ट्रद्रोही जैसी अपमानजनक गाली देकर सोशल मीडिया पर वायरल किया जा रहा है जिसका संदेश का स्क्रीन शॉट संलग्न है।

एमडी अविनाश मिश्रा ने स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट का किया निरीक्षण

247 वाटर सप्लाई, अंडर ग्राउंड केबलिंग, महराजबंध एसटीपी प्रोजेक्ट का लिया जायजा

केबलिंग के दौरान क्षतिग्रस्त सड़कों को तुरंत दुरुस्त करने के निर्देश

रायपुर (विश्व परिवार)। नगर निगम कमिश्नर एवं रायपुर स्मार्ट सिटी के एम डी श्री अबिनाश मिश्रा ने स्मार्ट सिटी प्रोजैक्ट्स का औचक निरीक्षण किया इस दौरान सहायक कलेक्टर सुश्री अनुपमा आनंद सहित स्मार्ट सिटी के तकनीकी अधिकारी भी साथ थे।

एमडी श्री मिश्रा ने निरीक्षण भ्रमण के दौरान बूढ़ातालाब स्थित पुराने धरना स्थल में संचालित सौंदर्यीकरण कार्य की प्रगति की जानकारी ली और शीघ्र कार्य पूरा करने के निर्देश दिए। महराजबंध तालाब में चल रहे एसटीपी निर्माण कार्य के प्रगति की भी उन्होंने जानकारी ली। यहां पाथ-वे,स्ट्रीट लाइट जैसे सभी कार्य जल्द पूरा करने निर्देश भी दिया है ।स्मार्ट सिटी द्वारा निष्पादित किए जा रहे लाखे नगर चौक से पुरानी बस्ती तक अंडरग्राउंड केबलिंग कार्य की जानकारी भी ली और यहाँ स्ट्रीट लाइट पोल जल्द लगाने का निर्देश दिया। 247 जल प्रदाय हेतु वाटर सप्लाई के निरीक्षण के लिए श्री मिश्रा आमापारा बजरंग नगर,मौदहापारा भी पहुंचे और रहवासियों से सीधे जानकारी भी ली ।पाइपलाइन बिछाने के दौरान क्षतिग्रस्त हुई सड़कों को तत्काल दुरुस्त करने उन्होंने कार्य एजेंसी से कहा। निरीक्षण भ्रमण के दौरान जोन कमिश्नर श्री राकेश शर्मा स्मार्ट सिटी के उप-प्रबंधक श्री संजय अग्रवाल, श्री अमित मिश्रा,असिस्टेंट मैनेजर श्री शुभम तिवारी, श्रीमती नेहा पटेल, श्री योगेंद्र साहू भी उपस्थित रहे।

बंधन बैंक ने शुरू की डायरेक्ट टैक्स कलेक्शन की सुविधा

रायपुर (विश्व परिवार)। बंधन बैंक ने घोषणा की है कि वह ऑनलाइन डायरेक्ट टैक्स कलेक्शन की शुरुआत कर रहा है। यह सुविधा बंधन बैंक के ग्राहकों के साथ-साथ गैर-ग्राहकों के लिए भी होगी, जिसका लाभ बंधन बैंक की सभी शाखाओं में लिया जा सकता है। बैंक अब आयकर के टीआईएन 2.0 प्लेटफॉर्म के माध्यम से डायरेक्ट टैक्स कलेक्शन करेगा। आरबीआई द्वारा नियुक्त एजेंसी बैंक के रूप में, बंधन बैंक 1700 से अधिक शाखाओं के माध्यम से डायरेक्ट टैक्स का ऑफलाइन भुगतान भी स्वीकार करेगा। इस लाइसेंस के तहत, बंधन बैंक के ग्राहक अब बैंक के रिटेल इंटरनेट बैंकिंग, कॉर्पोरेट इंटरनेट बैंकिंग और पेमेंट गेटवे (डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड और इंटरनेट बैंकिंग) के माध्यम से अपने डायरेक्ट टैक्स का भुगतान बड़ी आसानी से कर सकते हैं। वे नकद, चेक या डिमांड ड्राफ्ट के ज़रिये भी बैंक की किसी भी शाखा में टैक्स का भुगतान कर सकते हैं। यह सेवा देश भर में बंधन बैंक के ग्राहकों और गैर-ग्राहकों को डायरेक्ट टैक्स जमा करने में होने वाली परेशानी से मुक्त करेगी। बंधन बैंक, 36 में से 35 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में मौजूद है, जो पूरे देश में 6300 से अधिक बैंकिंग आउटलेट के मज़बूत नेटवर्क के माध्यम से 3.35 करोड़ से अधिक ग्राहकों को सेवा प्रदान कर रहा है। बंधन बैंक के सरकारी व्यवसाय समूह के प्रमुख, श्री देबराज साहा ने इस घोषणा के बारे में कहा कि हमें केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड के लिए एक एजेंसी बैंक के रूप में परिचालन शुरू करने पर बहुत गर्व हैं। यह सुविधा हमारे बैंक के विभिन्न उत्पादों में से एक है, जिसमें अत्याधुनिक डिजिटल क्षमताओं द्वारा संचालित समाधान शामिल हैं। डिजिटल इकोसिस्टम के विस्तार से पूरे देश में बेहतर सुविधा आ रही है और हम एक बैंक के रूप में सरकार की ई-गवर्नेंस योजना के अनुरूप काम कर रहे हैं।

कलेक्टर ने जनप्रतिनिधियों से मुलाकात कर सजग रहने की अपील की, बेहतर कार्ययोजना के साथ ग्राम विकास में निभाएं सक्रिय सहभागिता

पर्यावरण संरक्षण एवं नये अमृत सरोवर पर जोर, मैराथन बैठक लेकर पंचायत विभाग के कामकाज की समीक्षा

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। कलेक्टर दीपक सोनी ने सिमगा विकासखंड के अंतर्गत नगरीय निकाय के पार्षदों, अध्यक्षों, जनपद पंचायत सदस्यों, जिला पंचायत सदस्यों सहित सरपंच, उपसरपंच एवं अन्य जनप्रतिनिधियों से मुलाकात कर उनसे रूबरू हुए। उन्होंने सभी जनप्रतिनिधियों से आपसी सदभावना को बढ़ाते हुए सजग रहने की अपील की है। उन्होंने ने कहा गांव एवं शहर में किसी भी संदिग्ध गतिविधियां या सौहार्द बिगाड़ने का कार्य करता है तो उसकी जानकारी अवश्य रूप से जिला कंट्रोल रूम मो.नं. 9479190629 पर अपनी शिकायत एवं सूचना दर्ज करा सकते है। इस दौरान आपका नाम पूर्णता गोपनीय रखा जाएगा। उन्होंने आगे कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए जनप्रतिनिधियों की सक्रिय भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने जनप्रतिनिधियों से अपील की कि वे ग्रामवासियों की समस्याओं को प्राथमिकता से समझें और उनके समाधान के लिए तत्पर रहें साथ ही टैक्स पर ज़ोर देने के निर्देश दिये।

पंचायत विभाग की कामकाज की समीक्षा : कलेक्टर ने इस दौरान पंचायत विभाग से संबधित महत्वाकांक्षी योजनाओं जैसे प्रधानमंत्री आवास योजना, स्वच्छ भारत मिशन मनरेगा और राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, अमृत सरोवर, वृक्षारोपण सहित अन्य योजनाओं की विस्तृत समीक्षा की है। उन्होंने जोर देकर कहा कि इन योजनाओं का लाभ समय पर और सही तरीके से जनता तक पहुंचना चाहिए। कलेक्टर ने कहा कि शासन की ये योजनाएं ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों के विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। इन योजनाओं का सही तरीके से कार्यान्वयन सुनिश्चित करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। सभी अधिकारी और कर्मचारी इस दिशा में पूरी निष्ठा से कार्य करें। कलेक्टर ने योजनाओं से जुड़े मुद्दों और चुनौतियों पर चर्चा की।

उन्होंने अधिकारियों से अनुरोध किया कि वे जनप्रतिनिधियों और जनता के साथ मिलकर काम करें ताकि किसी भी समस्या का त्वरित समाधान हो सके। कलेक्टर ने कहा कि योजनाओं की सफलता के लिए समुदाय की भागीदारी अत्यंत आवश्यक है। इस मौके पर जिला पंचायत सीईओ दिव्या अग्रवाल, एसडीएम अंशुल वर्मा, उपसंचालक पंचायत सुरेश कंवर, एपीओ नरेगा केके साहू, स्वच्छ भारत मिशन, एनआरएलएम, सभी तकनीकी सहायक, ग्रामीण यांत्रिकी सेवा सहित अन्य संबधित विभाग के अधिकारी कर्मचारी गण उपस्थित रहे।

आठवें माले से कुदकर महिला ने दी जान

रायपुर (आरएनएस)। राजधानी रायपुर के बोरिया खुर्द क्षेत्र में एक महिला ने बिल्डिंग की आठवीं मंजिल से कुदकर अपनी जान दे दी। मामले में टिकरापारा थाना पुलिस मर्ग कायम कर जांच कर रही है। मिली जानकारी के अनुसार शुक्रवार दोपहर आरडीए कॉलोनी ब्लॉक एच बोरिया खुर्द में रहने वाली 41 वर्षीया शबनम परवीन अचानक अपने घर से दौड़ते हुए निकली और पास ही बन रही नई बिल्डिंग के आठवें माले से कुद गई। इस हादसे में सिर फटने के चलते शबनम की मौके पर ही मौत हो गई। आसपास मौजूद लोगों ने तत्काल इसकी सूचना पुलिस को दी। सूचना पर मौके पर पहुंची टिकरापारा पुलिस ने मर्ग कायम कर शव को पंचनामा कार्यवाही के बाद पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भिजवा दिया।

बाघ की सुरक्षा एवं मॉनिटरिंग को लेकर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (व.प्रा.) एवं वन्यप्राणी अभिरक्षक की अध्यक्षता में बैठक सम्पन्न

सेवानिवृत आईएफएस श्रीनिवास मूर्ति ने बारनवापारा अभ्यारण्य क्षेत्र का भ्रमण कर लिया जायजा

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। प्रधान मुख्य वन संरक्षक (व.प्रा.) एवं वन्यप्राणी अभिरक्षक श्री सुधीर कुमार अग्रवाल द्वारा बारनवापारा अभ्यारण्य एवं सीमावर्ती वनक्षेत्र में 7 मार्च 2024 से 27 जून 2024 तक बाघ विचरण कर रहे बाघ के संरक्षण तथा संवर्धन कार्यों के समीक्षा की गई। बाघ के सुरक्षा एवं मॉनिटरिंग के कार्यों का निरीक्षण किया गया एवं बाघ की सुरक्षा हेतु आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया गया। प्रधान मुख्य वन संरक्षक (व.प्रा.) एवं वन्यप्राणी अभिरक्षक के विशेष आग्रह पर बाघ के सुरक्षा हेतु आईएफएस.(सेवा निवृत्त) श्री आर.श्रीनिवास मूर्ति को बारनवापारा अभ्यारण्य आमंत्रित किया गया था। उन्होंने आमंत्रण स्वीकार करते हुए वनमण्डल बलौदाबाजार के अंतर्गत बारनवापारा अभ्यारण्य में 26 जून 2024 एवं 27 जून 2024 के दौरा प्रवास में बारनवापारा अभ्यारण्य एवं सीमावर्ती वन परिक्षेत्रों के अंतर्गत वर्तमान में विचरण कर रहे 1 बाघ की निगरानी तथा सुरक्षा हेतु अधिकारी कर्मचारियों की बैठक लेकर चर्चा किया गया तथा भविष्य हेतु आवश्यक मार्गदर्शन दिया गया। श्री आर.श्रीनिवास मूर्ति द्वारा बाघ विचरण क्षेत्र का सूक्ष्म भ्रमण कर, उनके द्वारा आगामी कार्ययोजना हेतु बाघ में ''रेडियो कालर'' लगाये जाने हेतु सुझाव दिया गया। वर्तमान में बारनवापारा अभ्यारण्य एवं आस-पास के बलौदाबाजार, देवपुर एवं परिक्षेत्र बल्दाकछार के समस्त स्टाफ को बाघ संबंधित महत्वपूर्ण प्रशिक्षण दिया गया। वर्तमान में वनमण्डल, बलौदाबाजार के अंतर्गत बाघ के संबंध में किये जा रहे कार्यों की सराहना की गई, तथा जन मानस एवं बाघ के सुरक्षा हेतु 4 नग कुमकी हाथी को बारनवापारा अभ्यारण्य वनमण्डल बलौदाबाजार लाया जाना एवं निगरानी करने हेतु सुझाव दिया गया। वनक्षेत्र बाघ के रहवास के लिए उपयुक्त है एवं क्षेत्र में पर्याप्त मात्रा में प्रे-बेस तथा वाटरबॉडी (पेय जल स्थान) एवं बाघ रहवास क्षेत्र है, जिसमें बाघ आसानी से रहवास/विचरण कर सकते है। बाघ की मॉनिटरिंग हेतु श्री आर.श्रीनिवास मूर्ति के द्वारा बारनवापारा अभ्यारण्य,

श्रीनिवास पन्ना टाइगर रिजर्व में लगातार 2009 से 2015 तक फील्ड डायरेक्टर रहकर बाघ की संख्या 0 से 32 किया गया।

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा0) बस्तर ने भानपुरी सरपंच को गिरफ्तार करवाकर भेजा जेल

पंचायत के 54 विभिन्न निर्माण कार्य की राशि का उपयोग विकास कार्य में नहीं करने और राशि वापस नहीं करने पर 20 दिन के लिए हुई जेल

जगदलपुर (विश्व परिवार)। न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा0) बस्तर द्वारा छत्तीसगढ़ पंचायत राज अधिनियम, 1993 की धारा 92 की उपधारा (2) के अधीन ग्राम पंचायत भानपुरी की सरपंच श्रीमती मुंगई बघेल को गिरफ्तार कर केंद्रीय जेल भेज दिया गया। सरपंच श्रीमती मुंगई बघेल के द्वारा ग्राम पंचायत, भानपुरी की वर्ष 2017-18, 2020-21, 2021-22, 2022-23 की विभिन्न 54 निर्माण कार्य की राशि 55 लाख 42 हजार 875 रूपये को प्राप्त कर निर्माण कार्य नहीं कराया गया है। एसडीएम कार्यालय द्वारा सरपंच को पंचायत के निर्माण कार्य की राशि को अपनी अभिरक्षा में रखने के लिए, राशि पंचायत को तत्काल परिदत्त या संदत्त करने के लिए नोटिस जारी किया गया था, किन्तु निर्देशित धन राशि परिदत्त करने में असफल रहने के कारण न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा0) बस्तर द्वारा श्रीमती मुंगई बघेल को पुलिस अभिरक्षा में रखते हुए अधिक से अधिक 20 दिन (26जून से 16 जुलाई 2024 तक) की कालावधि के लिए या अभिलेख प्रदत्त किये जाने तक या उक्त धन संदत्त किये जाने तक सिविल जेल में परिरुद्ध रखा गया है।

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /12559/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 27-06-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 12559
वार्ड का नाम- 69 - माधवराव सप्रे वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 69 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR568C01009** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **DANESHWAR PRASAD SHARMA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LT. GHANSHYAM SHARMA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **ASHA ANAND NETAM** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LT. ANAND KUMAR NETAM** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/ आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री अरूण ध्रुव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (8)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /12560/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 28-06-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 12560
वार्ड का नाम- 70 - संत रविदास वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 70 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR813C00497** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **GOKUL AGRAWAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **ARUN AGRAWAL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **TAHZEEB FATIMA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAIS AHMED** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री अरूण ध्रुव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (8)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र राज. परि., नवा रायपुर
प्रथम एवं पंचम तल व्यवसायिक परिसर (दक्षिण पूर्व कार्नर) सेक्टर-27 नवा रायपुर, अटल नगर
फोन नं.-0771-4016094
E-mail id:- em_zone2@yahoo.com

// आम-सूचना //

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है, कि मण्डल द्वारा निर्मित अटल आवास **बेलभाठा अभनपुर,** रायपुर में **भवन कमांक -473, श्रीमति किरण साहू पति श्री ओंकार प्रसाद साहू,** के नाम स्ववित्तीय आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा उक्त भवन के मद में पूर्ण राशि जमा कर पंजीयन कार्यालय रायपुर से दिनांक **19.05.2011** को लीजडीड (पट्टा-विलेख) का निष्पादन करा कर आधिपत्य आदेश प्राप्त कर लिया है। वर्तमान में **श्रीमति किरण साहू पति श्री ओंकार प्रसाद साहू,** निवासी- सरकारी अस्पताल के सामने अभनपुर, थाना व तहसील- अभनपुर, जिला-रायपुर (छ.ग.) के द्वारा उक्त भवन को **क्रेता श्री किशोर गिरपुंजे पिता स्व. श्री रामचंद राव गिरपुंजे,** निवासी- वार्ड नं.-14, अभनपुर, थाना व तहसील- अभनपुर, जिला- रायपुर (छ.ग.) को विक्रय करने के लिये अनापत्ति प्रमाण पत्र **(एन.ओ.सी.)** प्रदाय करने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अटल आवास **बेलभाठा अभनपुर,** रायपुर में **भवन क्रमांक-473,** के विक्रय के सबंध में किसी व्यक्ति शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक, अथवा वित्तिय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के **15 दिवस** के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अद्योहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र राजधानी परियोजना
नवा रायपुर, अटल नगर, जिला- रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-03, मौलश्री विहार,
रायपुर (छ.ग.)फोन नं.-0771-2991574
Email Id: eocghbzone03@gmail.com

आम-सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा **कॉलोनी बोरियाकला,** रायपुर, में दीनदयाल आवास योजनांतर्गत निर्मित **फ्लैट क्रमांक- एल.आई.जी.-298 ब्लॉक-19 द्वितीय तल, श्री सुशील गुप्ता पिता स्व. श्री एल.सी. गुप्ता,** पता- एल.आई.जी.-237, पदमनाभपुर दुर्ग, तहसील व जिला-दुर्ग (छ.ग.), को आंबटित है, मूल आंबटी की मृत्यु दिनांक **21.02.2015** को होने के उपरांत उनकी **पत्नी श्रीमती शशि गुप्ता पति स्व. श्री सुशील गुप्ता,** पता- एल.आई.जी.-237, पदमनाभपुर दुर्ग, तहसील व जिला-दुर्ग (छ.ग.), द्वारा आवेदन, पारिवारिक सहमति पत्र, शपथ पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र एवं अन्य दस्तावेज प्रस्तुत कर उक्त फ्लैट अपने नाम से नामांतरण हेतु आवेदन किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेजों के आधार पर उक्त फ्लैट **श्रीमती शशि गुप्ता पति स्व. श्री सुशील गुप्ता,** पता- ग्राम-एल.आई.जी.-237, पद्मनाभपुर दुर्ग, तहसील व जिला-दुर्ग (छ.ग.), के नाम पर मृत्यु उपरांत नामांतरण किया जाना हैं।

अत: किसी भी व्यक्ति, शासकीय/ अर्द्धशासकीय संस्था निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था को उक्त भवन/भूखण्ड के मृत्यु उपरांत नामांतरण के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में स्वयं उपस्थित होकर लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आम सूचना प्रकाशन के **15 दिन** के अंदर आपत्ति प्रस्तुत करें अन्यथा नियत समयावधि पश्चात आपत्ति मान्य नहीं की जायेगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
प्रक्षेत्र-03, मौल श्री विहार, रायपुर छ.ग.

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-03, मौलश्री विहार,
रायपुर (छ.ग.)फोन नं.-0771-2991574
Email Id: eocghbzone03@gmail.com

आम-सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा सामान्य आवास योजनांतर्गत **डुमरतराई फेस-1,** रायपुर में निर्मित ई.डब्ल्यू.एस. फ्लैट क्र.-137 ब्लॉक-09, द्वितीय तल **श्री अमरनाथ केशरवानी, पिता- श्री अयोध्या प्रसाद केशरवानी,** निवासी- डुमरतराई फेस-1 ई.डब्ल्यू.एस. फ्लैट क्र.-137 ब्लॉक-09, द्वितीय तल रायपुर, तहसील व जिला-रायपुर (छ.ग.), के नाम पर इस कार्यालय के नामांतरण आदेश क्रमांक-**57** दिनांक **30.06.2016** के माध्यम से नामांतरित है। आवासीय फ्लैट 30 वर्ष के लीज में छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा आबंटित है, उक्त भवन को फ्री-होल्ड के लिए निर्धारित प्रारूप में आवेदन प्रस्तुत किया गया है। जिनका **फ्री-होल्ड** संपरिवर्तन किया जाना है।

अत: किसी भी व्यक्ति, शासकीय/ अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/भवन का **फ्री-होल्ड** किये जाने में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में स्वयं उपस्थित होकर लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आम सूचना प्रकाशन के **15 दिवस** के अन्दर आपत्ति प्रस्तुत करें, अन्यथा नियत समयावधि पश्चात् आपत्ति मान्य नहीं की जावेगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
प्रक्षेत्र-03, मौल श्री विहार, रायपुर छ.ग.

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./12539/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 28-06-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 12539
वार्ड का नाम- 26 - दानवीर भामाशाह वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 26 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR109A00413** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **RAJU LAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE. JHADURAM** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. श्रीमती सरस्वती मारकण्डेय, पति- स्व. श्री महेश मारकण्डेय 2. प्रेमनारायण मारकण्डेय, पिता- स्व. श्री महेश मारकण्डेय** पिता/पति, श्री/श्रीमती **3. ना.बा. ध्रुव नारायण मारकण्डेय, माता- श्रीमती सरस्वती मारकण्डेय, पति- स्व. महेश मारकण्डेय** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./12595/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 28-06-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 12595
वार्ड का नाम- 27 - इंदिरा गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 27 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR737E0241B** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **KISHAN LAL SHARMA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **ROSHAN LAL SHARMA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SHRI AKASH SHARMA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O LATE. KISHAN LAL SHARMA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./12541/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 28-06-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 12541
वार्ड का नाम- 26 - दानवीर भामाशाह वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 26 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR109B00693** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **SHYAM LAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SUKHAI CHAKRADHAR** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री तारकेश्वर प्रसाद चक्रधारी** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पिता- श्री श्यामलाल चक्रधारी** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत दानपत्र**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./12098/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 18-06-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 12098
वार्ड का नाम- 16 - वीर शिवाजी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 16 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR107L489AH** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **VASUDEV PATEL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **KHIMJI BHAI PATEL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **CHAUBISH RAM SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **CHUNGU RAM SAHU** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./12100/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 18-06-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 12100
वार्ड का नाम- 16 - वीर शिवाजी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 16 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR107L489AI** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **VASUDEV PATEL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **KHIMJI BHAI PATEL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **ABHISHEK TIWARI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAMNARAYAN TIWARI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर शनिवार 29 जून 2024

नव प्रवेशित विद्यार्थियों को पाठ्य पुस्तक देकर एवं तिलक लगाकर किया गया स्वागत

सेजेस पंप हाउस में मनाया गया शाला प्रवेशोत्सव

कोरबा(विश्व परिवार)। स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट विद्यालय पंप हाउस तथा शासकीय कन्या उच्चत माध्यमिक विद्यालय साडा कोरबा में उत्साह एवं उल्लास के साथ शाला प्रवेश उत्सव मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में महापौर एवं पार्षद राजकिशोर प्रसाद शामिल हुए। उनके द्वारा सभी कक्षाओं में प्रवेश लेने वाले नव प्रवेशित विद्यार्थियों को तिलक कर एवं मिठाई खिलाकर उनका स्वागत किया गया। मुख्य अतिथि ने इस अवसर पर कहा कि जीवन में षिक्षा एक ऐसा माध्यम है जिसके माध्यम से

हमें ज्ञान की प्राप्ति होती है। शिक्षा से जुड़कर विद्यार्थी सफलता हासिल कर सकते हैं। उन्होंने सभी पालकों से अपने बच्चों को नियमित स्कूल भेजने की अपील की। इसके साथ ही उन्होंने विद्यार्थियों को बेहतर शिक्षा प्रदान करने की अपील शिक्षकों से की। शाला प्रवेशोत्सव कार्यक्रम में नव प्रवेशित विद्यार्थियों को पाठ्य पुस्तकें भी प्रदान की गई। नवीन शिक्षा सत्र के प्रथम दिवस से ही विद्यार्थियों में अध्ययन के लिए उत्साह नजर आया। कन्या शाला साडा में महापौर के साथ वार्ड की पार्षद सु नीतू चौरसिया भी उपस्थित थीं। उन्होंने नवप्रवेशित विद्यार्थियों को निरंतर विद्यालय आने की प्रेरणा दी। शाला प्रवेशोत्सव के लिए पूरे विद्यालय को फूलों एवं रंग-बिरंगे गुब्बारों से सजाया गया था। विद्यालय के प्राचार्य विवेक लांडे, साडा कन्या स्कूल के प्राचार्य रणधीर सिंह सहित पूरे शिक्षकों द्वारा अतिथियों एवं विद्यार्थियों के लिए न्योता भोज का आयोजन किया गया था। मुख्य अतिथि सहित अतिथियों एवं विद्यार्थियों ने न्योता भोज के स्वादिष्ट व्यंजनों का आनंद लिया।

एसडीएम चंद्राकर ने किया थाना, आश्रम, छात्रावास का औचक निरीक्षण

महासमुंद(विश्व परिवार)। अनुविभागीय अधिकारी राजस्व बागबाहरा श्रीमती सृष्टि चंद्राकर ने बुधवार को तहसीलदार कोमाखान के संयुक्त दल के साथ थाना कोमाखान का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान थाना का रोजनामचा नियमित रूप से संधारित करने के निर्देश दिए। थाने के एमएलसी पंजी संधारित पाए गए। मालखाना, बंदी कक्ष एवं अभिलेख कक्ष में बिजली व्यवस्था नहीं होने पर तत्काल बिजली व्यवस्था हेतु निर्देशित किया गया। थाने में लगे सभी तख्तियों को विवेचक कक्ष से बाहर लगाने कहा ताकि आम जन तख्तियों का अवलोकन सुगमता से कर सके। आमजन जो रिपोर्ट लिखवाने आते हैं उनके सद्व्यवहार करने तथा उनकी सेवा के निर्देश दिए गए। इसके अलावा उन्होंने आज खल्लारी और बी.के. बाहरा में आश्रम, छात्रावास का निरीक्षण किया। यहां उन्होंने साफ-सफाई, पेयजल और अन्य व्यवस्थाओं का जायजा लिया और आश्रम अधीक्षिका को आवश्यक निर्देश दिए। इस दौरान जनपद सीईओ श्री फक्कीरचंद पटेल भी साथ थे। साथ ही ग्राम पंचायत बिहाझर से विशेष शिविर का 2रूआत किया गया जिसमें घर-घर भ्रमण कर कुष्ठ, लकवा और सिकल सेल के मरीजों की पहचान कर जांच की गई। अनुविभागीय अधिकारी श्रीमती चंद्राकर ने नवीन न्याय संहिता कार्यशाला में भी आवश्यक मार्गदर्शन दिए।

राहुल गांधी के नेतृत्व में विपक्ष निभाएगा सकारात्मक भूमिका : डॉ. महंत

देश के नेता प्रतिपक्ष बनने पर दी बधाई

कोरबा(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष व भारत सरकार के पूर्व केन्द्रीय राज्यमंत्री रहे डॉ.चरणदास महंत ने कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष व सांसद राहुल गांधी के देश के सबसे बड़े लोकतंत्र संसद में नेता प्रतिपक्ष का पद स्वीकारने पर आभार व्यक्त करते हुए बधाई दी है। डॉ. महंत ने कहा कि राहुल गांधी ने कश्मीर से कन्याकुमारी

तक 4 हजार किलोमीटर की पैदल यात्रा कर देश की नब्ज को टटोलने का प्रयास किया और दूसरी बार न्याय यात्रा के माध्यम से देश के बहुसंख्यक लोगों से मिलकर देश में चल रहे नफरत की राजनीति को मोहब्बत की राजनीति में बदलने का प्रयास किया है। डॉ.महंत ने कहा कि राहुल गांधी ने देश के किसान, नौजवान और मेहनतकश लोगों के साथ-साथ सर्वहारा वर्ग के लोगों से संवाद स्थापित किए हुए हैं। देश में नेता प्रतिपक्ष बनकर आने वाले समय में पूरे देश की आवाज को बुलंद करेंगे और सकारात्मक विपक्ष की भूमिका का निर्वहन करेंगे। नेता प्रतिपक्ष डॉ.महंत ने छत्तीसगढ़ के कांग्रेसजनों की ओर से राहुल गांधी को बधाई व कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे का आभार व्यक्त किया है।

बरबसपुर क्षेत्र में नए टी.पी. नगर की जमीन का सीमांकन फिर टला

कोरबा(विश्व परिवार)। कोरबा-चांपा मार्ग में ग्राम बरबसपुर क्षेत्र में कई कारणों से नए ट्रांसपोर्ट नगर स्थापना के लिए प्रक्रियाएं होना हैं। मौके पर प्रस्तावित सीमांकन की प्रक्रिया जो होनी थी, उसे दो दिन के लिए टाल दिया गया है। प्रशासन, राजस्व और निगम के अधिकारी इनमें शामिल हैं। इनकी उपस्थिति में सीमांकन की प्रक्रिया पूरी करायी जाएगी। जानकारी के अनुसार 72 एकड़ से अधिक क्षेत्रफल जमीन को नवीन ट्रांसपोर्ट नगर के रूप में विकसित करना है। निगम क्षेत्र के ग्राम बरबसपुर को इसके लिए चयनित किया गया है, जहां पर जमीन की तलाश पिछले वर्षों में की गई। तकनीकी और वित्तीय पेंच इस मामले में लगातार सामने आते रहे। जमीन की खरीदी बिक्री को लेकर भी मामले ने विवाद पकड़ा। बताया जा रहा हैं कि अब एक बार फिर कदम बढ़ाए गए हैं। उक्तानुसार चयनित जमीन का सीमांकन कराया जाना है। इसके लिए प्रशासन ने टीम बना दी है। उसे इस काम को आज करना था लेकिन अधिकारी के अवकाश पर होने और अन्य कारण से सीमांकन की प्रक्रिया को टाल दिया गया है। जानकारी के अनुसार जिस इलाके में ट्रांसपोर्ट नगर स्थापित करना है, उस क्षेत्र में दो-तीन लोगों की निजी जमीन होने का दावा किया जा रहा है। इसे लेकर मामला उलझा हुआ है। संबंधितों के आवेदन और आपत्ति का निस्तारण करना व्यवहारिक दृष्टिकोण से जरूरी है। सीमांकन इसलिए कराया जाना है ताकि मसला हल हो और इस तरफआगे बढ़ा जा सके। कोरबा को शहरी क्षेत्र में शामिल करने के बाद बीते दशकों में ट्रांसपोर्ट नगर की बसाहट मुख्य शहर में की गई।

कलेक्टर अजीत वसंत ने किया निर्माणाधीन मेडिकल कॉलेज का निरीक्षण

कार्य में प्रगति लाने के दिए निर्देश

कोरबा(विश्व परिवार)। कलेक्टर अजीत वसंत ने आज कोरबा जिले के ग्राम भुलसीडीह में निर्माणाधीन शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय का निरीक्षण किया। उन्होंने स्थल पर साफ-सफाई तथा किए गए अतिक्रमण को हटाने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने निर्माणाधीन स्थल में एकेडमिक ब्लॉक, गर्ल्स हॉस्टल, बालक हॉस्टल, इंटर्न बालक/इंटर्न कन्या हॉस्टल, डायनिंग एरिया का निरीक्षण कर निर्माण कार्य में गति लाने के निर्देश दिए। साथ ही निर्माण कार्य में बाधा आने पर तत्काल अवगत कराने की बात कही। कलेक्टर ने मेडिकल कॉलेज परिसर में पाए गए अतिक्रमण को शीघ्रता से हटाने हेतु निर्देशित किया तथा ऐसे व्यक्ति जिनका निजी भूमि कॉलेज परिसर के भीतर आया है, उन्हें मेडिकल कॉलेज परिसर के बाहर की भूमि को अदला-बदली की कार्यवाही शीघ्रता से करने के लिए तहसीलदार भैंसमा को निर्देशित किया। निरीक्षण के दौरान मौके पर नगर निगम आयुक्त मती प्रतिष्ठा ममगाई, डॉ. अविनाश मेश्राम डीन मेडिकल कॉलेज, कार्यपालन अभियंता रावटे, डॉ. रविकांत नायर, छत्तीसगढ़ मेडिकल सर्विस कॉर्पोरेशन (सीजीएमएससी) के अधिकारी तथा तहसीलदार भैंसमा के. के. लहरे. आदि उपस्थित थे।

कलेक्टर ने लिया स्वास्थ्य सुविधाओं का जायजा

पिथौरा में सोनासिल्ली, दुरूगपाली एवं मेमरा उप स्वास्थ्य केन्द्र का किया निरीक्षण

महासमुंद(विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री प्रभात मलिक ने आज स्वास्थ्य सुविधाओं को लेकर मैदानी स्वास्थ्य संस्थाओं का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने विकासखंड पिथौरा अंतर्गत आयुष्मान आरोग्य मंदिर, उप स्वास्थ्य केंद्र सोनासिल्ली, दुरुगपाली एवं मेमरा का राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानक कार्यक्रम के निर्धारित सभी आठ सेवा प्रावधानों के मानकों के अनुसार निरीक्षण किया। राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानक कार्यक्रम के 8 विषय सेवा प्रावधान, रोगियों के अधिकार, इनपुट, सहयोगी सेवाएं, क्लीनिक सेवाएं, संक्रमण नियंत्रण, गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली परिणाम में बांटकर निर्धारित बिंदुओ पर विस्तृत रूप से निरीक्षण किया गया। उन्होंने इन केन्द्रों में मरीजों का आवश्यकतानुसार त्वरित उपचार के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान दवाइयों की उपलब्धता तथा मौके पर मौजूद लोगों से भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य केन्द्र में चिकित्सक समय पर आएं और मरीजों का बेहतर उपचार करें। बीमारी के गंभीरता को देखते हुए ही जिला अस्पताल रेफर करें। जिले में चल रहे सिकलसेल जांच अभियान की भी जानकारी ली। उन्होंने कहा कि सिकल सेल से संबंधित जो भी मरीज आए उनका उचित परीक्षण एवं उपचार करें। आवश्यक जांच करते हुए पात्र पाए जाने पर दिव्यांग प्रमाण पत्र भी जारी किया जाए। कलेक्टर ने कहा कि सिकल सेल को मिटाने जनभागीदारी भी सुनिश्चित करें। अधिक से अधिक लोगों को आयुष्मान कार्ड का लाभ मिले इसके लिए आयुष्मान कार्ड निर्माण में प्रगति लाएं तथा छूटे हुए लोगों का सर्वे कर उनका आयुष्मान कार्ड बनाना सुनिश्चित करें। कलेक्टर ने यहां मोतियाबिंद के मरीजों की जानकारी ली। इसके अतिरिक्त उप स्वास्थ्य केंद्र स्तर पर संधारित होने वाले आवश्यक रजिस्टर एवं रिकॉर्ड का जायजा लिया। कलेक्टर श्री मलिक ने उप स्वास्थ्य केंद्र दुरुगपाली में दी जा रही स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए नाराजगी जताई। उन्होंने कहा कि मरीजों को त्वरित और बेहतर उपचार मिले। कलेक्टर ने विकासखंड अधिकारियों को समय-समय पर निरीक्षण के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि निरीक्षण रिपोर्ट भी भेजना सुनिश्चित करें। इस मौके पर अनुविभागीय अधिकारी राजस्व श्री हरिशंकर पैकरा, डीपीएम नीलू धृतलहरे एवं चिकित्सक मौजूद थे।

महतारी वंदन योजना से ममता देवार को मिल रहा सहारा

विषम परिस्थिति में काम आ रही योजना से मिली राशि

महासमुंद (विश्व परिवार)। जहां आमतौर पर महिलाओं को आर्थिक रूप से परिवार के पुरूषों पर निर्भर रहना पड़ता है वही छत्तीसगढ़ सरकार की महतारी वंदन योजना महिलाओं को अब आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने का काम कर रही है। इसकी एक मिशाल जिला मुख्यालय महासमुंद के दलदली रोड वार्ड क्रमांक 11 की निवासी ममता देवार की जिंदगी में आए बदलाव को देखने से मिलती है। ममता एक अंत्योदय परिवार से ताल्लुक रखती हैं। जो शहरो में प्लास्टिक कचरे इकट्ठा कर कबाड़ी का

व्यवसाय कर अपने परिवार का पालन पोषण करती है। ममता बताती है कि रोजी रोटी के लिए उन्हें प्रतिदिन चाहे कड़ी धूप हो या बरसात के बेरंग मौसम किसी भी विषम परिस्थितियों में उन्हें काम के लिए बाहर निकलना ही पड़ता है। उन्होंने बताया कि इस समय परिवार के लिए एक वक्त की रोटी, घर के चूल्हे का जलना कठिन हो गया है। परिवार के भरण पोषण के लिए उन्हें प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मेहनत करना पड़ता है। वे अपने बीते विषम परिस्थितियों के बारे में भावुक होकर बतायी कि कचरा उठाते समय सड़क पर ट्रक से भिंड़त होने पर उनके दोनों पैर टूटने के बाद पैरो में रॉड लगे हुए है, जिसका ईलाज आज भी चल रहा है। ऐसे में अपने घर चलाने एवं स्वयं के स्वास्थ्य की चिंता लगी रहती थी। महिला एवं बाल विकास विभाग के लोक कल्याणकारी एवं महिला सशक्तिकरण को उत्प्रेरित करने वाली महतारी वंदन योजना के तहत हर माह एक हजार रुपए की राशि उनके खाते में पहुंच रही है।

विधायक ने किया बीज वितरण एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ

कोरबा(विश्व परिवार)। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन योजना अंतर्गत राइस ग्राम धान प्रदर्शन हेतु ग्राम लिटियाखार विकासखंड पाली जिला कोरबा में प्रेमचंद पटेल विधायक विधानसभा कटघोरा छत्तीसगढ़ शासन की विशेष आतिथ्य और ग्राम पंचायत सरपंच की अध्यक्षता में बीज वितरण एवम प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें विधायक द्वारा कार्यक्रम में उपस्थित कृषकों को केंद्र प्रवर्तित राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन योजना के महत्त्व और राइस ग्राम प्रदर्शन के उद्देश्य बताते हुए उत्तम खेती,मध्यम बान, अधम चाकरी दोहे के माध्यम से किसानों को उन्नत खेती करने की सलाह दिया गया।आज के कार्यक्रम में प्रदर्शन हेतु चयनित किसानों को विधायक पटेल द्वारा बीज वितरण किया गया।कार्यक्रम में हरीश थदवानी, रमेश कुमार कवर ग्राम पंचायत सरपंच, छतराम यादव, मन्नू राठौर, सानिध्य सोलंकी, शिव यादव,नरेंद्र यादव,छतलाल यादव, नरेंद्र चौहान, महिला समूह लिटियाखार कृषकगण एवम जी पी डिक्सेना वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी पाली एम एस गोंड, बी एस मरावी और मती चैनबाई ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

संक्षिप्त समाचार

पेचकश मारकर महिला ने युवक को किया घायल

कोरबा(विश्व परिवार)। कोरबा के टी पी नगर में गुरूवार को एक महिल ने जमकर हंगामा किया। महिला युवक को मारने के लिए हाथ में पेचकश लेकर दौड़ती रही वहीं युवक जान बचाकर भागता रहा। महिला ने युवक की पीठ पर पेचकश मारकर उसे घायल कर दिया। जिसकी शिकायत पर सीएसईबी थाना रामपुर पुलिस ने महिला को गिरफ्तार कर लिया। मिली जानकारी के अनुसार कोरबा में शारदा विहार स्थित अटल आवास के एक मकान में कब्जे को लेकर किराएदार के रूप में रह रही महिला मंजीत कौर और मकान मालिक के बीच विवाद चल रहा है। मकान पर कब्जा पाने के लिए महिला टी पी नगर स्थित मकान मालिक के दुकान पहुंच गई और बीच और हंगामा करने लगी। इस दौरान दुकान पर एक युवक अज्जू बरेठ अपने दोस्त से मिलने आया था जिसे महिला ने कहा है तुम्हारा मालिक कहकर गाली गलौच किया तथा अज्जू बरेठ के गाली देने से मना करने पर वह पेचकश लेकर उसका मारने दौड़ गई। युवक अपनी जान बचाकर भागने लगा तथा दुकान के अंदर घूस गया। जिसपर मंजीत कौर भी दुकान अंदर घुस गई यह देखकर यवुक जान बचाकर बाहर निकल रहा था तभी महिला ने पेचकस से उसकी पीठ पर वार कर दिया। इस दौरान युवक ने अपने मोबाइल से महिला का वीडियो बना लिया। इसके बाद मामला पुलिस के पास जा पहुंचा। मामले की शिकायत पर चौकी सीएसईबी थाना रामपुर पुलिस ने महिला मंजीत कौर पति कमल सिंह/गुरमीत सिंह उम्र 27 वर्ष साकीन शारदा बिहार अटल आवास चौकी मानिकपुर थाना सिटी कोतवाली को धारा धारा 452, 294, 506, 323 भादवि. के तहत गिरफ्तार कर न्यायिक रिमाण्ड पर भेजा है।

40 लीटर कच्ची महुआ शराब के साथ विक्रेता गिरफ्तार

कोरबा(विश्व परिवार)। जिले की हरदीबाजार थाना पुलिस ने 40 लीटर कच्ची महुआ शराब के साथ एक विक्रेता को गिरफ्तार किया है तथा उसके खिलाफ आबकारी एक्ट के तहत कार्यवाही की है। बता दें कि पुलिस अधीक्षक कोरबा सिद्धार्थ तिवारी (भा.पु.से.), अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कोरबा यू.बी.एस. चौहान (रा.पु.से.), अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ग्रामीण नेहा वर्मा (रा.पु.से.), नगर पुलिस अधीक्षक दर्री रविन्द्र मीणा (भा.पु.से.) द्वारा अवैध शराब पर प्रभावी कार्यवाही करने निर्देशित किया गया है। वरिष्ठ अधिकारियों के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी हरदीबाजार निरीक्षक मृत्युंजय पाण्डेय के नेतृत्व में हरदीबाजार क्षेत्र में अवैध शराब बिक्री करने वालों पर लगातार कार्यवाही की जा रही है। इसी तारतम्य में दिनांक 26.06.2024 को मुखबीर से सूचना मिला कि ग्राम भिलाईबाजार पुरानी बस्ती निवासी महेष सिंह राजपूत अवैध रूप से महुआ शराब रखकर विक्रय कर रहा है कि सूचना पर हमराह स्टॉफएवं गवाहों को साथ लेकर मौके पर जाकर रेड कार्यवाही करने पर आरोपी महेष सिंह राजपूत अपने घर के सामने में कच्ची महुआ शराब विक्रय करते मिला जिसके कब्जे से चार अलग अलग जरीकेन में भरा कुल 40 लीटर हाथ भट्टी की बनी कच्ची महुआ शराब को बरामद कर जप्त किया गया तथा आरोपी के विरूद्ध धारा 34(2) आबकारी अधिनियम कायम कर आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायिक रिमाण्ड पर भेजा गया है।

जंगली सुअर मारने लगाया था करंट, चपेटमें आने से मौत

कोरबा(विश्व परिवार)। उरगा के ग्राम कचौरा में जंगली सुअर मारने के लिए बिछाए करंट की चपेट में आकर एक युवक की मौत हो गई है। पुलिस ने मर्ग कायम कर मामला जांच में लिया है। पुलिस सूत्रों ने बताया कि ग्राम कचौरा निवासी गणेश कंवर 23 वर्ष पिता चमन कंवर अपने एक रिश्तेदार के साथ रात को दिशा मैदान के लिए गांव के जंगल की ओर गया हुआ था। इस दौरान जंगल में किसी अज्ञात व्यक्ति के द्वारा जंगली सुअर को मारने के लिए करंट का जाल बिछाया गया था। जिसकी चपेट में आने से गणेश गंभीर रूप घायल हो गया। आनन फानन में इसकी सूचना स्वजनों को दी गई। जिसके उपरांत सांस चलने की उम्मीद से स्वजन गणेश कंवर को उपचार के लिए चांपा स्थित अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां चिकित्सकों ने परीक्षण उपरांत उसे मृत घोषित कर दिया। मामले में उरगा पुलिस ने वैधानिक कार्रवाई कर जांच शुरू कर रही है। जिले के कोरबा और कटघोरा वनमंडल में वन प्राणियों का शिकार का मामला लगातार सामने आ रहा है। पिछले दिनों कटघोरा वनमंडल में जहां तेंदुए के शिकार का मामला सामने आया था तो वहीं कई बार जंगली सुअर का शिकार का मामला अक्सर सामने आते रहता है। जंगल में जंगली सुअर को मारने के लिए करंट का जाल बिछाया जाता है लेकिन इसके बाद भी वन विभाग की टीम इस तरह के कृत्य को अंजाम देने वालें लोगों की धरपकड़ करने में असमर्थ है।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर शनिवार 29 जून 2024

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय

रोजगार के सवाल पर राहत कितनी

कारोबारी सुगमता का ध्यान

जीएसटी परिषद की बैठक में शनिवार को कई महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए गए। मोदी सरकार के तीसरी बार सत्ता में आने के बाद जीएसटी परिषद की इस पहली बैठक में रेलवे प्लेटफार्म टिकट, विश्राम कक्ष और प्रतीक्षालय सुविधाओं को जीएसटी मुक्त करने के महत्त्वपूर्ण फैसले के साथ ही सभी तरह के दूध के डिब्बों पर 12 फीसद की एक समान जीएसटी दर रखने का प्रस्ताव किया गया। बैठक के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बताया कि अनुपालन बोझ कम करने और करदाताओं को राहत देने की गरज से भी कई सिफारिश की गई। कोशिश है कि कारोबारी सुगमता के लिए व्यवसायों के लिए प्रक्रियात्मक जटिलताएं कम की जाएं। परिषद ने जीएसटी पंजीकरण आवेदकों के लिए बायोमीट्रिक-आधारित आधार प्रमाणीकरण के चरणबद्ध रोलआउट की सिफारिश की है। वित्त वर्ष 2017-18, 2018-19 तथा 2019-20 के लिए जीएसटी अधिनियम की धारा 73 के तहत जारी रिमांड नोटिस पर ब्याज जुर्माना माफी की भी सिफारिश है। यह धारा उन मामलों से संबंधित है जिनमें धोखाधड़ी, दमन या गलतबयानी शामिल नहीं हैं। जो करदाता 31 मार्च, 2025 तक नोटिस में मांगी गई पूरी कर राशि का भुगतान करते हैं, उन्हें इस छूट से लाभ होगा। किसी चालान या डेबिट नोट पर इनपुट टैक्स क्रेडिट (आईटीसी) का लाभ लेने संबंधी मंजूरी भी दी जा रही है। छोटे करदाताओं को भी इस रूप में राहत मिलने वाली है कि वित्त वर्ष 2024-25 और उसके बाद के वर्षों के लिए रिटर्न दाखिल करने की समय सीमा 20 अप्रैल से बढ़ा कर 30 जून की जाएगी। परिषद ने स्पष्ट किया है कि सभी प्रकार के स्प्रिंकलर पर 12 फीसद की एक समान जीएसटी दर लागू होगी। दूध के सभी डिब्बों पर उनकी सामग्री (स्टील, लोहा, एल्यूमीनियम) की परवाह किए बिना एक समान दर 12 फीसद की सिफारिश की गई है।हिमाचल और जम्मू-कश्मीर के सेब उत्पादकों की अरसे से मांग को ध्यान में रखते हुए सभी प्रकार के कार्टन बक्सों और नालीदार व गैर-नालीदार कागज या पेपरबोर्ड, दोनों से बने उत्पादों के लिए 12 फीसद जीएसटी का प्रस्ताव है। वित्त मंत्री ने पेट्रोल व डीजल को जीएसटी के तहत लाने की सरकार की मंशा भी दोहराई। दरअसल, सिफारिशों में कारोबारी सुगमता को ध्यान में रखा गया है।

आलोक जोशी

लोकसभा चुनाव के नतीजों के बाद से लगता है कि रोजगार फिर एक गंभीर चिंता का विषय बन चुका है। सरकार के आलोचकों को लगता है कि बेरोजगारों का गुस्सा ही चुनाव नतीजों में सामने आया है। जाहिर है, सरकारी पक्ष भी इस तरफ से कान बंद करके नहीं बैठ सकता। खास बात यह है कि तमाम परेशानियों के बावजूद भारत लगातार दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था बना हुआ है। और, इस बात पर तमाम विद्वान एकमत हैं कि आने वाले कम से कम दस-पंद्रह साल तक भारत में तरक्की की रफ्तार इतनी या इससे तेज ही रहने वाली है। ऐसे में, नौजवानों की उम्मीद भी बढ़ती है, लेकिन यह बात भी समझ लेनी चाहिए कि रोजगार का मतलब नौकरी नहीं है, और सिर्फ सरकारी नौकरी तो कतई नहीं। जीडीपी में आठ प्रतिशत की जबर्दस्त बढ़त दर हासिल करने के बाद भी बेरोजगारी भारत की बड़ी समस्याओं में एक बनी हुई है। एनडीए सरकार के तीसरे कार्यकाल की शुरुआत में ही यह बात साफ है कि राजनीतिक तालमेल से निपटने के बाद इस सरकार की सबसे बड़ी चुनौती रोजगार का इंतजाम होगा। पिछले बुधवार को मंत्रिमंडल की बैठक में जो फैसले हुए उनका ब्योरा देते हुए रोजगार पर खास जोर दिखाई पड़ा। महाराष्ट्र के वधावन पोर्ट की मंजूरी के साथ ही बताया गया कि इससे 17 लाख रोजगार पैदा होंगे। 76,000 करोड़ रुपये के खर्च से बनने वाला यह बंदरगाह भारत की सबसे बड़ी इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं में से एक है। मगर इस खुशखबरी के साथ यह चिंता भी खड़ी हो जाती है कि तब करोड़ों रोजगार जुटाने के लिए कहां-कहां कितना-कितना खर्च करना पड़ेगा? भारत सरकार की पे रिसर्च यूनिट सरकारी कर्मचारियों और अफसरों के वेतन-भत्तों पर खर्च का ब्योरा जारी करती है। उसकी वेबसाइट पर आखिरी रिपोर्ट वित्त वर्ष 2020-21 की लगी है। इसके हिसाब से 1 मार्च, 2021 को केंद्र सरकार में सभी वर्गों के कुल 41,11,146 कर्मचारियों के पदों की मंजूरी थी, लेकिन इनमें से 9,95,803 पद खाली थे। यानी, 24.22 प्रतिशत खाली पद भरे नहीं जा सके थे। उसके बाद का आंकड़ा अभी सामने नहीं है। मगर इस साल की शुरुआत में रेलवे भर्ती के मामले पर जैसा बवाल मचा, वह दिखाता है कि नौजवान कितने बेकरार हैं। अभी एक समाचार एजेंसी ने देश के जाने-माने अर्थशास्त्रियों से सवाल पूछे, तो उनमें से 91 फीसदी का जवाब था कि नई सरकार के लिए आर्थिक मोर्चे पर सबसे बड़ी चुनौती रोजगार के सवाल का हल तलाशना ही होगा। उनके हिसाब से भी समस्या विकट हो रही है, क्योंकि तेज आर्थिक विकास के बावजूद उस अनुपात में रोजगार पैदा नहीं हो पा रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) की 'इंडिया इंप्लॉयमेंट रिपोर्ट' ने पिछले बीस साल के दौरान भारत में रोजगार की तस्वीर खींचने की कोशिश की है। हालांकि, इन वर्षों में कोरोना काल के लगभग गर्त में गए साल भी शामिल हैं। फिर भी, इसमें एक बड़ी चिंता सामने आती है। रिपोर्ट के अनुसार, 2021 में देश की आबादी का लगभग 64 फीसदी हिस्सा 15 से 59 साल की उम्र के बीच है। इसी उम्र के लोगों को कामकाजी आबादी माना जाता है। हालांकि, इस पर विवाद हो सकता है, क्योंकि 18 से कम उम्र के लोगों को रोजगार में होना नहीं चाहिए और आजकल 60 पार करने के बाद भी कई लोग तरह-तरह के काम करते रहते हैं। फिर भी, यदि इसी परिभाषा को मान लें, तो सोचने वाली बात यह है कि 2011 में आबादी का 61 फीसदी हिस्सा ही ऐसे लोगों का था, जबकि रिपोर्ट के मुताबिक, 2036 तक यह हिस्सेदारी बढ़कर 65 फीसदी हो जाएगी। हर साल 80 लाख से ज्यादा नौजवान इस बिरादरी का हिस्सा बन रहे हैं। इसमें थोड़ा और बारीकी से झांकें, तो पता चलता है कि 2000 में जहां आबादी के इस हिस्से में सिर्फ 18 फीसदी लोग पढ़े-लिखे थे, वहीं 2022 तक यह गिनती बढ़कर 35 फीसदी हो चुकी थी। जबकि, दूसरी तरफ इसी दौरान कमाई कर रहे नौजवानों की गिनती 52 फीसदी से गिरकर 37 फीसदी पर पहुंच गई थी। इस रिपोर्ट में साफ दिख रहा है कि बेरोजगारी का संकट मुख्यरूप से नौजवानों की समस्या है। 2022 में कुल बेरोजगारों में 82.9 प्रतिशत नौजवान थे, जबकि पढ़े-लिखे नौजवान इस बेरोजगारों की फौज का 65.7 फीसदी हिस्सा हो चुके थे। चिंता को और बढ़ाने वाला आंकड़ा यह है कि 12वीं क्लास या उससे ज्यादा पढ़ने के बाद भी जो लोग बेरोजगार हैं, उनमें से 76.7 फीसदी महिलाएं या लड़कियां थीं। साफ है, ये सारे लोग सरकारी या निजी नौकरी के भरोसे तो हैं नहीं। इनमें ऐसे लोग भी शामिल हैं, जो स्वरोजगार करते हैं और वे भी, जो अपने परिवार के कारोबार में हाथ बंटाते हैं। दीगर यह भी है कि भारत की आबादी का 65 प्रतिशत हिस्सा गांवों में रहता है और 47 फीसदी खेती या उससे जुड़े कामकाज के भरोसे है। यह जानकारी 2022 के आर्थिक सर्वेक्षण में थी। मगर अब बेरोजगारी की जद्दोजहद में सबसे बड़ी व कमजोर कड़ी है खेती के अलावा असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले या काम की तलाश में लगे लोग। इन्हीं का हाल बताने के लिए सरकार का सांख्यिकी विभाग नियमित रूप से सर्वेक्षण करता रहता है। शहरी क्षेत्रों के लिए तिमाही रिपोर्ट आती है, जबकि गांवों के लिए सालाना। इसी महीने सरकार ने 2021-22 और 2022-23 के सालाना सर्वे की रिपोर्ट जारी की है। 2022-23 की रिपोर्ट में बेरोजगारी की दर 3.2 प्रतिशत दिख रही है, यानी अमेरिका से भी कम, लेकिन इसी में 15 से 29 साल की उम्र के लोगों में यह 10 फीसदी के चिंताजनक स्तर पर दिख रही है। 2017-18 के आंकड़े से मिलाएं, तो पता चलता है कि यह 17.8 प्रतिशत की ऊंचाई से गिरकर 10 फीसदी पर आई है। जीडीपी में आठ प्रतिशत की जबर्दस्त बढ़त दर हासिल करने के बाद भी बेरोजगारी भारत की बड़ी समस्याओं में एक बनी हुई है। एनडीए सरकार के तीसरे कार्यकाल की शुरुआत में ही यह बात साफ है कि राजनीतिक तालमेल से निपटने के बाद इस सरकार की सबसे बड़ी चुनौती रोजगार का इंतजाम होगा। पिछले बुधवार को मंत्रिमंडल की बैठक में जो फैसले हुए उनका ब्योरा देते हुए रोजगार पर खास जोर दिखाई पड़ा। महाराष्ट्र के वधावन पोर्ट की मंजूरी के साथ ही बताया गया कि इससे 17 लाख रोजगार पैदा होंगे। 76,000 करोड़ रुपये के खर्च से बनने वाला यह बंदरगाह भारत की सबसे बड़ी इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं में से एक है। मगर इस खुशखबरी के साथ यह चिंता भी खड़ी हो जाती है कि तब करोड़ों रोजगार जुटाने के लिए कहां-कहां कितना-कितना खर्च करना पड़ेगा? भारत सरकार की पे रिसर्च यूनिट सरकारी कर्मचारियों और अफसरों के वेतन-भत्तों पर खर्च का ब्योरा जारी करती है। उसकी वेबसाइट पर आखिरी रिपोर्ट वित्त वर्ष 2020-21 की लगी है।

विशेष लेख

आपातकाल में संघ की भूमिका महत्त्वपूर्ण अध्याय

डॉ. प्रशांत बड़थ्वाल

भारतीय राजनीति में जब कभी भी लोकतांत्रिक इतिहास का कलंकित अध्याय खोला जाएगा, तो वह तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा सांविधानिक प्रावधानों की निर्मम हत्या कर देश में आपातकाल की घोषणा 25 जून की मध्यरात्रि ही रहेगा। आपातकाल महज नागरिक स्वतंत्रता को निलंबित करना एवं समाज में पुनः निरंकुश कानून को स्थापित करना भर नहीं था, बल्कि इलाहबाद उच्च न्यायालय में गांधी की एकतरफा हार का प्रमुख कारण रहा। तत्पश्चात अपने हजारों राजनीतिक विरोधियों को गिरफ्तार किया गया, प्रेस की स्वतंत्रता को कम कर दिया गया और सरकार के लिए खतरा माने जाने वाले संगठनों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। उन संगठनों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आर.एस.एस.) एक प्रभावशाली संगठन था। इसके बाद जो हुआ, वह आरएसएस के इतिहास के सबसे उल्लेखनीय अध्यायों में से एक 'निष्क्रिय प्रतिरोध आंदोलन' था, जिसने प्रतिबंध की पुरज़ोर अवहेलना की और अपने संगठनात्मक ढाँचे को काफी हद तक अक्षुण्ण रखा और आपातकाल का विरोध करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस प्रतिरोध के शीर्ष पर संघ के तत्कालीन सरसंघचालक मधुकर दत्तात्रेय देवरस (बालासाहेब देवरस) थे। उन्होंने अपनी गिरफ्तारी से पूर्व कार्यकताओं और स्वयंसेवकों को संबोधित किया और कहा कि, 'इस असाधारण स्थिति में, स्वयं सेवक अपना संतुलन खोने के लिए बाध्य नहीं हैं। 26 जून, 1975 की सुबह जैसे ही आपातकाल की घोषणा की खबर पूरे भारत में फैली, देश में अविश्वास और भय की भावना फैल गई। आपातकाल का लागू होना राजनीतिक उथल-पुथल, आर्थिक चुनौतियों और इंदिरा गांधी की बढ़ती सत्तावादी प्रवृत्तियों के दौर की परिणति के रूप में आया। संघ, जो लंबे समय से गांधी की चुनिंदा नीतियों की आलोचना करता रहा, आपातकाल की घोषणा के कुछ ही घंटों के भीतर उनके प्रमुख नेताओं को घेर लिया गया और गिरफ्तार कर लिया गया। हालांकि यह संघ की दूरदर्शिता ही थी कि शीर्ष नेतृत्व ने इस तरह के कदम का पूर्वानुमान लगा लिया था। आपातकाल से कुछ समय पूर्व जैसे-जैसे राजनीतिक तनाव बढ़ा, बालासाहब देवरस और संघ के अन्य वरिष्ठ नेतृत्व ने आकस्मिक योजनाएं बनानी शुरू कर दी थीं। उन्हें दृढ़ विश्वास था कि संगठन की यह तैयारी उस तूफान का अपनी क्षमतापूर्वक सामना करने में महत्त्वपूर्ण साबित होगी जो इसे घेरने वाला था और जनकल्याण हेतु कार्य में विघ्न उत्पन करने वाला था। संघ के वरिष्ठ प्रचारक और लोक संघर्ष समिति के संयोजक, नानाजी देशमुख (जिन्होंने 1977 में जनता पार्टी के बैनर तले विपक्ष को एक साथ लाने में अहम भूमिका निभाई) और के. एस. सुदर्शन ने भी पत्रों के माध्यम से विभिन संगठनों के साथ भी संवाद किया। संघ पर सरकार की कार्रवाई त्वरित और कठोर थी। शीर्ष नेतृत्व से लेकर स्थानीय स्तर के हजारों कार्यकर्ताओं एवं स्वयंसेवकों तक को गिरफ्तार किया गया और जेल में डाल दिया गया। संगठन के कार्यालयों पर छापे मारे गए और दस्तावेज के साथ संपत्ति भी जब्त कर ली गई। 4 जुलाई, 1975 को राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा माने जाने वाले कई अन्य संगठनों के साथ संघ को आधिकारिक रूप से 'मीसा कानून' के अंतर्गत प्रतिबंधित कर दिया गया था। इस भारी-भरकम दृष्टिकोण के बावजूद संघ नई वास्तविकता के लिए पुनः अनुकूल होने में कामयाब रहा। संघ ने अपने स्थानीय शाखाओं की अनूठी संरचना से राष्ट्र में व्याप्त भय के वातावरण में भी विकेंद्रीकृत नेतृत्व के साथ जनमानस तक केंद्र सरकार की निरंकुश नीतियों का दमन और समाज में अन्य वर्ग के लोगों की सहायता से कई प्रचार-प्रसार के कार्य सफलतापूर्वक किया, जिसमें स्वयंसेवकों के अलावा सामान्य जनता का भी सरकार के प्रति रोष संघ के लिए अतुलनीय योगदान के रूप में सिद्ध हुआ। वर्ष 1975 के अंत में जेल से बाहर आकर आपने संदेश में देवरस ने लिखा-'वर्तमान संकट वैचारिक मतभेदों से परे है। लोकतंत्र और कानून के शासन में विश्वास रखने वाले सभी लोगों को हमारे मौलिक अधिकारों पर इस हमले का विरोध करने के लिए एक साथ आना चाहिए। इस निर्देश से संघ और अन्य विपक्षी समूहों के बीच सहयोग बढ़ा, जिसमें समाजवादी और मध्यमार्गी शामिल थे। देवरस ने अहिंसक प्रतिरोध के महत्व पर भी जोर दिया।

बढ़ते प्रदूषण से जान और जहान खतरे में

ललित गर्ग

कहते हैं कि जान है तो जहान है, लेकिन भारत में बढ़ते प्रदूषण के कारण जान और जहान, दोनों ही खतरे में हैं। देश की हवा में घुलते प्रदूषण का 'जहर' अनेक बार खतरनाक स्थिति में पहुंच जाना चिंता का बड़ा कारण हैं। प्रदूषण की अनेक बंदिशों एवं हिदायतों के बावजूद प्रदूषण नियंत्रण की बात खोखली साबित हो रही है। यह कैसा समाज है जहां व्यक्ति के लिए पर्यावरण, अपना स्वास्थ्य या दूसरों की सुविधा-असुविधा का कोई अर्थ नहीं है। जीवन-शैली ऐसी बन गई है कि आदमी जीने के लिए सब कुछ करने लगा पर खुद जीने का अर्थ ही भूल गया। गंभीर होती इस स्थिति को यूनिसेफ और अमेरिका के स्वतंत्र अनुसंधान संस्थान 'हेल्थ इफेक्ट्स इंस्टीट्यूट' की साझेदारी में जारी रिपोर्ट ने बयां किया है। रिपोर्ट के आंकड़े करने वाले हैं, जिनमें 2021 में वायु प्रदूषण से 21 लाख भारतीयों के मरने की बात कही गई है। दुखद यह है कि मरने वालों में 1.69 लाख बच्चे हैं। निश्चय ही ये आंकड़े जहां व्यथित और चिंतित करने वाले हैं वहीं नीति-नियंताओं के लिए शर्म का विषय होना चाहिए। सरकार की नाकामयियां ही हैं कि जिंदगी विषमताओं और विसंगतियों से घिरी है, कहीं से रोशनी की उम्मीद दिखाई नहीं दे रही है। जानलेवा वायु प्रदूषण न केवल भारत, बल्कि दुनिया के लिए गंभीर समस्या है। चीन में भी इसी कालखंड में 23 लाख लोग वायु प्रदूषण से मरे हैं। जहां तक पूरी दुनिया में इस वर्ष मरने वालों की संख्या की बात है तो यह करीब 81 लाख बताई जाती है। चिंता की बात यह है कि भारत और चीन में वायु प्रदूषण से मरने वालों की संख्या के मामले में यह आंकड़ा वैश्विक स्तर पर 54 फीसद है जो हमारे तंत्र की विफलता, गरीबी और प्रदूषण नियंत्रण में कोताही को दर्शाता है। इसमें आम आदमी की लापरवाही भी कम नहीं है। उसे पता ही नहीं होता कि किन प्रमुख कारणों से वह प्रदूषण फैला रहा है। प्रश्न है कि आम आदमी एवं उसकी जीवनशैली वायु प्रदूषण को इतना बेपरवाह होकर क्यों फैलाती है? क्यों आदमी मृत्यु से नहीं डर रहा? प्रदूषण जैसी समस्याएं नये-नये मुखौटे ओढ़ कर डराती हैं। विडम्बना तो यह है कि विभिन्न राज्य सरकारें विकट होती समस्या का हल निकालने की बजाय राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप लगाती रहती हैं। जानबूझकर प्रदूषण फैलाती हैं ताकि एक-दूसरे की छीछालेदर कर सकें। प्रदूषण के नाम पर कोरी राजनीति होना दुर्भाग्यपूर्ण है। दिल्ली सहित उत्तर भारत के ज्यादातर इलाकों में प्रदूषण का बेहद खतरनाक स्थिति में बने रहना चिंता में डालता है। दिल्ली, नोएडा, गाजियाबाद, फरीदाबाद, गुरु ग्राम में प्रदूषण का बड़ा कारण पड़ोसी राज्यों से आने वाला पराली का धुआं होता है। पटाखों का धुआं भी समस्या है, इसके अलावा सड़कों पर लगातार बढ़ते निजी वाहन, गुणवत्ता के ईधन का उपयोग न होना, निर्माण कार्य खुले में होना, उद्योगों की घातक गैसों व धुएं का नियमन न होने एवं बढ़ता धूम्रपान जैसे अनेक कारण वायु प्रदूषण बढ़ाने वाले हैं। आवासीय कॉलोनियों और व्यावसायिक संस्थानों का विज्ञानसम्मत ढंग से निर्माण न हो पाना भी प्रदूषण बढ़ाने की वजह है। यह कैसी शासन-व्यवस्था है? अदालतों की कैसी अवमानना का मामला है? यह सभ्यता की निचली सीढ़ी है, जहां तनाव-ठहराव की स्थितियों के बीच व्यक्ति, शासन-प्रशासन प्रदूषण नियंत्रण के दायित्वों से दूर होता जा रहा है। यूनिसेफ की रिपोर्ट में वायु प्रदूषण से 1 लाख 69 हजार बच्चे, जिनकी औसत आयु पांच साल से कम बताई गई है, मौत के शिकार होते हैं। प्रदूषण का प्रभाव गर्भवती महिलाओं पर होने से बच्चे समय से पहले जन्म ले लेते हैं, इनका समुचित शारीरिक विकास ढंग से नहीं हो पाता। बच्चों का कम वजन का पैदा होना, अस्थमा तथा फेफड़ों की बीमारियां से पीड़ित होना जैसी शिकायतें आम हैं। चिंता की बात यह भी है कि गरीब मुल्कों नाइजीरिया, पाकिस्तान, बांग्लादेश, इथोपिया से ज्यादा बच्चे हमारे देश में वायु प्रदूषण से मर रहे हैं। विडंबना यह है कि ग्लोबल वार्मिंग तथा जलवायु परिवर्तन के संकट ने वायु प्रदूषण से होने वाली मौतों की संख्या को बढ़ाया है। एक अरब चालीस करोड़ जनसंख्या वाले भारत के लिए संकट बड़ा है। दिल्ली सहित कई महानगरों में प्रदूषण जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गया है। हर कुछ समय बाद अलग-अलग वजहों से हवा की गुणवत्ता का स्तर 'बेहद खराब' की श्रेणी में दर्ज किया जाता है और सरकार की ओर से स्थिति में सुधार के लिए तमाम उपाय करने की घोषणा की जाती है। गंभीर होती इस स्थिति को यूनिसेफ और अमेरिका के स्वतंत्र अनुसंधान संस्थान 'हेल्थ इफेक्ट्स इंस्टीट्यूट' की साझेदारी में जारी रिपोर्ट ने बयां किया है। रिपोर्ट के आंकड़े करने वाले हैं, जिनमें 2021 में वायु प्रदूषण से 21 लाख भारतीयों के मरने की बात कही गई है। दुखद यह है कि मरने वालों में 1.69 लाख बच्चे हैं। निश्चय ही ये आंकड़े जहां व्यथित और चिंतित करने वाले हैं वहीं नीति-नियंताओं के लिए शर्म का विषय होना चाहिए। सरकार की नाकामयियां ही हैं कि जिंदगी विषमताओं और विसंगतियों से घिरी है, कहीं से रोशनी की उम्मीद दिखाई नहीं दे रही है। जानलेवा वायु प्रदूषण न केवल भारत, बल्कि दुनिया के लिए गंभीर समस्या है। चीन में भी इसी कालखंड में 23 लाख लोग वायु प्रदूषण से मरे हैं। जहां तक पूरी दुनिया में इस वर्ष मरने वालों की संख्या की बात है तो यह करीब 81 लाख बताई जाती है। चिंता की बात यह है कि भारत और चीन में वायु प्रदूषण से मरने वालों की संख्या के मामले में यह आंकड़ा वैश्विक स्तर पर 54 फीसद है जो हमारे तंत्र की विफलता, गरीबी और प्रदूषण नियंत्रण में कोताही को दर्शाता है। हो सकता है कि ऐसा होता भी हो, लेकिन सच यह है कि कुछ समय बाद प्रदूषण का स्तर गहराने के साथ सवाल खड़ा होता है कि आखिर, इसकी असली जड़ क्या है, और क्या सरकार की कोशिशें सही दिशा में हो पा रही हैं?

आपदा के समय राज्यों को पूरी सहायता मिले

दंडवते

सभापति महोदय, अब तक वाद-विवाद में बाढ़ पर बहुत ध्यान दिया गया है। नि:संदेह यह एक अच्छी बात है, परंतु बाढ़ पर चर्चा करते समय सूखे को भुला दिया गया है और इसलिए मैं देश के विभिन्न भागों में सूखे की स्थिति की ओर कुछ अधिक ध्यान दिलाना चाहूंगा। मैं पश्चिम तटीय कोंकण क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता हूं, जहां पिछले 100 वर्षों से अकाल या सूखा नहीं पड़ा। बाढ़ आई थी, पर इस बार हमने देखा कि असामान्य रूप से सूखे तथा अकाल की स्थिति पैदा हो गई थी...। देश में सूखा तथा बाढ़ लगभग एक चिरकालिक समस्या बन गई है और इसलिए इनकी रोकथाम तथा बचाव के तरीकों पर हमें कुछ और चर्चा करने की जरूरत है, जिससे हम अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन दृष्टिकोण अपना सकें। ...यद्यपि बाढ़ एवं सूखा मुख्य रूप से राज्यों का विषय है, क्योंकि ये रोजमर्रा की समस्या बन गए हैं, मैं माननीय मंत्री महोदय से निवेदन करता हूं कि वे समरूप मार्गनिर्देश तैयार करें तथा राज्यों को भेजें, ताकि इनके प्रति एक समान दृष्टिकोण अपनाया जा सके तथा उस स्थिति में केंद्र सरकार राज्य सरकारों के साथ मिलकर साधन एकत्र कर सके। जहां तक वित्तीय साधनों का संबंध है, यदि आप विभिन्न राज्य सरकारों के पास सूखे तथा बाढ़ की समस्याओं से निपटने के लिए उपलब्ध धनराशि को देखेंगे, तो आप पाएंगे कि राज्यों के लिए संसाधन जुटाना उनकी क्षमता से बाहर है। इसलिए केंद्रीय सहायता सुलभ होनी चाहिए...। वर्तमान स्थिति क्या है? मानदंड तथा पुराने प्रतिमान केवल कल्पना शक्ति पर ही आधारित हैं; अधिकारियों को यह पता लगाने की कोशिश करनी चाहिए कि क्या किसी क्षेत्र विशेष में सूखे की स्थिति है? अधिकारियों को पता लगाने की कोशिश करनी चाहिए कि वास्तविक स्थिति क्या है और वे कल्पना शक्ति के सहारे ही यह पता लगाने की कोशिश करते हैं कि वर्तमान स्थिति क्या है और फिर वे कहते हैं कि इस बार फसल रुपये में 50 पैसे या 60 पैसे या 40 पैसे है। इसका गलत प्रभाव पड़ता है। वास्तव में, मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि भारत में कई क्षेत्रों में इस पुराने मानदंड कि एक क्षेत्र विशेष में सूखे की स्थिति क्या है, के बजाय यह बेहतर होगा कि आप उस क्षेत्र विशेष में हुई औसत वर्षा को लें और यदि वर्षा काफी कम हुई हो, तो गांव के अधिकारी द्वारा दी जाने वाली रिपोर्ट की चिंता किए बिना हमें आगे कार्रवाई करनी चाहिए। इस संबंध में आने वाली कठिनाइयों के बारे में मैं जानता हूं, हमारे वित्त मंत्री महोदय कृषि मंत्री महोदय को बताएंगे कि बैंक वालों के कारण परेशानियां पैदा होंगी। ...मैं सोचता हूं कि वित्त मंत्री महोदय तथा कृषि मंत्री महोदय के बीच एक वार्ता होनी चाहिए तथा पुराने मानदंडों को बिल्कुल बदल दिया जाना चाहिए। ... कुछ बड़े प्रयासों की आवश्यकता है। उनमें से एक कुएं की खुदाई करना है। इस बारे में एक बड़ा दिलचस्प अनुभव है तथा यह अनुभव राजस्थान में हुआ है। ...सामान्यतया पानी 150 या 200 फुट नीचे होता है। आप पाएंगे कि सूखे की स्थिति में अगर आप 700 फुट तक भी खुदाई करेंगे, तो ट्यूबवेल में कोई पानी नहीं आएगा और सारी राशि तथा समस्त व्यय व्यर्थ चला जाएगा।... सभी राज्यों को पर्याप्त केंद्रीय सहायता दी जानी चाहिए। यहां मेरा एक ठोस सुझाव है कि सूखे की स्थिति में कुछ ऐसे भी क्षेत्र हैं, जो बहुत पिछड़े हुए हैं। उदाहरण के लिए, उड़ीसा, बिहार अथवा महाराष्ट्र के क्षेत्र। ...जब कभी संबंधित राज्यों को केंद्रीय सहायता दी जाती है, तो यह पता चलता है कि सामान्यतया न केवल पिछड़े इलाकों की अवहेलना की जाती है, अपितु सूखे की स्थिति में तो उन्हें सहायता से पूरी तरह वंचित रखा जाता है। ...एक निश्चित राशि इन उपेक्षित पिछड़े क्षेत्रों के लिए निर्धारित करने की कोशिश करनी चाहिए, ताकि इन पिछड़े इलाकों की सूखे के दौरान भी उपेक्षा न हो।यद्यपि बाढ़ एवं सूखा मुख्य रूप से राज्यों का विषय है, क्योंकि ये रोजमर्रा की समस्या बन गए हैं, मैं माननीय मंत्री महोदय से निवेदन करता हूं कि वे समरूप मार्गनिर्देश तैयार करें तथा राज्यों को भेजें, ताकि इनके प्रति एक समान दृष्टिकोण अपनाया जा सके तथा उस स्थिति में केंद्र सरकार राज्य सरकारों के साथ मिलकर साधन एकत्र कर सके। जहां तक वित्तीय साधनों का संबंध है, यदि आप विभिन्न राज्य सरकारों के पास सूखे तथा बाढ़ की समस्याओं से निपटने के लिए उपलब्ध धनराशि को देखेंगे, तो आप पाएंगे कि राज्यों के लिए संसाधन जुटाना उनकी क्षमता से बाहर है। इसलिए केंद्रीय सहायता सुलभ होनी चाहिए...। वर्तमान स्थिति क्या है? मानदंड तथा पुराने प्रतिमान केवल कल्पना शक्ति पर ही आधारित हैं; अधिकारियों को यह पता लगाने की कोशिश करनी चाहिए कि क्या किसी क्षेत्र विशेष में सूखे की स्थिति है? अधिकारियों को पता लगाने की कोशिश करनी चाहिए कि वास्तविक स्थिति क्या है और वे कल्पना शक्ति के सहारे ही यह पता लगाने की कोशिश करते हैं कि वर्तमान स्थिति क्या है और फिर वे कहते हैं कि इस बार फसल रुपये में 50 पैसे या 60 पैसे या 40 पैसे है। इसका गलत प्रभाव पड़ता है। वास्तव में, मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि भारत में कई क्षेत्रों में इस पुराने मानदंड कि एक क्षेत्र विशेष में सूखे की स्थिति क्या है, के बजाय यह बेहतर होगा कि आप उस क्षेत्र विशेष में हुई औसत वर्षा को लें और यदि वर्षा काफी कम हुई हो, तो गांव के अधिकारी द्वारा दी जाने वाली रिपोर्ट की चिंता किए बिना हमें आगे कार्रवाई करनी चाहिए।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/धर्म समाज/देश
रायपुर, शनिवार 29 जून 2024
www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

आदमी चिन्तन में नहीं, चिन्ता में जी रहा है: आचार्य श्री प्रसन्नसागर जी महाराज

औरंगाबाद/हैदराबाद (विश्व परिवार)। भारत गौरव साधना महोदधि सिंहनिष्क्रिड़ित व्रत कर्ता अन्तर्मना आचार्य श्री 108 प्रसन्न सागर जी महाराज एवं सौम्यमूर्ति उपाध्याय 108 श्री पीयूष सागर जी महाराज ससंघ का पदविहार कुलचाराम हैदराबाद की और अहिंसा संस्कार पदयात्रा चल रहा है विहार के दौरान हैदराबाद को प्रवचन एक गाली-चार को साथ लेकर आती है... एक चिन्ता- सौ बिमारीयों को जन्म देती है। इसलिए करने दो बकवास, जो करते हैं। खाली बर्तन और खाली दिमाग, हमेशा शोर करते हैं। आज का आदमी चिन्तन में नहीं, चिन्ता में जी रहा है। इसलिए जीते जी मर रहा है।चिन्ता जहर है, इससे दूर रहिये। चिन्ताओं से मुक्त होने के कुछ उपाय हैं, जैसे आप आपनी सारी चिन्ताओं को एक कागज पर लिखें और ध्यान से तीन बार पढ़ें और उस कागज को जला दें। आप अपनी चिन्ताओं को अपने धोबी से, या बर्तन माजने वाली बाई से या कुम्हार से कह डालिये। मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारा या चर्च में जाकर अपने इष्ट आराध्य परमात्मा को सुना डालिये। श्री चरणों में सारी चिन्ताओं को डाल आइये। आप महसूस करेंगे कि मैं हल्का हो गया हूँ। यदि चिन्ता तुम्हारे सिर बैठ गई तो फिर वह तुम्हें कभी खड़ा नहीं होने देगी। इसलिए कहा- एक चिन्ता- सौ बिमारियों को लेकर आती है। **-नरेंद्र अजमेरा, पियुष कासलीवाल**

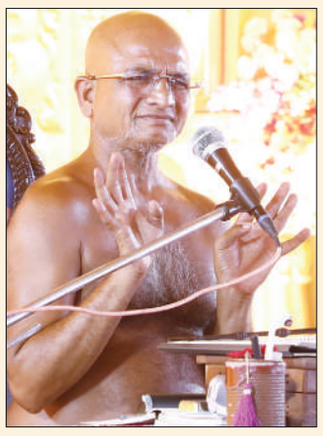

बी.ए.एस.एल.पी. प्रथम वर्ष 2024-25 में प्रवेश हेतु आवेदन की तिथि में वृद्धि

रायपुर (विश्व परिवार)। पं. जवाहर लाल नेहरू स्मृति चिकित्सा महाविद्यालय, रायपुर के नाक, कान व गला रोग विभाग (ई.एन.टी) के अंतर्गत संचालित बैचलर ऑफ ऑडियोलॉजी स्पीच लैंग्वेज पैथोलॉजी (बी.ए.एस.एल.पी) पाठ्यक्रम 2024-25 में प्रवेश लेने हेतु आवेदन फॉर्म 28 मई 2024 से ऑनलाइन प्रारंभ किया गया था। आवेदन पत्र स्पीड पोस्ट / रजिस्टर्ड पोस्ट अथवा सामान्य डाक द्वारा 27 जून 2024 तक तथा विलंब शुल्क के साथ 29 जून 2024 तक जमा किये जा सकते थे परंतु दिनांक 27.06.2024 को हुए विभागीय बैठक के निर्णय अनुसार फार्म जमा करने की अंतिम तिथि बढ़ाकर 10 जुलाई 2024 एवं विलंब शुल्क के साथ 12 जुलाई 2024 तक कर दी गयी है। आवेदन किये हुए अभ्यर्थियों की सूची दिनांक 18.07.2024 को वेबसाईट raipurbaslp.org में जारी की जायेगी उपरोक्त जारी किए हुए मेरिट सूची में दावा आपत्ति हेतु अभ्यर्थी दिनांक 25.07.2024 तक आवेदन कर सकते हैं। उक्त दिनांक के पश्चात् दावा आपत्ति हेतु किए गए आवेदन स्वीकार नहीं किये जाएँगे। आवेदन किए हुए अभ्यर्थियों की दावा-आपत्ति उपरांत अंतिम मेरिट सूची दिनांक 29.07.2024 को वेबसाइट www.raipurbaslp.org में जारी की जाएगी। बी.ए.एस.एल.पी. पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु काउंसलिंग दिनांक 31.07.2024 को आयोजित की जाएगी। पाठ्यक्रम, प्रवेश संबंधी विवरणिका, आवेदन पत्र, प्रवेश संबंधी नियम, आवेदन प्रारूप एवं अन्य जानकारी हेतु वेबसाइट raipurbaslp.org का अवलोकन कर सकते हैं।

फार्म जमा करने की अंतिम तिथि बढ़ाकर 10 जुलाई 2024 एवं विलंब शुल्क के साथ 12 जुलाई 2024 तक कर दी गयी है

निगम का टैक्स भुगतान शुरू, पांच दिनों में 218 लोगों ने जमा किए 19 लाख से अधिक का टैक्स

बिलासपुर (विश्व परिवार)। टैक्स वसूली करने वाली स्पायरों कंपनी के साथ अनुबंध समाप्त होने के बाद नगर निगम ने पुरानी व्यवस्था के तहत टैक्स लेना प्रारंभ कर दिया है। 24 जून से 28 जून तक 218 लोगों ने 19 लाख 70 हजार 843 रूपये टैक्स जमा किया है। 19 जून को स्पायरों के साथ अनुबंध समाप्त होने के बाद निगम ने 23 जून तक टैक्स का भुगतान बंद रखा था,ताकि पुरानी व्यवस्था को शुरू किया जा सके। तैयारी पूरी होने के बाद 24 जून से शुरू करने पर नागरिकों ने जोन कार्यालय,निगम मुख्यालय और आरआई के माध्यम से अपने टैक्स का भुगतान शुरू कर दिया है। नगर निगम ने स्मार्ट सिटी की मदद से पोर्टल तैयार किया है जिसके जरिए करदाताओं के टैक्स भुगतान करने पर पोर्टल में अपडेट कर पावती दी जा रही है। नगर निगम बिलासपुर के समस्त करों की वसूली करने वाली कंपनी स्पायरों का ठेका समाप्त कर दिया था,जिसके बाद साफ्टवेयर समेत अन्य तैयारियों में निगम जुटा हुआ था। अब नागरिक अपने क्षेत्र के जोन कार्यालय और एआरआई के माध्यम से अपना टैक्स जमा कर सकते हैं। नगर निगम के सभी प्रकार के टैक्स चाहें प्रापर्टी टैक्स हों या पानी का,कमर्शियल टैक्स सभी प्रकार के टैक्स शहर के नागरिक घर बैंठे आनलाइन जमा कर सकेंगे। नगर निगम जल्द ही आनलाइन सर्विस शुरू करने जा रही है।

राग को खत्म नहीं कर सकते तो उसका दायरा सीमित करो : श्री विरागमुनि जी

रायपुर (विश्व परिवार)। राजधानी की पावन धरा पर जिनवाणी की वर्षा शुरू हो चुकी है। इसी क्रम में गुरूवार को दीर्घ तपस्वी श्री विरागमुनिजी का न्यू राजेंद्र नगर स्थित महावीर स्वामी जिनालय में आगमन हुआ और 8.45 बजे से लोगों ने प्रवचन का लाभ लिया। प्रवचन के दौरान उन्होंने कहा कि राग का दायरा आप खत्म नहीं कर सकते तो उसे सीमित करने की कोशिश करो। हमें अपने राग को कमजोर करना है, जबकि हमें उसे ही मजबूत बना रहे है। दिन ब दिन हमारा राग बढ़ता जा रहा है। इतना बढ़ता जा रहा है, जिसे हम गिन नहीं पा रहे है और वह हमारी गणना से बाहर हो चुका है। आज जो भी हमारे साथ हो रहा है, वह हमारे भूतकाल के कर्मों के आधार पर हो रहा है। आज हमें मनुष्य का जीवन मिला है तो हमें इसका पूरा उपयोग करना चाहिए और धर्म करके हमें मोक्ष को प्राप्त कर लेना चाहिए क्योंकि ऐसा मौका फिर ना जाने कब आएगा। मोक्ष पाना केवल और केवल मनुष्य के हाथ में होता है। यह भगवान के हाथ में नहीं है अगर वह उसके हाथ में होता तो वह सभी जीवों को मोक्ष प्रदान कर देता।

मुनिजी ने कहा कि मोक्ष तो सभी को चाहिए ही चाहिए लेकिन कर्म कोई करना नहीं चाहता। अब हमें यह तय करना है कि हमें अपने जीवन में करना क्या है। हम ऐसा क्या करें की अपनी नजरों में तो कम से कम ना गिरे। दूसरों की नजरों में गिर जाए तो कोई फर्क नहीं पड़ेगा लेकिन अपने नजरों में हमें नहीं गिरना है ऐसा हमें काम करना है।

उन्होंने आगे कहा कि आज हमने जो चोला पहन रखा है वह बाहर से तो इंसान का है पर अंदर किसी शैतान का वास है। आज अच्छा कोई नहीं बनना चाहता सब अच्छा दिखना चाहते हैं। उसके लिए व्यक्ति धार्मिक और सामाजिक कार्य करता है उसी के बारे में सोचता है और वैसे ही बात करता है ताकि लोग उसे अच्छा बोले।

मुनिश्री वीरसागर जी महाराज ने प्रवचन सभा में कहा

नि:स्वार्थ भक्ति ही मुक्ति का कारण हो सकती है

विदिशा (विश्व परिवार)। विपरीत परिस्थितियों में हमारी श्रद्धा और भक्ती टिकी रहे वही हमारी सच्ची श्रद्धा और सच्ची भक्ति है। उपरोक्त उदगार निर्यापक श्रमण मुनि श्री वीरसागर जी महाराज ने प्रात:कालीन प्रवचन सभा में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि गुरू का मिलना बहूत आसान है, लेकिन गुरु की राह पर चलना और गुरु की बात को मानना बहूत कठिन है।मुनि श्री ने कहा परिस्थितियां अनुकूल है, तो सभी को गुरु अच्छे लगते है और सभी का धर्म अच्छी तरह से पल जाता है, लेकिन परिस्थितियां आपके अनुकूल नहीं हुई तो जो गुरु कल तक आपको अचछे लगते थे उन्ही गुरु की आप लोग आलोचना करने लग जाते हो? भगवान के प्रति औरगुरु के प्रति आपकी श्रद्धा में कोई कमी नहीं, लेकिन कभी यदि कोई दर्दनाक हादसा हो जाऐ तो हमारी श्रद्धा में कमी आ जाती है। उन्होंने कहा कि आप सभी लोग धनंजय कवि को अवश्य जानते है, जिन्होंने विषापाहार स्त्रोत लिखा है वह जब प्रभु भक्ती करते थे, तो उसमें इतने अधिक डूब जाते थे कि फिर बाहर क्या घटना घट रही है, इसका भी होश नहीं रहता था एक बार उनके एकमात्र बेटे को सर्प ने डंस लिया पत्नी बेटे को लेकर उनके पास आई लेकिन उनकी भक्ती में कमी नहीं आई।

शनिवार को माधव उद्यान में प्रात:5:30 बजे से ध्यान योग की विशेष कक्षा : संत शिरोमणि आचार्य गुरुदेव विद्यासागरजी महाराज के परम प्रभावक शिष्य एवं वर्तमान आचार्य श्री समय सागर जी महाराज के आज्ञानुवर्ती मुनि श्री वीरसागर जी महाराज स संघ सानिध्य में प्रात: 5:30 बजे अपने आपको संतुलित रखने एवं आध्यात्मिक शक्ति को बड़ाने के लिये ध्यान योग की कक्षा को सार्वजनिक रुप से विदिशा नगर के नागरिकों को लाभ दैनें माधव उद्यान में पधारेंगे सभी लोगों से निवेदन है कि समय पर पधारने की कृपा करेंजैन समाज के प्रवक्ता अविनाश जैन ने बताया ध्यान योग के पश्चात मुनिसंघ द्वारा 6:30 बजे से शीतलधाम में शांतिधारा संपन्न होगी तत्पश्चात 8-15 बजे से शांतिनाथ जिनालय स्टेसन जैन मंदिर में धर्मसभा संपन्न होगी। श्री सकल दिगम्बर जैन समाज एवं श्री शीतल विहार न्यास ट्रस्ट ने सभी साधर्मी वंधुओं एवं नगर के नागरिकों से इस अवसर का लाभ उठाने की अपील की है। **-अविनाश जैन**

जनवाणी के बजाय आगम अनुसार जिनवाणी पर श्रद्धा रखें : आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज

बांसवाड़ा (विश्व परिवार)। पंचम पट्टाधीश वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज 58 साधुओं सहित बांसवाड़ा की बाहुबली कॉलोनी में संघ सहित विराजित है। आज की धर्म सभा में आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने चक्रवर्ती शब्द की विवेचना कर बताया कि चक्रवर्ती भरत क्षेत्र के 6 खंडों पर विजय प्राप्त करता है इसी कारण उसे चक्रवर्ती कहा जाता है।प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांति सागर जी महाराज ने भी चारित्र के 6 खंडों पर विजय प्राप्त की इसलिए उन्हें चारित्र चक्रवर्ती की उपाधि दी गई।आचार्य श्री शांति सागर जी महाराज ने अपने अंतिम उपदेश में संसारी प्राणियों को शरीर और आत्मा पृथक पृथक है इसके भेद विज्ञान की देशना दी। सम्यत्कत्व धारण करने की प्रेरणा दी डरो मत संयम धारण करो। चारित्र के 6 खंड में विवेचना में बताया कि आचार्य श्री शांति सागर जी ने समिति, गुप्ति, दस धर्म, 6 आवश्यक, 12 तप को जीवन में अपनाया।

मेवाड़ बागड़ सहित राजस्थान में हमने आचार्य श्री शांति सागर जी का आचार्य पदारोहण का शताब्दी वर्ष अक्टूबर 2024 से अक्टूबर 2025 तक मनाने की प्रेरणा दी। आचार्य श्री ने 6 से अधिक राज्यो कर्नाटक से विहार कर हैदराबाद, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखंड, उत्तरप्रदेश, गुजरात, मध्यप्रदेश आदि राज्यों में विहार कर धर्म प्रभावना कर सभी को श्रद्धा वान विवेकवान और क्रियावान होने का उपदेश दिया। समाज अध्यक्ष महेंद्र वोरा एवम समाज प्रवक्ता महेंद्र कवलिया, राजेश पंचोलिया अनुसार आचार्य श्री ने बताया कि मेवाड़ और बागड़ में समाज को नवीनता के लिए प्राचीन आगम परंपरा को नहीं भूलना चाहिए। समाज के जाग्रत होने पर जिन धर्म संस्कृति का संरक्षण होकर आचार्य श्री के आगम सिद्धांत पुनर्जीवित होंगे। श्रावको को जनवाणी के बजाय आगम जिनवाणी प्राचीनता को मानना चाहिए एकांत वाद समाज के लिए धातक है। आचार्य श्री शांति सागर जी ने प्रेरणा देकर जिनवाणी षटखंडागम आदि ग्रन्थों को तांबे पर अंकित कराया, जिस प्रकार नदी का प्रवाह निरंतर होता हैं उसी प्रकार दिगंबर साधुओं का आहार विहार निहार स्वतंत्रता से होना आचार्य शांति सागर जी की देन हैं जिनालयों की रक्षा के लिए अन्न आहार का त्याग किया। बाल विवाह जैसी सामाजिक कुरीतियों पर रोक लगवाई कर्नाटक महाराष्ट्र में धरो से कुदेवो की प्रतिमाओं का विसर्जन निर्भीकता से करा कर मिथ्यात्व दूर कराया। आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने बताया कि जब आचार्य श्री शांति सागर जी का विहार उत्तर भारत में हुआ तब संघ में चेत्यालय में पंचामृत और महिला अभिषेक और पूजन आगम अनुसार श्रावक श्राविका करते थे। आचार्य श्री ने अपना आचार्य पद प्रथम मुनि शिष्य श्री वीर सागर जी को संघ की कार्य व्यवस्था हेतु दिया आचार्य पद के 36 गुणों का त्याग नही किया। आचार्य श्री के समय साधुओं के लिए मूलाचार ग्रंथ नहीं था किंतु उन्होंने अपने आचरण चारित्र से मूलाचार का मार्गदर्शन दिया आज मुलाचार के विरुद्ध क्रिया होती हैं।उन्होंने तप का कलशारोहण समाधि संलेखना के रूप में किया।कमल सारगिया अनुसार इसके पूर्व मुनि श्री पुण्य सागर जी का प्रवचन हुआ। आपने साधुओं की आहार चर्या बाबद उपदेश दिया। आज आचार्य श्री समक्ष दिनेश खोड़निया ने 35 वे आचार्य पदारोहण समारोह 5 से 7 जुलाई त्रिदिवसीय कार्यक्रम के आमंत्रण पोस्टर का विमोचन किया। धर्म सभा के पूर्व आचार्य श्री शांति सागर जी एवम परंपरा के आचार्यों के चित्र का अनावरण कर दीप प्रज्वलन किया। स्थानीय बाहुबली समाज द्वारा अतिथियों का बागड़ की गरिमा अनुरूप स्वागत किया।

-राजेश पंचोलिया

जंगल बचेगा तो आजीविका के साधन भी बढ़ेगा : मंत्री रामविचार नेताम

रायपुर (विश्व परिवार)। आदिम जाति विकास मंत्री श्री राम विचार नेताम ने कहा कि ईश्वर ने हमें प्रकृति के गोद में जन्म दिया है। राज्य के विशेषकर बस्तर और सरगुजा के बहुतायत आदिवासियों का जीवन वन संसाधन पर आश्रित हैं। यदि जंगल नहीं बचेगा तो हमारे आजीविका के साधन भी कम हो जाएगा। उन्होंने कहा कि जंगल बचेगा तो आजीविका के साधन बढ़ेंगे। हमें कर्तव्यनिष्ठा के साथ जंगलों का संरक्षण करना चाहिए। वनों का सुरक्षा हमारा अधिकार ही नहीं कर्तव्य भी है। मंत्री श्री नेताम आज नवा रायपुर स्थित आदिवासी अनुसंधान संस्थान में सामुदायिक वन संसाधन अधिकार प्राप्त ग्राम सभाओं के लिए आजीविका संवर्धन विषय पर आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला के समापन सत्र को सम्बोधित कर रहे थे। मंत्री श्री नेताम ने कहा कि व्यक्तिगत और सामुदायिक वन संसाधन अधिकार प्राप्त ग्राम सभाओं को आगामी एक वर्ष के भीतर बेहतर तरीके से क्रियाशील किया जाए। वे वीडियोकान्फ्रेंसिंग के माध्यम से प्रदेश के सभी एफआरए प्रतिनिधियों से बात करेंगे और उनकी समस्याएं सुनेंगे। हरसंभव उनकी समस्याओं का समाधान ढूंढा जाएगा। उन्होंने कहा कि ग्रामवासी जंगल और जमीन को सुरक्षित रख सकेंगे। मंत्री श्री नेताम ने कहा कि गांवों में प्रतिभाओं की कमी नहीं है, भले ही उनके पास डिग्री व डिप्लोमा न हो, किन्तु अंतर्रात्मा की आवाज और जीवन का अनुभव बहुत कुछ बता देता है। ऐसे लोगों को आदिम समाज के विकास के लिए आगे आने की जरूरत है।

जिले के 77 श्रद्धालु श्री रामलला दर्शन के लिए रवाना हुए अयोध्या धाम

विधायक किरण देव और कलेक्टर विजय दयाराम के. ने हरी झंडी दिखाकर बस को किया रवाना

जगदलपुर (विश्व परिवार)। राज्य शासन के श्री रामलला दर्शन योजनान्तर्गत जिले के 77 श्रद्धालु मंगलवार को श्री रामलला दर्शन के लिए जय श्रीराम उद्घोष के साथ अयोध्या धाम रवाना हुए। इस मौके पर विधायक जगदलपुर श्री किरणदेव सहित कलेक्टर श्री विजय दयाराम के. और अन्य जनप्रतिनिधियों ने स्थानीय टाऊन हॉल परिसर में हरी झंडी दिखाकर श्रद्धालुओं के बस को रवाना किया। इस दौरान श्रद्धालुओं को श्रीराम अंकित अंग वस्त्र पहनाकर उन्हें श्री रामलला दर्शन हेतु बधाई दी गई।

इस अवसर पर विधायक श्री किरणदेव ने श्रद्धालुओं को श्री रामलला दर्शन हेतु बधाई देते हुए कहा कि वर्षों से भगवान श्रीराम के दर्शन की जो आस मन में थी, वह सपना आज पूरी हो रही है। राज्य सरकार की इस अनूठी योजना से भगवान श्रीराम के दर्शन करने जाने का अवसर सभी श्रद्धालुओं के लिए सौभाग्य है। उन्होंने सभी श्रद्धालुओं को एक-दूसरे का ख्याल रखकर साथ में दर्शन कर सकुशल तीर्थयात्रा की कामना की। इस मौके पर कलेक्टर श्री विजय दयाराम के.ने श्रद्धालुओं की मंगलमय यात्रा की कामना करते हुए कहा कि देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय की मंशानुरूप राज्य शासन की श्री रामलला दर्शन योजनान्तर्गत जिले के 77 श्रद्धालुओं को श्री रामलला दर्शन करने जाने का यह सुअवसर उनकी मन की मुराद को पूरी कर रही है। सभी हंसी-खुशी जाएं और रामलला का दर्शन कर पुण्य कमाकर आएं। कलेक्टर ने बताया कि इस योजनान्तर्गत 87 श्रद्धालुओं के लक्ष्य के विरुद्ध 77 को लाभान्वित किया जा रहा है। इन सभी का स्वास्थ्य सम्बन्धी रिकार्ड पहले ही लिया गया है और यात्रा के पूर्व भी मौके पर स्वास्थ्य जांच किया गया है। उक्त श्रद्धालुओं के सहयोगी भी जा रहे हैं साथ ही प्रशासन द्वारा समुचित देखभाल के लिए कर्मचारियों की नामजद ड्यूटी लगाई गई है। कलेक्टर ने सभी श्रद्धालुओं को सकुशल यात्रा की बधाई देते हुए कोई भी दिक्कत होने पर अपने सहयोगी एवं कर्मचारियों से तुरंत सम्पर्क करने का आग्रह किया। इस दौरान अवगत कराया गया कि जिले के इन श्रद्धालुओं का जत्था बस्तर एवं दुर्ग संभाग के श्रद्धालुओं के साथ दुर्ग रेलवे स्टेशन से विशेष ट्रेन के जरिए सीधे अयोध्या धाम प्रस्थान करेगा। टाऊन हॉल में श्रद्धालुओं को रवाना करने के अवसर पर स्थानीय जनप्रतिनिधियों सहित सीईओ जिला पंचायत श्री प्रकाश सर्वे तथा अन्य अधिकारी और गणमान्य नागरिक मौजूद थे।

डॉ. नरेंद्र कुमार जैन टीकमगढ़ ज्ञानोदय पुरस्कार-2023 से हुए सम्मानित

इंदौर (विश्व परिवार)। श्रमण संस्कृति के इतिहास एवं पुरातत्व के क्षेत्र में सक्रिय संस्था ज्ञानोदय फाउंडेशन इंदौर द्वारा जाल सभागृह में पंचम सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इसमें डॉ. नरेंद्र कुमार जैन जी टीकमगढ़ को उनकी कृति दक्षिण पूर्व एशिया की विलुप्त आर्हत संस्कृति के लिए ज्ञानोदय पुरस्कार 2023 से पुरस्कृत किया गया।

पिछले पांच वर्षों से जैन इतिहास के संबंध में शोध परक लिखित, प्रकाशित अप्रकाशित कृति पर विद्वान लेखक को कुंद कुंद ज्ञानपीठ द्वारा प्रवर्तित एवं ज्ञानोदय फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित ज्ञानोदय पुरस्कार प्रदान किया जाता है। इस बार वर्ष 2022 के पुरस्कार के लिए चयनित विद्वान डॉ निर्मल कुमार जी जैन विदिशा को उनकी कृति भारतीय इतिहास में श्रमण संस्कृति का योगदान के लिए एवं वर्ष 2023 के पुरस्कार के लिए सुप्रसिद्ध जैन मनीषी डॉ. नरेंद्र कुमार जी जैन टीकमगढ़ को उनकी कृति दक्षिण पूर्व एशिया की विलुप्त आर्हत संस्कृति के लिए पुरस्कृत किया गया। ऋषभ देव गौरव न्यास के सम्मान समारोह के प्रथम सत्र में मुख्य अतिथि हुकुमचंद सांवला, विशिष्ट अतिथि न्यायमूर्ति अभय गोहिल एवं समारोह की अध्यक्ष देवी अहिल्या विश्व विद्यालय इंदौर की कुलपति डॉ. रेणु जैन ने शॉल, श्रीफल, प्रशस्ति पत्र एवं ?21000 की पुरस्कार राशि से सम्मानित किया। संचालन डॉ अनुपम जैन इंदौर ने किया। इस उपलब्धि पर उन्हें अनेक विद्वानों, शुभचिंतकों ने हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं प्रेषित की है। **-डॉ. सुनील जैन संचय**

राजनांदगांव रियासत का इतिहास पुस्तक का विमोचन

रायपुर (आरएनएस)। विधानसभा अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने अपने निवास मौली श्री विहार रायपुर में कल शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव के इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. शैलेंद्र सिंह की 'राजनांदगांव रियासत का इतिहास' नामक पुस्तक का विमोचन किया गया। इस पुस्तक में राजनांदगांव रियासत के राजाओं के कार्यकाल, उनका प्रशासन, उनके समय के सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति, शिक्षा, साहित्यिक, धार्मिक स्थिति का विस्तृत विवरण दिया गया है। अध्ययन पब्लिशर्स नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित 'राजनांदगांव रियासत का इतिहास' नामक पुस्तक का विमोचन अवसर पर छत्तीसगढ़ के वरिष्ठ इतिहासकार डॉ-रमेंद्रनाथ मिश्र भी उपस्थित थे। उन्होंने कहा कि यह पुस्तक शोधार्थियों, इतिहास में रुचि रखने वालों तथा जनता के लिए काफी उपयोगी होगा। साथ ही राजनांदगांव रियासत में होने वाले राष्ट्रीय आंदोलन का प्रभाव, मील मजदूर आंदोलन और ठाकुर प्यारेलाल सिंह का योगदान, जंगल सत्याग्रह के साथ-साथ स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का जीवन परिचय का उल्लेख कया गया है। इस पुस्तक के प्रकाशन पर डॉ. रमन सिंह ने डॉ. शैलेंद्र सिंह को बधाई दी तथा कहा कि इससे राजनांदगांव रियासत की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक जानकारी इतिहास के विद्यार्थियों के साथ-साथ छत्तीसगढ के लोगों को मिलेगा।

चिंतन रूपक : बिलखते बीज की सुनें किलकारी

सुबह -सुबह घूमने निकला हुआ था। ठंडी ठंडी हवा चल रही थी। बारिश की बूंदें टपक कर थम गई थीं।मौसम मस्त मनमोहक हो चला था। वातावरण में विभिन्न किस्म के फूलों की खुशबू समाई हुई थी।

तभी घनी झाड़ियों के ओट से किसी नवजात शिशु के सिसकने की आवाज आई।जिसे सुनकर लगा इतनी सुबह सुबह कोई बच्चा ऐसे रोड के आसपास घनी झाड़ियों की ओट से क्यों रो रहा होगा? पास जाकर देखा तो सफेद कपड़े में लिपटा एक नवजात शिशु रो रहा था।

मैं कुछ सोच पता उसके पहले ही कोई सेवाभावी संस्थान के लोग आए नवजात शिशु को उठाकर मातृछाया - अस्पताल ले गए।मैं अनमने मन से वहां से आगे बढ़ चला। रास्ते में मुझे उस लावारिस अबोध शिशु का चेहरा बार-बार दिख रहा था।उसका रूदन मेरे हृदय को हथोड़े की भांति ठोक रहा था।

उसके ख्यालों में खोया हुआ मैं धीमें धीमें आगे बढ़ रहा था।तभी राह में पड़े किसी चीज से मेरा बायां पैर टकरा गया। मैंने देखा आम की एक गुठली से मेरा पैर टकराया है। गुठली को देखकर मुझे लगा यह भी तो उस लावारिस शिशु की तरह ही है।यह भी तो अपने मातृवृक्ष से बिलग कर बिलख रहा होगा।ऐसे विचारों में खोए हुए मैंने बड़े प्यार से आम की गुठली को उठाया और अविलंब उसे सुरक्षित जीवन देने का निर्णय लेकर तेजी से कदम बढ़ाते हुए घर पहुंचा।

घर के आंगन में गड्ढे खोदकर उस गुठली को जमीन में रोप दिया। मुझे लगा मानो मैंने उसे धरती माता को सौंप दिया। उस वक्त ऐसा लगा जैसे गुठली का रोना एकाएक बंद हो गया है। मां से बिछड़े हुए किसी बिलखते शिशु को पुन: माता की गोद मिल गया है और वह गदगद होकर किलकारी भर रहा है।

बरसात के मौसम में हमें यही काम करने के लिए आगे आना चाहिए। रास्ते में पड़ी हुई गुठलियों को अथवा घर में खाए आम जामुन जैसे फलों की गुठलियों को यहां वहां फेंकने के बजाय सुरक्षित स्थान पर रोप देना चाहिए। उसके लालन-पालन पोषण का ध्यान चाहिए। ऐसा करके निसंदेह आप ऐसा पुण्य काम करेंगे जिससे एक बिछड़े हुए बच्चे को उसकी मां मिल जाती है। बच्चे को खोई हुई एक मां को उसका बच्चा मिल जाता है।

तो चलिए...आज अभी ऐसा करने का संकल्प लेते हुए मनन करें किसी विद्वान की लिखीं इन पंक्तियों को-
कमसिन उम्र में हुई है ओ बेवा,
कैसे मुमकिन है कि उसकी चूड़ियां तोड़ दें,
खेत की बात करते अघाते नहीं हैं हम,
चलो मिलकर एक क्यारी ही गोड़ दें।

-विजय मिश्रा अमित, रायपुर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर शनिवार 29 जून 2024

संक्षिप्त समाचार

आंधी तूफान से उड़ गयी थी ग्राम डूमाम के स्कूल की छत

दंतेवाड़ा(विश्व परिवार)। ग्राम पंचायत संस्थाएं अगर सामाजिक दायित्वों का तत्परता से वहन करें तो ग्राम के छोटी बड़ी समस्याओं का हल किया जा सकता है। ऐसा ही वाकया विकासखण्ड दंतेवाड़ा के ग्राम डूमाम में देखने में आया। विगत दिवस आंधी तूफान के चलते ग्राम की नवीन पूर्व माध्यमिक शाला की छत पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई थी और आगामी शाला प्रवेश उत्सव पर प्रश्नचिन्ह लग गया था। और स्थानीय बच्चों की पढ़ाई प्रभावित होने की पूरी संभावना थी। परन्तु डुमाम ग्राम पंचायत के संज्ञान में आते ही यहां की सरपंच श्रीमती मनबती शोरी एवं सचिव श्री शंकरलाल कश्यप ने बच्चों की पढ़ाई की समस्या को समझते हुए तत्परता से उक्त स्कूल के छत का नवनिर्माण करवाया और तो और उन्होंने स्वयं ही स्कूल की मरम्मत के लिए आगे आकर कार्य भी किया। इस प्रकार 26 जून से प्रारंभ होने के पूर्व ही पूरे स्कूल छत का नये सिरे से निर्माण हुआ। अब ग्राम डूमाम के स्कूली बच्चें निश्चित होकर खुशी-खुशी स्कूल जा सकते है।और उनकी पढ़ाई प्रभावित नहीं होगी। यह सार्थक पहल वास्तव में अन्य ग्राम पंचायतों के साथ-साथ आमजनो के लिए भी प्रेरणादायक है।

सर्विस राइफल से जवान ने खुद को मारी गोली

बीजापुर(विश्व परिवार)। जिले के भोपालपटनम तहसील के रामपुर स्थित सीएएफ केम्प में जवान ने सर्विस राइफल से खुद को गोली मारकर आत्महत्या करने का प्रयास किया है। घटना के बाद जवान की स्थिति गंभीर बताई जा रही है। मिली जानकारी के अनुसार रामपुरम सीएएफ केम्प में पदस्थ जवान मनोज दिनकर ने सर्विस राइफल से खुद को गोली मार लिया है। अचानक गोली चलने की आवाज से केम्प में हड़कंप मच गया, जिसके बाद साथी जवानों ने गंभीर रूप से घायल जवान को तत्काल भोपालपटनम सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया। जहां प्राथमिक उपचार के बाद बीजापुर जिला चिकित्सालय रिफर किया गया, जहां जवान का उपचार जारी है। जवान द्वारा खुद को गोली मारने का कारण अज्ञात है पुलिस जाँच में जुटी है।

हिट एंड रन के मामलों में बैठक का हुआ आयोजन

दंतेवाड़ा(विश्व परिवार)। आज दिनांक 27 जून को सर्वोच्च न्यायालय के रिट पिटिशन क्रमांक 295,2012 एस. राजसीकरन विरुद्ध यूनियन ऑफ इंडिया में पारित आदेश दिनांक 12.01.2024 के पालन में ''सालसा'' तथा प्रधान जिला न्यायाधीश श्री विजय कुमार होता के निर्देशानुसार, सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण श्रीमती अपूर्वा दांगी द्वारा मॉनिटरिंग कमेटी के नामित सदस्यों के साथ बैठक लिया गया। बैठक में हिट एंड रन के संबंध में जिला दंतेवाड़ा, सुकमा एवं बीजापुर के अज्ञात वाहनों से सड़क दुर्घटनाओं से कई व्यक्ति की मृत्यु या घायल हो जाने पर पीड़ित पक्षकार की ओर से क्लेम ''कम्पनसेशन'' में क्षतिपूर्ति के लिए आवेदन पेश कराए जाने की प्रक्रिया का पालन सुनिश्चित करने एवं एक्सीडेंट के परिणामस्वरूप हुई मृत्यु या गंभीर चोट के लिए ''कम्पनसेशन'' निर्धारित करने और पीड़ित पक्ष को क्षतिपूर्ति प्रदान करने के लिए आवेदन पुलिस थाना एवं यातायात परिवहन विभाग से एफ .आई.आर. से संबंधित दस्तावेज तैयार कर एस. डी. एम. के समक्ष आवेदन प्रस्तुत कर नियत समय में कार्यवाही कर मुआवजा राशि दिलाए जाने हेतु संबंधितों को निर्देश दिया गया। उक्त बैठक में दावा जांच अधिकारी की ओर से नायब तहसीलदार गरिमा प्रधान, उप पुलिस अधीक्षक श्रीमती आशा सेन दंतेवाड़ा श्री अमित देवांगन सुकमा एवं श्री विनीत साहू बीजापुर से उपस्थित हुए।

जिले के बाल संप्रेक्षण गृह से फरार हुए दो अपचारी बालक

कोरबा(विश्व परिवार)। कोरबा जिले के रिसदी चौक पर संचालित बाल संप्रेक्षण गृह से दो अपचारी बालक फरार हो गए है। बताया जा रहा हैं की ड्युटी पर तैनात नगर सेना के जवानों को चकमा देकर दोनों फरार हो गए हैं। इस मामले में जवानों की लापरवाही भी सामने आने की बात कही जा रही हैं। अपचारी बालकों के भागने के बाद विभाग में हड़कंप की स्थिति देखी जा रही है। मारपीट और चोरी के मामले में दो अपचारी बालक बाल संप्रेक्षण गृह में थे, जो नवागढ़ और बलौदाबाजार के निवासी बताये जा रहे हैं। उक्त घटना की जानकारी सिविल लाईन पुलिस को दे दी गई है वहीं महिला और बाल विकास के अधिकारी भी मौके पर पहुंच गए है। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक नेहा वर्मा ने बताया, कि संबंधित विभाग को सूचना दे दी गई है और आगे की जांच जारी है।

जिले के सभी स्कूलों में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया शाला प्रवेश उत्सव

जनप्रतिनिधियों ने नवप्रवेशी बच्चों को रोली-टीका लगाकर किया स्वागत

सुकमा(विश्व परिवार)। राज्य शासन के निर्देशानुसार एवं कलेक्टर श्री हरिस. एस के मार्गदशन में नए शिक्षा सत्र की शुरुआत को एक उत्सव के रूप में मनाते हुए आज बुधवार को जिले के समस्त स्कूलों में शाला प्रवेश उत्सव कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। इसी कड़ी में सुकमा के प्राथमिक, माध्यमिक विद्यालय सहित सेजेस हिंदी माध्यम हायर सेकेण्डरी स्कूल झापरा में मुख्य अतिथि के रूप में जनप्रतिनिधि श्री धनीराम बारसे संकुल श्रोत में आयोजित शाला प्रवेशोत्सव कार्यक्रम में शामिल हुए। स्कूल खुलने के बाद बच्चों में उत्साह और खुशी दिखी। इस अवसर पर जनप्रतिनिधियों ने बच्चों को स्कूलों में रोली-टीका लगाने सहित माला पहनाकर और मिठाई खिलाकर स्वागत किया । जहां बच्चे उत्साह के साथ शाला में प्रवेश किए। इस दौरान उन्होंने नि:शुल्क किताब और स्कूल गणवेश भेंट किया गया। जिला स्तर पर शाला प्रवेश उत्सव कार्यक्रम में बच्चे उत्साहित नजर आए। यहां बच्चों ने गीत-संगीत के माध्यम से शाला प्रवेश उत्सव का आनंद लिया, साथ ही स्कूल में विभिन्न प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जिला पंचायत सदस्य माड़े बारसे, श्री डमरूराम नाग उपाध्यक्ष जनपद पंचायत सुकमा एवं अन्य जनप्रतिनिधिगण सहित जिला शिक्षा अधिकारी श्री जीआर मंडावी, शिक्षकगण और बच्चों के माता-पिता एवं पालक ग्रामीण थे। कार्यक्रम में श्री धनीराम बारसे ने स्कूली बच्चों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आज शाला प्रवेश उत्सव में शामिल बच्चे उत्साहित हैं कि अब उन्हें पढ़ने के लिए नियमित तौर पर स्कूल आना है। शाला प्रवेशोत्सव से बच्चों के मन में उत्साह का संचार होता है। स्कूल ही बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए एक समुचित वातावरण प्रदान करता है। उन्होंने कहा की राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत बच्चों की शत-प्रतिशत उपस्थिति सुनिश्चित करना है, समूह के बच्चों को समुचित शिक्षा प्रदान किया जाना है, उस दृष्टिकोण से सभी शालाओं में बुनियादी सुविधा एवं शिक्षकों की उपलब्धता सुनिश्चित करना है। शिक्षा के राह में आने वाली बाधा को सभी मिलकर दूर करेंगें। देश में शिक्षा के क्षेत्र में समस्त अधोसंरचनाएं और सुविधाओं का विकास सरकार की पहली प्राथमिकता है, इस महाअभियान में हर किसी का सहयोग सर्वमान्य होगा, हम अपने बच्चों का भविष्य खूबसूरती से सवारेंगें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लक्ष्यों को पाने हम सभी प्रयास करेंगे और इस प्रवेश उत्सव के माध्यम से अपने-अपने क्षेत्र में सुविधानुसार एवं शत-प्रतिशत बच्चों को विद्यालय में प्रवेश दिलाएंगे। शाला प्रवेश उत्सव के अवसर पर जनप्रतिनिधियों के द्वारा बच्चों एवं पालकों को न्योता भोज कराया गया।

राज्य के सभी न्यायिक अधिकारी और कर्मचारियों को सर्वसुविधा युक्त आवास उपलब्ध हो : मुख्य न्यायाधीश रमेश सिन्हा

कांकेर(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश श्री रमेश सिन्हा ने आज सिंगारभाट एवं पखांजूर में न्यायिक कर्मचारियों के लिए नव निर्मित निवास गृहों का वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से लोकार्पण किया। मुख्य न्यायाधिपति श्री सिन्हा ने अपने उद्बोधन में कर्मचारियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि जितना सुन्दर व साफसुथरा आवास गृह उनके लिए उपलब्ध कराया जा रहा है, वह उसे निवास के दौरान वैसा ही रखें। मुख्य न्यायाधिपति ने कहा कि राज्य के न्यायालयों को बुनियादी ढांचा प्रदान करने की पहल की गई है, जिसके तारतम्य में यह लोकार्पण किया गया है। उन्होंने कहा कि जिला मजिस्ट्रेट यह सुनिश्चित करें कि नवनिर्मित न्यायिक आवासीय मकानों में सभी आवश्यक सुविधाए हों और उनका कार्य गुणवत्तापूर्ण हो। मुख्य न्यायाधिपति के साथ विशिष्ट अतिथि के रूप में छ.ग. उच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधीश एवं जिला उत्तर बस्तर कांकेर के पोर्टफोलियो न्यायाधीश श्री संजय एस. अग्रवाल भी उपस्थित थे। कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री आनंद कुमार ध्रुव ने मुख्य न्यायाधीश श्री रमेश सिन्हा एवं न्यायाधीश श्री संजय एस अग्रवाल का स्वागत करते हुए सिंगारमाट कांकेर एवं पखांजुर में नवनिर्मित सर्व सुविधा युक्त रहवासी कालोनी की सौगात देने के लिए कृतज्ञता व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश ने संबोधन में बताया कि सिंगारभाट कांकेर में न्यायिक कर्मचारियों के लिए 88 मकान बना है एवं पखांजुर में कुल 11 मकान बना है। प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश ने कहा कि मुख्य न्यायाधिपति ने अपने दूरदृष्टि एवं कुशल नेतृत्व से छत्तीसगढ़ के सुदूर जिला एवं तहसील का निरीक्षण कर अपनी दूरदर्शिता का परिचय कराया है और अधोसंरचना के क्षेत्र में महत्वपूर्ण आधार शिला रखा है। लोकार्पण के इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक श्री आई.के. एलेसेला, समस्त न्यायाधीशगण, अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष एवं अधिवक्तागण, न्यायिक कर्मचारीगण, लोक निर्माण विभाग के अधिकारी कर्मचारीगण उपस्थित थे।

श्रीरामलला दर्शन योजना रू श्रद्धालु अयोध्या धाम के लिए रवाना

सुकमा(विश्व परिवार)। श्रीरामलला दर्शन योजना के तहत जिले के 23 श्रद्धालु अयोध्या में श्री रामलला का दर्शन करेंगे। जनप्रतिनिधी श्री धनीराम बारसे ने मंगलवार को बस को हरी झंडी दिखाकर दुर्ग रेलवे स्टेशन के लिए रवाना किया। जहां से सुबह श्रद्धालुजन स्पेशल ट्रेन में बैठकर अयोध्या के लिए प्रस्थान किया। श्री बारसे ने श्रीरामलला दर्शन के लिए बधाई एवं शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ देश का पहला राज्य है, जहां की जनता को सरकारी खर्च से अयोध्या में श्रीरामलला का दर्शन कराया जाएगा। उन्हें यात्रा के दौरान सभी आवश्यक सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जाएगी। इस अवसर पर जनप्रतिनिधिगण एवम् संयुक्त कलेक्टर श्री सूरज कश्यप, सीएमओ सुकमा श्री एचआर गोंदे सहित नगर पालिक परिषद् अधिकारी कर्मचारीगण उपस्थित थे। जिले के 23 तीर्थयात्रियों के लिए चयनित तीर्थयात्रियों को दुर्ग रेलवे स्टेशन से स्पेशल ट्रेन द्वारा श्री रामलला दर्शन (अयोध्या धाम) की यात्रा के लिए रवाना हुए तथा यात्रा पश्चात तीर्थयात्रियों की 29 जून 2024 को देर रात रेलवे स्टेशन पर वापसी होगी। यात्रियों की सुविधा के लिए सहायक उप निरीक्षक श्री चंदू लाल छेदावी की अनुरक्षक (एस्कार्ट) के रूप में ड्यूटी लगाई गई है। श्री श्री चंदू लाल का मोबाईल नंबर 94060-03527 है। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में प्रदेश सरकार बड़ी तेजी से मोदी जी की गारंटी को पूरा करने का काम कर रही है।

हथकरघा से जुड़कर आत्मनिर्भर बनेगी स्व सहायता समूह की दीदियां

दंतेवाड़ा(विश्व परिवार)। जिला प्रशासन के द्वारा स्व सहायता समूह की दीदियों को आत्मनिर्भर बनाने का हर संभव प्रयास किया जा रहा है और उन्हे स्वरोजगार के ऐसे-ऐसे क्षेत्र उपलब्ध कराये जा रहे जिसको पहले सोचा नहीं गया था। जिला प्रशासन से जुड़कर से इन दीदियों ने आत्मनिर्भर बनने के साथ-साथ अपने ही नहीं बल्कि पूरे परिवार की जिम्मेदारी भी संभाल रही है। इस क्रम में जिले में हथकरघा बुनकर इकाई की स्थापना की जा रही है, जिसमें गाँव के महिला स्व सहायता समूह तथा गाँव के युवा बेरोजगार युवाओं को रोजगार का सुनहरा अवसर मिल रहा है। इसके तहत दंतेवाड़ा विकासखंड के ग्राम पंचायत बालपेट के भैरमबंद, धुरली गाँव के समूह की 21 दीदियाँ तथा इच्छुक युवा वर्गों को चार माह का बुनकर का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। प्रशिक्षण के दौरान सभी हितग्राहियों को प्रोत्साहन राशि के रूप में प्रत्येक व्यक्ति को 3 तीन हजार रूपये भी दिया जायेगा। इसके अलावा प्रशिक्षण के उपरांत इन सभी को 10 से 15 हजार रुपये प्रति व्यक्ति प्रति माह कमाने का मौका भी मिलेगा। इस प्रकार अब ग्रामीण महिलाएं किसी से कम नहीं है। अब वे हर क्षेत्र में अपने आपको साबित कर रही है। महिलाओं को आगे बढ़ाने में केंद्र सरकार एवं राज्य सरकार बहुत सी योजनाएं चलाई जा रही है, इनमें लखपति दीदी योजना प्रमुख है योजना के अंतर्गत ही इन्हे हथकरघा में प्रशिक्षित किया जा रहा है।

खरीफसीजन की तैयारी के संबंध में जैविक कृषकों से कलेक्टर मयंक ने की चर्चा

सही तकनीक और उचित रणनीति से जैविक कृषि को देवें नई दिशा, प्रशासन करेगा सहयोग- कलेक्टर

दंतेवाड़ा(विश्व परिवार)। दन्तेवाड़ा जिला जैविक कृषि के क्षेत्र में जैविक कृषि के क्षेत्र में अग्रणी जिला है, और जिले के कृषकों ने इसे जैविक कृषि जिला बनाने में प्रमुख भूमिका निभाई है। इस क्रम में कलेक्टर श्री मयंक चतुर्वेदी ने द्वारा आज जिले के स्थानीय बाजार शेड में भूमगादी एवं जैविक कृषि से जुड़े कृषकों से खरीफ सीजन एवं जैविक खेती के बारे विस्तार पूर्वक चर्चा करते हुए उनकी मांग और समस्याओं को सुना। इस दौरान कृषकों और कलेक्टर के मध्य देशी किस्म के बीज के किये जा रहे उपयोग, जैविक खाद, दवा, श्रीविधि एवं लाइन विधि से बुआई बिजामृत, और गोमूत्र के उपयोग के अलावा कृषकों हेतु पशु शेड के निर्माण, फसल की मार्केटिंग, मूल्य, स्थानीय बाजारों में जैविक फसलों के लिए आरक्षित स्थान के संबंध में विस्तार पूर्वक विचार विमर्श हुआ। इस मौके पर कलेक्टर ने तारबाड़ी फेंसिंग के लिए प्रशासन के सहयोग की भी बात कही उन्होंने यह भी कहा कि जल की आवश्यकता बारिश के दिनो में वर्षा जल के संचयन के लिए कृषक जगह का चयन करें ताकि मानसून के पश्चात इन स्थानों में निर्माण कार्य कराये जा सकें। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि उन्नतशील कृषकों के कृषि क्षेत्र में कृषकों के भ्रमण एवं स्थल परीक्षण की भी व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि वे नई कृषि विधियों से परिचित हो। इस संबंध में कृषक कृषि विभाग से संपर्क कर उन्हें अवगत कराये। इस मौके पर जैविक कृषक से जुड़े ग्राम कासोली के श्री मधुसूदन ठाकुर, तथा हीरानार के श्री लुदरू ने भी जैविक कृषि को बढ़ावा देने के संबंध में अपने विचार व्यक्त किये।

मिशन वात्सल्य योजना एवं सखी के तहत संयुक्त बैठक संपन्न

सुकमा(विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री हरिस.एस के अध्यक्षता में मंगलवार को मिशन वात्सल्य योजना के तहत जिला बाल कल्याण एवं सरंक्षण समिति एवं अन्य समितियों की संयुक्त बैठक कलेक्ट्रेट कार्यालय के सभाकक्ष में आयोजित की गई। कलेक्टर श्री हरिस.एस ने मिशन वात्सलय योजना अंतर्गत, बाल कल्याण समिति और किशोर न्याय बोर्ड सहित अन्य समिति की कार्यों की विस्तार से समीक्षा की। इस दौरान उन्होंने वित्तीय वर्ष 23-24 एवं वित्तीय वर्ष 24-25 के प्रथम त्रैमास में बाल कल्याण समिति एवं किशोर न्याय बोर्ड के समक्ष लंबित,प्रस्तुत एवं निराकृत प्रकरणों की समीक्षा की तथा बाल कल्याण समिति में लंबित 27 प्रकरणों का शीघ्र निराकरण करने के निर्देश दिए। बैठक में मिशन वात्सलय योजना अंतर्गत वैधानिक निकायो में रिक्त पदों में पद पूर्ति की स्थिति, जिला जेल के निरीक्षण की स्थिति, गुमशुदा बालको के संबंध में कार्यवाही, बाल देखरेख संस्था के निरीक्षण की स्थिति,विभिन्न बालगृहो में जिले के निवासरत बालको की वर्तमान स्थिति, बाल देखरेख संस्थाओं में निवासरत बालक एवं बालिकाओं की जाति एवं निवास प्रमाण पत्र की की वर्तमान स्थिति, बाल देखरेख संस्थाओं में निवासरत् बच्चों के विद्यालय में दाखिला की स्थिति प्रवर्तकता योजना, पश्चातवर्ती देख रेख योजना, दत्तक ग्रहण, बाल श्रम एवं सड़क जैसी परीस्थितियो में रह रहे बालकों के चिन्हांकन की स्थिति, समितियों के पुनर्गठन, वार्षिक कार्य योजना एवं राष्ट्रिय बाल अधिकार संरक्षण आयोग नई दिल्ली के निर्देशानुसार एक युद्ध नशे के विरुद्ध कार्य योजना पर कार्यवाही की समीक्षा की गई। साथ ही सखी वन स्टाप सेंटर की समीक्षा के दौरान अप्रैल 2023 से जून 2024 तक दर्ज प्रकरण, निराकरण, लंबित एवं दिए गए आश्रय, सखी केंद्र के नवीन भवन, रिक्त पदों की पूर्ति के संबंध में चर्चा की गई। इस अवसर पर मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सुश्री नम्रता जैन,संयुक्त कलेक्टर श्री सूरज कश्यप, डीपीओ श्रीमती संजुला शर्मा,डिप्टी कलेक्टर सुश्री मधु तेता, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी श्री महेश शांडिल्य, जिला शिक्षा अधिकारी श्री जी आर मंडावी,श्रम पदाधिकारी श्रीमती सुनिता जोशी, बाल कल्याण समिति एवं किशोर न्याय बोर्ड के सदस्य , जिला महिला एवं बाल विकास अधिकारी सुश्री बिस्मिता पाटले, जिला बाल संरक्षण अधिकारी श्री जितेन्द्र सिंह सहित, महिला संरक्षण अधिकारी श्रीमती प्रमिला सिंह,सखी केंद्र प्रशासक सुश्री दलिमा गौर एवं विभाग के अन्य अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

खेल-व्यापार

रायपुर शनिवार 29 जून 2024

व्यापार समाचार

भारत की डेटा सेंटर क्षमता में 5 गुना का हो सकता है इजाफा : रिपोर्ट

नई दिल्ली(एजेंसी)। डिजिटाइजेशन से डेटा के बढ़ते उपयोग के कारण भारत के डेटा सेंटर की क्षमता में आने वाले साल में 5 गुना का इजाफा हो सकता है। गुरुवार को जारी की गई एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है। रिपोर्ट में बताया गया कि देश को नियोजित 2.32 गीगावाट की डेटा सेंटर क्षमता के अलावा 1.7 से लेकर 3.6 गीगावाट के अतिरिक्त डेटा सेंटर की आवश्यकता है। कुशमैन और वेकफील्ड की रिपोर्ट में अनुमान जताया गया है कि भारत 2028 तक प्रति वर्ष 464 मेगावाट की कोलोकेशन डेटा सेंटर क्षमता जोड़ेगा। 2023 की दूसरी छमाही तक देश के शीर्ष सात शहरों में कोलोकेशन डेटा सेंटर क्षमता 977 मेगावाट थी। रिपोर्ट में आगे कहा गया कि 258 मेगावाट की कोलोकेशन डेटा सेंटर क्षमता अकेले 2023 में ही बनाई गई। वहीं, 2022 में कुल 126 मेगावाट की डेटा सेंटर क्षमता जोड़ी गई थी। ऐसे में पिछले वर्ष के मुकाबले नई डेटा सेंटर बनाने की रफ्तार में 105 प्रतिशत का इजाफा हुआ है। डेटा सेंटर क्षमता के तेजी से बढ़ने की वजह डेटा आधारित टेक्नोलॉजी का उपयोग, डिजिटलीकरण का तेजी से बढ़ना और बड़े स्तर पर डेटा की खपत को माना जा रहा है। भारत में डेटा की खपत में पिछले कुछ वर्षों में काफी बढ़त हुई है। एक आम भारतीय मोबाइल फोन औसत 19 जीबी से ज्यादा की डेटा खपत करता है। यह पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा है। रिपोर्ट में कहा गया कि भारत में कोलोकेशन डेटा सेंटर्स और क्लाउड फर्म की ओर से चलाए जाने वाले डेटा सेंटर दोनों में बढ़ोतरी हो रही है।

5जी स्पेक्ट्रम की नीलामी में लगी 11,000 करोड़ रुपये की बोली, भारती एयरटेल सबसे आगे

नई दिल्ली(एजेंसी)। 5जी स्पेक्ट्रम की नीलामी में 11,000 करोड़ रुपये से ज्यादा की बोली लगी। इसमें भारती एयरटेल सबसे बड़ी कंपनी के रूप में उभरी है। सरकार की ओर से किए जा रहे 96,000 करोड़ रुपये के स्पेक्ट्रम की नीलामी में सबसे ज्यादा मांग 900 मेगाहर्ट्ज और 1800 मेगाहर्ट्ज के स्पेक्ट्रम की रही। टेलीकॉम एनालिस्ट पराग कर के मुताबिक 900 मेगाहर्ट्ज के स्पेक्ट्रम के लिए 6,985 करोड़ रुपये की बोली लगी है और वहीं 1800 मेगाहर्ट्ज के लिए 3,579 करोड़ रुपये की बोली लगी है। पराग कर ने अपनी सोशल मीडिया पोस्ट में बताया कि 2,100 मेगाहर्ट्ज में भारती एयरटेल द्वारा 545 करोड़ रुपये की एकमात्र बोली लगाई गई है। वहीं, वोडाफोन आइडिया (वीआई) 2500 मेगाहर्ट्ज में बोली लगाने वाली एकमात्र कंपनी थी। टेलीकॉम डिपार्टमेंट द्वारा इस नीलामी में 800 मेगाहर्ट्ज, 900 मेगाहर्ट्ज, 1,800 मेगाहर्ट्ज, 2,100 मेगाहर्ट्ज, 2,300 मेगाहर्ट्ज, 2,500 मेगाहर्ट्ज, 3,300 मेगाहर्ट्ज और 26 गीगाहर्ट्ज के बैंड नीलामी के लिए रखे गए थे। इस नीलामी प्रक्रिया में भारती एयरटेल, वोडाफोन आइडिया और रिलायंस जियो ने भाग लिया।

भारत में 10 में से 8 एमएसएमई बना रहे 2025 में क्लाउड पर खर्च बढ़ाने की योजना

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारत में हर 10 में से 8 या 81 प्रतिशत सूक्ष्म, लघु और मध्यम इकाइयां (एमएसएमई) 2025 में अपना क्लाउड पर खर्च में इजाफा कर सकती है। इसकी वजह एमएसएमई द्वारा कस्टमर रिलेशनशिप मैनेजमेंट (सीआरएम), फाइनेंसियल सर्विसेज और बिजनेस इंटेलिजेंस सॉफ्टवेयर में निवेश करना है। गुरुवार को जारी रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है। ग्लोबल टेक्नोलॉजी कंपनी जोहो की ओर से जारी की गई रिपोर्ट में बताया गया कि डिजिटलाइजेशन में एमएसएमई को कई मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। इसमें सॉफ्टवेयर की अधिक लागत, बजट की कमी, एकीकरण और स्किल की कमी शामिल है। देश के विकास में एमएसएमई सेक्टर एक बड़ी भूमिका निभाता है। आने वाले समय में इनकी संख्या 6.3 करोड़ से बढ़कर 7.5 करोड़ पर पहुंचने की उम्मीद है। जोहो के वाइस प्रेसिडेंट मार्केटिंग और कस्टमर एक्सपीरियंस प्रवल सिंह का कहना है कि इस एमएसएमई दिवस पर हम इन इकाइयों की देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का जश्न मनाते हैं। उन्होंने आगे कहा कि एमएसएमई के सामने सबसे बड़ी मुश्किल कारोबार बड़ा करने के लिए सही सॉल्यूशन न होना है। रिपोर्ट में बताया गया कि 73 प्रतिशत एमएसएमई इकाइयां आने वाले 6 महीने में अपने विकास को लेकर आशावादी हैं। एमएसएमई बड़े स्तर पर कारोबार में तीन चुनौतियों का सामना कर रही हैं, जिसमें आर्थिक अनिश्चितता (54 प्रतिशत), महंगाई (44 प्रतिशत) और स्किल लेबर की कमी (33 प्रतिशत) हैं। एमएसएमई का फोकस डिजिटल अनुभव को मजबूत बनाने को लेकर है।

सपाट खुला शेयर बाजार, निफ्टी 23,800 के ऊपर

मुंबई (एजेंसी)। भारतीय शेयर बाजार की गुरुवार को सपाट शुरुआत हुई है। बाजार के ज्यादातर सूचकांक एक सीमित दायरे में कारोबार कर रहे हैं। सुबह 9 .20 बजे तक सेंसेक्स 99 अंक फिसलकर 78,575 और निफ्टी 35 अंक गिरकर 23,834 पर था। बाजार का रुझान सकारात्मक बना हुआ है। एनएसई पर 1,278 शेयर हरे निशान में, जबकि 792 शेयर लाल निशान में हैं। लार्जकैप की अपेक्षा मिडकैप और स्मॉलकैप शेयरों में तेजी है। निफ्टी मिडकैप 100 इंडेक्स 183 अंक या 0.33 प्रतिशत की तेजी के साथ 55,429 और निफ्टी स्मॉलकैप 100 इंडेक्स 35 अंक या 0.20 प्रतिशत की तेजी के 18,334 पर है। सेक्टर के हिसाब से देखें तो फार्मा, रियल्टी और मेटल इंडेक्स में तेजी है। आईटी, फिन सर्विस, एफएमसीजी और पीएसयू बैंक इंडेक्स पर दबाव बना हुआ है। सेंसेक्स पैक में अल्ट्राटेक सीमेंट, जेएसडब्ल्यू स्टील, टाटा स्टील, एनटीपीसी, कोटक महिंद्रा बैंक, बजाज फिनसर्व और बजाज फाइनेंस टॉप गेनर्स हैं। एमएंडएम, टेक महिंद्रा, एलएंडटी, एचसीएल टेक और विप्रो टॉप लूजर्स हैं। एसएएस ऑनलाइन के सीईओ और फाउंडर श्रेय जैन का कहना है कि इस महीने के मध्य में रेंज बाउंड रहने के बाद निफ्टी ने एक ब्रेकआउट दिया है।

इस पाकिस्तानी क्रिकेटर ने पार की बड़बोलेपन की हदें, बोले- अर्शदीप सिंह ने आस्ट्रेलिया के खिलाफ किया बॉल टैम्परिंग का आरोप

नई दिल्ली(एजेंसी)। टी20 विश्व कप 2024 में पहले ही अपनी फ़ज़ीहत करा चुकी पाकिस्तानी टीम एक बार फिर अपने अटपटे बयान को लेकर चर्चा में है। पाकिस्तानी क्रिकेट टीम का 'बड़बोलापन' ना कभी थमा है ना ही थमेगा, और यह हम नहीं कह रहे बल्कि पड़ोसी मुल्क के कुछ पूर्व क्रिकेटर इसे खुद साबित करते हैं। पाकिस्तान की टीम तो पहले ही टी20 विश्व कप 2024 से बाहर हो चुकी है। अब भला यह हार वो इतनी आसानी से कैसे हजम कर सकती है, वो भी तब, जब भारतीय टीम सेमीफाइल में हो और ट्रॉफी जीतने की प्रबल दावेदार हो। शायद इसलिए पाकिस्तान के दिग्गज खिलाड़ी इंजमाम

उल हक ने भारत पर संगीन आरोप लगाया है। इंजमाम ने यह आरोप पाकिस्तान के न्यूज चैनल पर बैठकर लगाया। उन्होंने कहा कि ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मैच में भारतीय टीम ने गेंद के साथ छेड़छाड़ की है। इंजमाम की इन बातों पर शो में बैठे दूसरे गेस्ट और मुल्क के एक और दिग्गज क्रिकेटर सलीम मलिक भी हां में हां मिलाते दिखे। कुल मिलाकर उन्होंने भारत पर बॉल टैम्परिंग जैसा संगीन आरोप लगाया है। इन झूठे आरोपों को लगाकर पाकिस्तान ने एक बार फिर अपना चरित्र दुनिया के सामने रखा है। इंजमाम ने कहा कि मैच के 15वें ओवर में गेंद का रिवर्स स्विंग करना संभव नहीं है, जिससे पता चलता है कि गेंद के साथ 'छेड़छाड़' हुई है। इंजमाम ने पाकिस्तानी न्यूज चैनल 24 न्यूज पर कहा, अर्शदीप सिंह जब 15वां ओवर फेंक रहे थे, तब गेंद रिवर्स स्विंग हो रही थी। इसका मतलब है कि गेंद 12वें या 13वें ओवर तक रिवर्स स्विंग के लिए तैयार थी। अंपायरों को इन चीजों पर नजर रखनी चाहिए। अगर पाकिस्तानी गेंदबाज गेंद को रिवर्स स्विंग कर रहे होते तो यह बड़ा मुद्दा होता। हम रिवर्स स्विंग को अच्छी तरह से जानते हैं और अगर अर्शदीप 15वें ओवर में आकर गेंद को रिवर्स करना शुरू कर सकते हैं, तो इसका मतलब है कि बॉल के साथ छेड़छाड़ हुई है। इस बीच, पूर्व खिलाड़ी सलीम मलिक ने इंजमाम से सहमति जताते हुए कहा कि अधिकारी भारत की बारी में आंखें मूंद लेते हैं। ऑस्ट्रेलिया पर भारत की 26 रन की जीत ने ऑस्ट्रेलियाई टीम को टूर्नामेंट के सुपर 8 चरण से बाहर करने में अहम भूमिका निभाई। इसके बाद अफगानिस्तान ने बांग्लादेश पर जीत के साथ आधिकारिक तौर पर ऑस्ट्रेलिया को टूर्नामेंट से बाहर कर दिया और सेमीफाइनल में अपनी जगह पक्की कर ली। अफ़गानिस्तान को उम्मीद है कि वह देश के इतिहास में पहली बार आईसीसी पुरुष टूर्नामेंट के फ़ाइनल में पहुंचेगा, जब वह पहले सेमीफ़ाइनल में दक्षिण अफ़्रीका से भिड़ेगा। भारत दूसरे सेमीफ़ाइनल में इंग्लैंड से भिड़ेगा, जो 2022 टी20 विश्व कप के सेमीफ़ाइनल का रीमैच होगा, जहां इंग्लैंड ने 10 विकेट से जीत दर्ज की थी।

टॉस हारना सौभाग्य की बात है, आखिर कप्तान मार्करम ने ऐसा क्यों कहा?

तारोबा(एजेंसी)। टी20 विश्व कप 2024 की पहली फाइनलिस्ट टीम दक्षिण अफ्रीका है। सेमीफाइनल में अफगानिस्तान के खिलाफ 9 विकेट की जीत के बाद अफ्रीकी कप्तान एडेन मार्कराम ने एक ऐसा खुलासा किया जिससे टॉस जीतने वाली अफगानिस्तान की टीम का दुख डबल हो जाएगा। इस मुकाबले में अफगानिस्तान ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। लेकिन उनका यह फैसला उस पर भारी पड़ गया और पूरी टीम स्कोर बोर्ड पर 11.5 ओवरों में मात्र 56 रन जोड़कर पवेलियन लौट गई। जवाब में, क्विंटन डी कॉक (5) के शुरुआती विकेट के बावजूद रीजा हेंड्रिक्स (नाबाद

29 रन) और एडेन मार्कराम (नाबाद 23 रन) की मदद से दक्षिण अफ्रीका ने 9 ओवर के अंदर यह लक्ष्य आसानी से हासिल कर लिया, जिससे वे पहली बार पुरुष विश्व कप फाइनल में पहुंच गए। मैच के बाद मार्कराम ने कहा, अच्छा लग रहा है। यह केवल कप्तान ही नहीं है जो आपको यहां तक पहुंचाता है, यह पूरी टीम का प्रयास है। पर्दे के पीछे भी बहुत सारे लोग हैं। टॉस हारना सौभाग्य की बात है, हम भी पहले बल्लेबाजी ही करते। हमने गेंद के साथ शानदार प्रदर्शन किया। इस मैच में गेंदबाज हमारे लिए अविश्वसनीय रहे। बल्लेबाजी के लिए यह पिच चुनौतीपूर्ण थी। हमें थोड़ी किस्मत का साथ मिला और फिर हमने थोड़ी साझेदारी से जीत दर्ज की। जेनसन को मैच का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया। उन्होंने टीम के गेम प्लान की सराहना की और अपने कप्तान की भी प्रशंसा की। तेज गेंदबाज ने कहा, हम सिर्फ अपने गेम प्लान पर फोकस कर रहे थे।

टी20 में सूर्यकुमार यादव की बादशाहत खत्म, नंबर 1 पर पहुंचा यह बल्लेबाज

दुबई(एजेंसी)। भारतीय टीम के स्टार बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव की टी20 रैंकिंग में बादशाहत टूट गई। वेस्टइंडीज में जारी टी20 वर्ल्ड कप में ताबड़तोड़ रन बनाने वाले ट्रेविस हेड ने उन्हें पहले पायदान से खिसका दिया। आईसीसी द्वारा जारी ताजा रैंकिंग में अब पहले पायदान पर हेड काबिज हैं, जबकि सूर्यकुमार नंबर 2 पर हैं। हालांकि दोनों खिलाड़ियों के रेटिंग अंकों में सिर्फ अंकों का ही अंतर है। हेड के पास अब 244 अंक हैं। हालांकि सूर्यकुमार यादव के पास अपना पहला पायदान फिर से हासिल करने का मौका है। क्योंकि भारतीय टीम इस टी20 वर्ल्ड

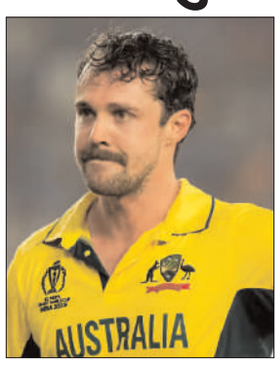

कप के सेमीफाइनल में पहुंच गई है, जबकि ऑस्ट्रेलिया इस टी20 वर्ल्ड कप में अफगानिस्तान और भारत से हार कर बाहर हो चुका है। सूर्यकुमार यादव दिसंबर 2023 से शीर्ष पर थे। हेड ने मौजूदा ञ20 वर्ल्ड कप में शानदार प्रदर्शन की बदौलत नंबर एक रैंकिंग हासिल की। उन्होंने इस टूर्नामेंट में 2 अर्धशतक की मदद से 255 रन बनाए, जिसमें सुपर 8 मुकाबले में भारत के खिलाफ 76 रन की पारी भी शामिल है। हेड सूर्यकुमार (842 अंक) से दो अंक आगे हैं। सूर्यकुमार दूसरे स्थान पर खिसक गए हैं लेकिन उनके पास दोबारा नंबर एक रैंकिंग हासिल करने का मौका है क्योंकि भारत टी20 विश्व कप के सेमीफाइनल में जगह बना चुका है और इस बल्लेबाज को और मौके मिलेंगे। इंग्लैंड के फिल सॉल्ट और पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम तथा मोहम्मद रिजवान भी शीर्ष पांच में शामिल हैं।

बंसल वायर इंडस्ट्रीज लिमिटेड का रु. 7,450 मिलियन का आरंभिक सार्वजनिक निर्गम बुधवार, 3 जुलाई, 2024 को खुलेगा

नईदिल्ली। बंसल वायर इंडस्ट्रीज लिमिटेड (बंसल वायर या कंपनी), इक्विटी शेयरों के अपने आरंभिक सार्वजनिक निर्गम के संबंध में अपनी बोली/निर्गम बुधवार, 3 जुलाई, 2024 को खोलेगी। प्रत्येक अंकित मूल्य रु. 5 इक्विटी शेयरों के कुल निर्गम आकार में रु. 7,450 मिलियन तक का प्रेश इश्यू शामिल है (कुल निर्गम आकार)। एंकर निवेशक बोली की तिथि मंगलवार, 2 जुलाई, 2024 होगी। बोली/निर्गम बुधवार, 3 जुलाई, 2024 को खुलेगा और शुक्रवार, 5 जुलाई, 2024 को बंद होगा। निर्गम का प्राइस बैंड रु. 243 से रु. 256 प्रति इक्विटी शेयर तय किया गया है। न्यूनतम 58 इक्विटी शेयरों के लिए और उसके बाद 58 इक्विटी शेयरों के गुणकों में बोलियां लगाई जा सकती हैं। कंपनी इक्विटी शेयरों के प्रेश इश्यू से प्राप्त शुद्ध आय का उपयोग (ए) हमारी कंपनी द्वारा लिए गए कुछ बकाया उधारों के सभी या हिस्से का पुनर्भुगतान या पूर्व भुगतान करने के लिए करने का प्रस्ताव करती है, जिसका अनुमान रु. 4526.83 मिलियन है; (बी) हमारी सहायक कंपनी में इसके कुछ बकाया उधारों के सभी या हिस्से का पुनर्भुगतान या पूर्व भुगतान करने के लिए निवेश, जिसका अनुमान रु. 937.08 मिलियन है।

एमक्योर फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड के इक्विटी शेयरों का आरंभिक सार्वजनिक निर्गम 03 जुलाई, 2024 को खुलेगा

मुंबई। एमक्योर फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड (कंपनी) बुधवार, 03 जुलाई, 2024 को इक्विटी शेयरों (ऑफ़र) का अपना आरंभिक सार्वजनिक निर्गम खोलने का प्रस्ताव करती है। एंकर निवेशक बिडिंग/ऑफर की अवधि, बिडिंग/ऑफर खुलने की तिथि (मंगलवार, 02 जुलाई, 2024) से एक कार्य दिवस पहले है। बोली/ऑफ़र समापन तिथि शुक्रवार, 05 जुलाई, 2024 को होगी। ऑफ़र का मूल्य बैंड 960 प्रति इक्विटी शेयर से 1008 प्रति इक्विटी शेयर तय किया गया है। न्यूनतम 14 इक्विटी शेयरों और उसके बाद 14 इक्विटी शेयरों के गुणकों के लिए बोलियां लगाई जा सकती हैं। एमक्योर फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड (कंपनी) के 10 अंकित मूल्य वाले इक्विटी शेयरों (इक्विटी शेयर) की आरंभिक सार्वजनिक पेशकश नकद प्रति इक्विटी शेयर (प्रति इक्विटी शेयर के शेयर प्रीमियम सहित) (ऑफ़र मूल्य) पर की जाएगी। कुल मिलाकर मिलियन तक (प्रस्ताव) जिसमें कंपनी द्वारा 10 अंकित मूल्य वाले इक्विटी शेयरों का एक नया निर्गम शामिल है, जो कुल मिलाकर 8,000.00 मिलियन तक है।

एसएमई, एमएसएमई को आगे बढ़ने में मदद कर रहा है फोनपे का भुगतान समाधान

नई दिल्ली(एजेंसी)। विश्व एमएसएमई दिवस हर साल 27 जून को मनाया जाता है। इस मौके पर फोनपे पेमेंट गेटवे (पीजी) ने गुरुवार को भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ को सहारा देने के लिए गहरी प्रतिबद्धता प्रदर्शित की। फोनपे पेमेंट गेटवे ने शेयर किया कि वह पहले से ही टियर 2 शहरों और उससे आगे आधे से अधिक एमएसएमई (सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम) के साथ पीजी समाधान सक्षम करने के लिए काम कर रहा है। मुख्य फोकस रीजनल बिजनेस को सशक्त बनाने पर है। इससे समावेशी विकास को बल मिलेगा और व्यवसायों को तेजी से विस्तार करने में मदद मिलेगी। ज्यादातर पेमेंट गेटवे 2 प्रतिशत का लेनदेन शुल्क लेते हैं। वहीं फोनपे पीजी के पास नए व्यापारियों के लिए फ्री में शामिल होने के लिए एक विशेष प्रस्ताव है। इस प्रस्ताव में कोई छिपा हुआ शुल्क, सेटअप शुल्क या सालाना रखरखाव शुल्क नहीं है। इसके अलावा, फोनपे पीजी भरोसेमंद है। यह व्यापारियों के लिए 100 प्रतिशत अपटाइम सुनिश्चित करता है। यह सक्रिय रूप से डाउनटाइम का पता लगाता है और रियल टाइम में लेनदेन को सुनिश्चित करता है। फोनपे पेमेंट गेटवे और ऑनलाइन मर्चेंट्स के प्रमुख अंकित गौर ने कहा, इस विश्व एमएसएमई दिवस पर, फोनपे पीजी पूरे भारत में एमएसएमई और एसएमई को सशक्त बनाने के लिए अपनी अटूट प्रतिबद्धता दोहराता है। हम टियर 2, टियर 3 शहरों और उससे आगे के व्यवसायों के सामने आने वाली चुनौतियों को समझते हैं। बिना बाधा के पेमेंट समाधान कर और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देकर हम उन्हें नए ग्राहकों और बाजारों तक पहुंचने में सक्षम बना रहे हैं, जो पहले पहुंच से बाहर थे। उन्होंने आगे कहा, हमारे पास ऑनबोर्डिंग के बाद से पहले तीन महीनों के लिए शून्य लेनदेन लागत की एक यूनिक पेशकश है। ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि अधिक से अधिक एसएमई/एमएसएमई भुगतान गेटवे की ओर से दी जाने वाली सुविधा और सुरक्षा को अपना सकें और उसका उपयोग कर सकें। फोनपे पीजी के लिए प्रतिबद्धता पूरे देश में व्यवसायों के लिए विकास क्षमता को अनलॉक करना और अधिक जीवंत राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में योगदान देना है। फोनपे पीजी को व्यापारी भी पसंद करते हैं। यह 100 प्रतिशत सुरक्षित लेनदेन सुनिश्चित करता है।

कार्यालय कार्यपालन अभियंता एवं सदस्य सचिव जिला जल एवं स्वच्छता मिशन लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग, खण्ड– गरियाबंद (छ.ग.)

नि.अ.क्र. :1058/व.ले.लि./का.अ./2024 गरियाबंद, दिनांक: 21.06.2024

संक्षिप्त निविदा आमंत्रण सूचना

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल की ओर से निम्नानुसार कार्य हेतु इच्छुक निविदाकारों/पंजीकृत ट्रेवल एजेंसी से निविदा प्रपत्र "बी" (आयटम दर में) मुहर बंद निविदाए स्पीडपोस्ट/रजिस्टर्ड डाक के माध्यम से आमंत्रित की जाती है।

1. समय सारणी :–

(1)	निविदा हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि	:–	04.07.2024 समय सायं 05.30 बजे तक
(2)	कोरे निविदा प्रपत्र क्रय करने की तिथि	:–	05.07.2024 समय सायं 05.30 बजे तक
(3)	निविदा प्रपत्र प्राप्त होने की अंतिम तिथि	:–	10.07.2024 समय सायं 05.30 बजे तक
(4)	निविदा खोलने की तिथि	:–	11.07.2024 समय सायं 11.30 बजे तक

2. कार्य का विवरण :– जिला गरियाबंद के समस्त विकासखण्डों में जल जीवन मिशन के कार्यो के निरीक्षण हेतु मासिक किराये पर वाहन INNOVA . SCORPIO, MAHINDRA BOLERO वाहन रखने बाबत्।

3. कार्य की समयावधिः– 24 माह, 4. निविदा प्रपत्र का मूल्य रू–300/–

5. वाहन का विवरण :–

स.क्र.	अधिकारी का पदनाम	वाहन का किराया प्रतिमाह	वाहन का प्रकार
01	अध्यक्ष, जिला जल एवं स्वच्छता मिशन, जिला गरियाबंद (छ.ग.)	75000/-	INNOVA
02	कार्यपालन अभियंता एवं सदस्य सचिव, जिला जल एवं स्वच्छता मिशन, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग खण्ड गरियाबंद (छ.ग.)	65000/-	SCORPIO
03	सहायक अभियंता, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग उपखण्ड गरियाबंद, राजिम, देवभोग (छ.ग.)	60000/- (प्रति वाहन)	MAHINDRA BOLERO

6. आवेदन पत्र के साथ चाही गयी अनिवार्य दस्तावेजः– 1. परिवहन विभाग में पंजीकृत आर.सी.बुक की प्रति, 2. फिटनेस प्रमाण पत्र की प्रति, 3. बीमा प्रमाण पत्र की प्रति, 4.पेनकार्ड की प्रति, 5. जी.एस.टी.पंजीयन की प्रति।

यह निविदा सूचना मूल निविदा का एक अंश है। विस्तृत निविदा, शर्तें तथा पूर्ण जानकारी अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में कार्यालयीन समय में देखी जा सकती है।

G-242500590/2

कार्यपालन अभियंता एवं सदस्य सचिव
जिला जल एवं स्वच्छता मिशन
लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग
खण्ड–गरियाबंद (छ.ग.)

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, शनिवार 29 जून 2024

नगर पालिक निगम रायपुर में 1 जुलाई को एमआईसी की बैठक

रायपुर (विसं)। नगर पालिक निगम रायपुर के सचिवालय द्वारा महापौर श्री एजाज ढेबर के आदेशानुसार नगर पालिक निगम रायपुर की मेयर इन काउंसिल एमआईसी की बैठक दिनांक 1 जुलाई 2024 सोमवार को दोपहर 12 बजे महापौर एजाज ढेबर की अध्यक्षता में नगर पालिक निगम मुख्यालय भवन महात्मा गाँधी सदन के तृतीय तल स्थित सभाकक्ष में आहुत की है। उक्त जानकारी नगर पालिक निगम के अपर आयुक्त एवं सचिव विनोद पाण्डेय ने दी है।

सुख-दुख हमने मिलकर बांटे बीते 600 मास

श्री पवन रारा-श्रीमती सरोज रारा के विवाह की स्वर्ण जयंती मनाई गई

रायपुर (विश्व परिवार)। श्री खंडेलवाल दिगंबर जैन मंदिर समिति फाफाडीह के कोषाध्यक्ष, वरिष्ठ समाजसेवी श्री पवन जैन रारा- श्रीमती सरोज रारा के विवाह के 50 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर स्वर्ण जयंती समारोह का आयोजन दिनांक 28 जून, दिन शनिवार, को शहर के जी.ई. रोड स्थित मोती महल पैलेडियम में किया गया जहां उपस्थिति समाज जनों, मित्र समूह, सगे-संबंधियों ने उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएं भेंट कर सम्मानित किया, सभी अतिथियों का स्वागत श्री प्रवीण जैन रारा-श्रीमती निधि रारा ने किया।

दैनिक विश्व परिवार आपके उत्तम सुख शांति एवं समृद्धि की मंगल कामना करता है।

देश के कृषि विकास में कृषि विज्ञान केन्द्रों की महत्वपूर्ण भूमिका : रामविचार नेताम

कृषि मंत्री ने छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश के कृषि विज्ञान केन्द्रों की तीन दिवसीय क्षेत्रीय कार्यशाला का शुभारंभ किया

रायपुर (विश्व परिवार)। कृषि मंत्री श्री रामविचार नेताम ने कहा है कि देश में कृषि के विकास में कृषि वैज्ञानिकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने कहा कि आजादी के पहले देश में भुखमरी की स्थिति थी। आवश्यकता के अनुरूप अनाज का उत्पादन नहीं हो पाता था, जिसके कारण हमें अन्य देशों पर निर्भर रहना पड़ता था। हमारे देश के कृषि वैज्ञानिकों, अनुसंधानकर्ताओं द्वारा नित नई तकनीकों की खोज और उत्पादन में वृद्धि के प्रयास का प्रतिफल है कि आज हमारे पास अन्न का पर्याप्त भंडार है और दूसरे देशों को निर्यात भी करते हैं। उन्होंने कहा कि कृषि विज्ञान केन्द्र कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा विकसित नवीन अनुसंधानों और तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने का कार्य करते हैं और इस तरह कृषि के विकास तथा किसानों की आय बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। मंत्री श्री नेताम आज कृषि महाविद्यालय, रायपुर में आयोजित तीन दिवसीय छत्तीसगढ़-मध्यप्रदेश के कृषि विज्ञान केन्द्रों की 31वीं क्षेत्रीय कार्यशाला' के शुभारंभ समारोह को संबोधित कर रहे थे। कार्यशाला का आयोजन इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान जोन-9, जबलपुर के संयुक्त तत्वावधान में किया जा रहा है। मंत्री श्री नेताम ने इस मौके पर कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा लगायी गयी प्रदर्शनी का अवलोकन किया तथा विभिन्न प्रकाशनों का विमोचन किया। इस तीन दिवसीय कार्यशाला में छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश के 81 कृषि विज्ञान केन्द्रों के प्रमुख, विषय वस्तु विशेषज्ञ तथा कृषि वैज्ञानिक शामिल हुए हैं।

कृषि मंत्री श्री नेताम ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने ''एक गांव, एक फसल'' का आव्हान किया है। देश को सक्षम और समृद्धशाली बनाने हेतु प्रधान मंत्री श्री मोदी की सोच के अनुरूप कृषि वैज्ञानिकों और इस क्षेत्र में कार्य कर रहे लोगों को नवीन अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी का विकास कर उत्पादन में वृद्धि करने की दिशा में कार्य करना चाहिए। उन्होंने कहा कि देश भर में सभी जिलों में कृषि विज्ञान केन्द्र स्थापित हैं। उन्होंने कहा कि कृषि विज्ञान केन्द्रों को विभिन्न जिलों की स्थानीय आवश्यकताओं और परिस्थितियों के अनुरूप फसलों का चयन कर कृषि विकास की योजनाएं बनानी और क्रियान्वित करनी चाहिए। श्री नेताम ने इस मौके पर हरित क्रांति के जनक महान कृषि वैज्ञानिक डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन को भी याद किया।

नगरीय निकायों को चुंगी क्षतिपूर्ति मद में 28.16 करोड़ रुपए आबंटित, 166 नगरीय निकायों को जारी की गई राशि

रायपुर (विश्व परिवार)। नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग ने प्रदेश के 166 नगरीय निकायों को चुंगी क्षतिपूर्ति मद के अंतर्गत कुल 28 करोड़ 16 लाख 25 हजार रुपए आबंटित किए हैं। विभाग द्वारा राज्य की 14 नगर निगमों को दस करोड़ 12 लाख 50 हजार रुपए, 44 नगर पालिकाओं को आठ करोड़ 70 लाख रुपए और 108 नगर पंचायतों को नौ करोड़ 33 लाख 75 हजार रुपए जारी किए गए हैं। उप मुख्यमंत्री तथा नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री श्री अरुण साव के अनुमोदन के बाद नगरीय निकायों को वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए चुंगी क्षतिपूर्ति मद के अंतर्गत महापौर/अध्यक्ष निधि की शेष 50 प्रतिशत राशि जारी की गई है। नगरीय प्रशासन विभाग ने चुंगी क्षतिपूर्ति मद के अंतर्गत रायपुर, भिलाई, बिलासपुर और कोरबा नगर निगमों में प्रत्येक को एक करोड़ 12 लाख 50 हजार रुपए की महापौर/अध्यक्ष निधि जारी की है। बिरगांव, धमतरी, दुर्ग, रिसाली, भिलाई-चरोदा, राजनांदगांव, जगदलपुर, रायगढ़, अंबिकापुर और चिरमिरी नगर निगमों में प्रत्येक को 56 लाख 25 हजार रुपए आबंटित किए गए हैं। विभाग द्वारा भाटापारा और महासमुंद नगर पालिकाओं में प्रत्येक को 37 लाख 50 हजार रुपए तथा पंडरिया नगर पालिका को 26 लाख 25 हजार रुपए जारी किए गए हैं।

डोंगरगढ़ के पंजीकृत प्रेस क्लब प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का चुनाव सम्पन्न

डोंगरगढ़ (विश्व परिवार)। राजनांदगांव जिले के डोंगरगढ़ के पंजीकृत प्रेस क्लब प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का संयुक्त संगठन प्रेस क्लब का चुनाव नए रेस्टहाउस में चुनाव अधिकारी वरिष्ठ अधिवक्ता आर.के. ठाकुर के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। 3 पदों के लिए कुल 6 लोगों ने नामंकन भरा था जिसमें क्रमश: वरिष्ठ पत्रकार सोन कुमार सिन्हा व किशोर परमार ने अध्यक्ष पद हेतु, वरिष्ठ पत्रकार प्रणय अग्रवाल, कामेश्वर प्रसाद साहू कोसाध्यक्ष पद हेतु व सचिव पद हेतु युवा पत्रकार अभिलाष देवांगन, दिनेश निषाद ने नामाकन भरा था। सहायक चुनाव अधिकारी सुमीत साहू ने कहा कि अध्यक्ष पद के लिए दो नाम में वरिष्ठ पत्रकार किशोर परमार ने नामाकन भरा था। श्री सिन्हा के समर्थन में नाम वापस ले लिया इसी प्रकार से कोसाध्यक्ष पद के लिय कामेश साहू ने नामाकन भरा था श्री अग्रवाल के समर्थन में नाम वापस ले लिया और सचिव पद हेतु दिनेश निसाद ने भरा था श्री देवांगन के समर्थन में नाम वापस ले लिया इस तरह से तीनों पदों के लिए पदाधिकारी 3 वर्ष के लिए निर्विरोध चुने गए।

वीओ- भारत सरकार व छत्तीसगढ़ सरकार के पंजीयन शाखाओं से पंजीकृत प्रेस क्लब डोंगरगढ़ के चुनाव की प्रक्रिया में 26 जून दिन बुधवार से प्रारंभ हो गया था जिसमें अध्यक्ष, कोषाध्यक्ष, सचिव पद के लिए चुनाव हुआ सहायक चुनाव अधिकारी सुमीत साहू ने बताया कि चुनाव की नामंकन 26 जून दिन मंगलवार को सुबह 11 बजे से 2 बजे नामंकन भरा गया था तत्पश्चात 27 जून दिन बुधवार को दोपहर 2 बजे तक नाम वापसी हुआ उसके बाद आज 28 जून दिन शुक्रवार समय 3 बजे से शाम 5 बजे तक चुनाव का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ चुनाव अधिकारी द्वारा नए पदाधिकारीयो की घोषणा की नए पदाधिकारीयो का शपथ दिलाई गई उपरोक्त चुनाव में पंजीकृत प्रेस क्लब डोंगरगढ सदस्य ने भाग लिया था उपस्थित सदस्यो एवं गणमान्य नागरिकों के उपस्थिति में शपथ ग्रहण हुआ।अधिकारी अधिवक्ता/चुनाव अधिकारी श्री आर.के. ठाकुर ने शपथ दिलाई।

भूभौतिकी, भूविज्ञान और प्राकृतिक संसाधनों से ऊर्जा निकालने हेतु एनआईटी रायपुर और सीएसआईआर-एनजीआरआई, हैदराबाद के बीच हुआ एमओयू

रायपुर (विश्व परिवार)। भूभौतिकी, भूविज्ञान और प्राकृतिक संसाधनों से ऊर्जा निकालने के क्षेत्र में रिसर्च और विकास कार्य करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान रायपुर और सीएसआईआर-राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-एनजीआरआई), हैदराबाद के बीच 27 जून 2024 को एम ओ यू पर हस्ताक्षर किये गए। प्रोफेसर एन वी रमना राव, निदेशक, एनआईटी रायपुर, डॉ प्रकाश कुमार निदेशक सीएसआईआर-एनजीआरआई, हैदराबाद ने एम ओ यू पर हस्ताक्षर किये। इस दौरान एनआईटी रायपुर और सीएसआईआर-एनजीआरआई हैदराबाद के प्रमुख फैकल्टी मेम्बेर्स और साइंटिस्ट उपस्थिति रहे।

दोनों पक्षों द्वारा हस्ताक्षरित समझौते में सहयोग के कई प्रमुख क्षेत्रों की रूपरेखा तय की गई गई है। यह सहयोग भूभौतिकी, भूविज्ञान और प्राकृतिक संसाधनों से ऊर्जा निकालने के क्षेत्र में शोध कार्यों की संयुक्त रूप से पहचान करने और उन्हें आगे बढ़ाने पर केंद्रित होगा। एनआईटी रायपुर और सीएसआईआर-एनजीआरआई संयुक्त अनुसंधान कार्यक्रमों को बढ़ावा देने और उन्हें आगे बढ़ाने के लिए मिलकर काम करेंगे। इस समझौते में दोनों संस्थानों की संयुक्त विशेषज्ञता का लाभ उठाते हुए एक दुसरे को सहायता प्रदान करने के प्रावधान शामिल हैं। दोनों संस्थानों द्वारा सहयोगात्मक प्रयासों से परिणामों की प्राप्ति के लिए दिशानिर्देश तय किए जाएंगे ताकि दोनों ही संस्थान निष्पक्ष और न्यायसंगत लक्ष्यों को प्राप्त कर सके। यह समझौता उन क्षेत्रों में भी सहयोग की अनुमति देता है जिसमें दोनों संस्थान परस्पर काम कर सकते हैं। इस सहयोग से नवाचार को बढ़ावा मिलने, अकादमिक आदान-प्रदान में वृद्धि होने और भूभौतिकी और भूविज्ञान क्षेत्र में रिसर्च और उसके एप्लीकेशन में महत्वपूर्ण चुनौतियों का समाधान करने में योगदान मिलेगा। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान रायपुर और सीएसआईआर-एनजीआरआई दोनों ने इस साझेदारी के संभावित परिणामों के बारे में सकारात्मक आशा व्यक्त की है। एनआईटी रायपुर से अनुप्रयुक्त भूविज्ञान विभाग के डॉ. डी.सी. झारिया और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग के डॉ. सचिन जैन सीएसआईआर-एनजीआरआई, हैदराबाद के साथ इन सभी सहयोगी गतिविधियों का समन्वय करेंगे।

छ.ग. स्टेट पॉवर कंपनी से ईडी सरोज तिवारी, जीएम कश्यप एवं सीई श्रीवास्तव की भावभीनी विदाई

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी से कार्यपालक निदेशक (राजस्व) श्रीमती सरोज तिवारी, महाप्रबंधक (मानव संसाधन) श्री पोषण कुमार कश्यप एवं मुख्य अभियंता (टी.एण्ड क्यू.) श्री आशीष श्रीवास्तव को सेवानिवृत्ति पश्चात् भावभीनी विदाई दी गई। इस अवसर पर पॉवर जनरेशन कंपनी के प्रबंध निदेशक श्री एस.के.कटियार, पॉवर ट्रांसमिशन एवं डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी के प्रबंध निदेशक श्री राजेश शुक्ला सहित कार्यपालक निदेशक एवं मुख्य अभियंतागण उपस्थित थे। प्रबंधक निदेशकगणों ने सेवानिवृत्त अधिकारियों को प्रतीकात्मक भेंट एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित कर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

इस अवसर पर प्रबंध निदेशकगण श्री कटियार एवं श्री शुक्ला ने अपने उद्बोधन में सेवानिवृत्त अधिकारियों के कार्यों की सराहना करते हुए उनके योगदान को कंपनी हित में बहुमूल्य निरूपित किया। कंपनी हित में किये गये कार्यों की उन्होंने प्रशंसा की एवं उनकी बेहतर कार्यशैली से पॉवर कंपनी के लक्ष्य को हासिल करने के लिए साधुवाद दिया एवं सुखद सेवानिवृत्ति के लिए शुभकामनाएं दी।

विदाई समारोह में श्रीमती तिवारी, श्री कश्यप एवं श्री श्रीवास्तव ने अपने अनुभव साझा किये। तीनों अधिकारियों ने अपनी सफलता का श्रेय टीमवर्क को दिया तथा सेवायात्रा के दौरान अधिकारी-कर्मचारियों से मिले सहयोग के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन अतिरिक्त महाप्रबंधक (जनसंपर्क) श्री उमेश कुमार मिश्र ने किया।

एटी ज्वेलर्स द्वारा डायमंड क्लब कार्निवल 2024 का कल भव्य आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। मध्यभरत का सबसे विश्वसनीय एवं लोकप्रिय ज्वैलरी ब्रांड एटी ज्वेलर्स के सदर बाजार स्थित फ्लैगशिप स्टोर द्वारा कल 30 जून रविवार को साइंस कॉलेज के पास स्थित पंडित दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम में 4 बजे से डायमंड क्लब कार्निवल 2024 का भव्य आयोजन किया जा रहा है जिसमें प्रख्यात टेलीविजन अभिनेत्री पूजा गौर शिरकत कर रही है। एसबी बाय एटी ज्वेलर्स द फ्लैगशिप स्टोर के डायरेक्टर श्री सौरभ बरडिया ने बताया कि शोरूम द्वारा संचालित डायमंड क्लब के मेंबर्स के लिए यह एक प्रिविलेज आयोजन किया जा रहा है जिसमें स्पार्कलिंग ज्वेलरी कलेक्शन एवं ज्वेलरी फैशन शो के साथ म्यूजिकल डांस परफॉर्मेंस, सिंगिंग जिसमे अपने सुरीले अंदाज के लिए मशहूर गायिका ऐश्वर्या पंडित अपने म्यूजिकल बैंड के साथ नए पुराने गीतों से समा बंधेंगी। प्रत्येक मेहमान की कलाई पर एक विशेष लक्की नंबर का बैंड होगा तथा पूरे कार्यक्रम के दौरान विभिन्न लक्की ड्रा के द्वारा ए टी ज्वैलर्स द्वारा कार्यक्रम में आने वालों को सरप्राईज पुरस्कार दिया जाएगा एवं साथ ही मजेदार गेम्स भी आयोजित होंगे साथ ही पूजा गौर से मिलने का मौका भी मिलेगा और मध्यभारत में इस प्रकार का यह पहला ज्वेलरी फैशन शो हो रहा है।

चौथे स्टेज के ओवेरियन कैंसर से ग्रसित 15 वर्षीय बालिका के लिए देवदूत साबित हुए डॉ. रवि जायसवाल

कैंसर पर विजय प्राप्त कर हाई स्कूल बोर्ड परीक्षा को 80 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण किया बालिका ने

कोरबा (विश्व परिवार)। मध्य भारत के प्रसिद्ध कैंसर एवं रक्त रोग विशेषज्ञ डॉ. रवि जायसवाल पुन: एक 15 वर्षीय बालिका के लिए देवदूत साबित हुए, लड़की चौथे स्टेज के ओवेरियन कैंसर से ग्रसित थी, परिवारजन उम्मीद छोड़ चुके थे किन्तु डॉ. रवि जायसवाल के चिकित्सकीय कौशल व उचित इलाज से वह बालिका अब पूर्णत: स्वस्थ हो चुकी है, कैंसर पर विजय प्राप्त कर बालिका ने हाई स्कूल की परीक्षा को 80 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण कर अन्य कैंसर मरीजों के लिए प्रेरणास्त्रोत बनी है।

बसना निवासी एक 15 वर्षीय बालिका को पेट दर्द, सूजन, भूख में कमी व वजन कम होने की शिकायत हुई, वह लगातार 04-05 महीनों तक कई डॉक्टरों के पास जाकर अपना इलाज कराई किन्तु आराम नहीं मिला, बालिका ने स्कूल जाना बंद कर दिया, वह खाना भी नहीं खा पाती थी, सांस लेने में दिक्कत के साथ-साथ 02 माह में 07 किलो वजन कम हो गया तथा शरीर बहुत ज्यादा कमजोर हो गया था, उसके परिजनों ने नवम्बर 2023 में रामकृष्ण केयर हास्पिटल रायपुर में लड़की को भर्ती कराया, जहाँ पर उसका सीटीस्केन किया गया, जिसमें उसके अण्डाशय से लिम्फनोड मेटास्टेटिस के साथ 18 सेंटीमीटर का ट्यूमर निकला, उक्त बालिका एवं उसके परिजन स्तब्ध रह गए, जब उन्हें पता चला कि इस कम उम्र में डिम्बग्रंथि में चौथे स्टेज का कैंसर हैं। डॉ. रवि जायसवाल एवं अन्य डॉक्टरों ने उसे दिलासा दिलाया कि सब ठीक हो जाएगा, बस उसे हिम्मत रखनी है, हार नहीं माननी है, कैंसर पर विजय प्राप्त करनी है। रक्त ट्यूमर मार्करों की जांच कराने पर पता चला की बालिका को मिश्रित रोगाणु कोशिका ट्यूमर है. डॉ. रवि जायसवाल ने पांच दिवसीय प्रोटोकाल के तहत उसकी कीमोथेरेपी इलाज प्रारंभ किया, यह एक जटिल एवं चुनौतीपूर्ण इलाज था, क्योंकि उसके पेट से तरल पदार्थ निकालना था, जबकि बालिका को बिस्तर से उठते समय भी सांस लेने में कठिनाई हो रही थी।

कीमोथेरेपी के प्रथम चक्र से ही सुधार प्रारंभ : बालिका को कीमोथेरेपी प्रारंभ की गई, कीमोथेरेपी के प्रथम चक्र के इलाज के बाद से ही बालिका की हालत में उल्लेखनीय सुधार हुआ, अब वह खाना खा सकती थी, गहरी सांस ले सकती थी। कीमोथेरेपी के तीन चक्र के इलाज के बाद उसका ट्यूमर पूरी तरह से ठीक हो गया और उसमें कोई लक्षण नहीं दिखे, रक्त ट्यूमर मार्कर परीक्षण एवं पोस्ट कीमो सीटीस्केन में अच्छे रिजल्ट आए। बालिका को सर्जिकल टीम के पास भेजा गया, वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. संदीप दवे, डॉ. सिद्धार्थ ताम्रकार, डॉ. सौरभ जैन, डॉ. विकम शर्मा की टीम ने बालिका की प्रजनन क्षमता बरकरार रखते हुए उसका सफल ऑपरेशन किया, अब वह पूर्णत: स्वस्थ है तथा उज्जवल एवं स्वस्थ जीवन के प्रति पूर्णत: आश्वस्त भी।

चौथे स्टेज का कैंसर अब मौत की सजा नहीं : सुप्रसिद्ध कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. रवि जायसवाल कहते हैं कि चौथे स्टेज का कैंसर हो जाना अब मौत की सजा नहीं है, अब इसका पूर्ण इलाज संभव है। उन्होने बताया कि कैंसर के इलाज के विकल्पों में कई नए उपचार जोड़े गए हैं, जो एडवांस स्टेज के कैंसर का इलाज करने में भी सक्षम है, जैसे कि टारगेटेडथेरेपी, इम्युनोथेरेपी। उन्होने बताया कि छोटे बच्चों और वयस्कों में डिम्बग्रंथि व बृषण कैंसर में जर्म सेल ट्यूमर होने की अधिक संभावना होती है। यहाँ उल्लेखनीय है कि डॉ. रवि जायसवाल ने हजारों कैंसर रोगियों के इलाज के साथ-साथ पिछले पांच वर्षों में 90 प्रतिशत सफलता दर के साथ 60 से भी अधिक जर्म सेल ट्यूमर का इलाज किया है।

सकारात्मक सोच बेहतर इलाज में सहायक : डॉ. रवि जायसवाल कहते हैं कि मरीज की सकारात्मक सोच उसके बेहतर इलाज में सहायता देती है। मैं लडूंगा, फाईट करूंगा और कैंसर को हराऊंगा, यह सोच होनी चाहिए कैंसर की मरीज की, उसकी यह सोच बीमारी और उसके इलाज में सकारात्मक प्रभाव डालती है। डॉ. रवि जायसवाल बार-बार कहते हैं कि कैंसर अब असाध्य नहीं है, उसका पूर्ण इलाज होता है, कैंसर को पूरी तरह हराया जा सकता है, केवल जरूरत है बेहतर इलाज की।

खड़गपुर रेल मंडल में नॉन-इंटरलाकिंग कार्य के फलस्वरूप पूर्व में रद्द की गई गाड़ियां अब अपने समयानुसार चलेंगी

नॉन-इंटरलाकिंग कार्य के दौरान कुछ गाड़ियों को अपने निर्धारित समय-सारणी से विलंब से रवाना की जाएगी

रायपुर (विश्व परिवार)। दक्षिण पूर्व रेलवे के खड़गपुर रेल मंडल के अंतर्गत सांकराईल-सांतरागाछी लिंक लाइन को आन्दुल स्टेशन से जोड़ने का कार्य ब्लॉक लेकर किया जाएगा। यह कार्य दिनांक 29 जून से 08 जुलाई, 2024 तक किया जाएगा। इसके फलस्वरूप पूर्व में दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे से चलने/गुजरने वाली कुछ यात्री गाड़ियों को रद्द किया गया था, जिन्हें यथावत किया गया है। अब ये गाड़ियां अपने समयानुसार चलेंगी। नॉन-इंटरलाकिंग कार्य के दौरान कुछ गाड़ियों को अपने निर्धारित समय-सारणी से विलंब से रवाना की जाएगी। विस्तृत विवरण इस प्रकार है:-

पूर्व में रद्द की गई गाड़ियां, जिन्हें यथावत की गई है- दिनांक 04 से 06 जुलाई, 2024 तक एलटीटी से रवाना होने वाली गाडी संख्या 18029 एलटीटी- शालीमार एक्सप्रेस को पूर्व में रद्द की गई थी, अब यह गाड़ी अपने समयानुसार चलेगी। 06 से 08 जुलाई, 2024 तक शालीमार से रवाना होने वाली गाडी संख्या 18030 शालीमार-एलटीटी एक्सप्रेस को पूर्व में रद्द की गई थी, अब यह गाड़ी अपने समयानुसार चलेगी। 04 से 06 जुलाई, 2024 तक पुणे से रवाना होने वाली गाडी संख्या 12129 पुणे-हावड़ा आजाद हिन्द एक्सप्रेस को पूर्व में रद्द की गई थी, अब यह गाड़ी अपने समयानुसार चलेगी। 06 से 08 जुलाई, 2024 तक हावड़ा से रवाना होने वाली गाडी संख्या 12130 हावड़ा-पुणे आजाद हिन्द एक्सप्रेस को पूर्व में रद्द की गई थी, अब यह गाड़ी अपने समयानुसार चलेगी।

04 जुलाई, 2024 को पोरबंदर से रवाना होने वाली गाडी संख्या 12905 पोरबंदर-शालीमार एक्सप्रेस को पूर्व में रद्द की गई थी, अब यह गाड़ी अपने समयानुसार चलेगी। 06 जुलाई, 2024 को शालीमार से रवाना होने वाली गाडी संख्या 12906 शालीमार-पोरबंदर एक्सप्रेस को पूर्व में रद्द की गई थी, अब यह गाड़ी अपने समयानुसार चलेगी। 06 जुलाई, 2024 को उदयपुर से रवाना होने वाली गाडी संख्या 20971 उदयपुर-शालीमार एक्सप्रेस को पूर्व में रद्द की गई थी, अब यह गाड़ी अपने समयानुसार चलेगी। 07 जुलाई, 2024 को शालीमार से रवाना होने वाली गाडी संख्या 20972 शालीमार-उदयपुर एक्सप्रेस को पूर्व में रद्द की गई थी, अब यह गाड़ी अपने समयानुसार चलेगी। 05 जुलाई, 2024 को पोरबंदर से रवाना होने वाली गाडी संख्या 12949 पोरबंदर-सांतरागाछी एक्सप्रेस को पूर्व में रद्द की गई थी, अब यह गाड़ी अपने समयानुसार चलेगी।07 जुलाई, 2024 को सांतरागाछी से रवाना होने वाली गाडी संख्या 12950 सांतरागाछी-पोरबंदर एक्सप्रेस को पूर्व में रद्द की गई थी, अब यह गाड़ी अपने समयानुसार चलेगी। 06 जुलाई, 2024 को कामाख्या से रवाना होने वाली गाडी संख्या 22512 कामाख्या-एलटीटी एक्सप्रेस को पूर्व में रद्द की गई थी, अब यह गाड़ी अपने समयानुसार चलेगी। 09 जुलाई, 2024 को एलटीटी से रवाना होने वाली गाडी संख्या 22511 एलटीटी-कामाख्या एक्सप्रेस को पूर्व में रद्द की गई थी, अब यह गाड़ी अपने समयानुसार चलेगी। 06 जुलाई, 2024 तक एलटीटी से रवाना होने वाली गाडी संख्या 12101 एलटीटी-शालीमार एक्सप्रेस को पूर्व में रद्द की गई थी, अब यह गाड़ी अपने समयानुसार चलेगी। 08 जुलाई, 2024 तक शालीमार से रवाना होने वाली गाडी संख्या 12101 शालीमार-एलटीटी एक्सप्रेस को पूर्व में रद्द की गई थी, अब यह गाड़ी अपने समयानुसार चलेगी।

विलंब से रवाना होने वाली गाडियां- गाड़ी संख्या 12129 पुणे-हावड़ा आजाद हिन्द एक्सप्रेस पुणे स्टेशन से दिनांक 30 जून 2024 को 30 मिनट विलंब से, दिनांक 01 जुलाई 2024 को 90 मिनट विलंब से एवं दिनांक 04 जुलाई 2024 को 3 घंटे विलंब से रवाना होगी। दिनांक 30 जून 2024 को ओखा से रवाना होने वाली गाडी संख्या 22905 ओखा-शालीमार एक्सप्रेस 01 घंटे विलंब से रवाना होगी। 01 जुलाई, 2024 तक एलटीटी से रवाना होने वाली गाडी संख्या 12101 एलटीटी-शालीमार एक्सप्रेस 01 घंटे 30 मिनिट विलंब से रवाना होगी। 01 जुलाई, 2024 को हावड़ा से रवाना होने वाली गाडी संख्या 12262 हावड़ा-मुंबई दुरन्तो एक्सप्रेस 01 घंटे 15 मिनट विलंब से रवाना होगी। 04 जुलाई, 2024 को छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनल से रवाना होने वाली गाडी संख्या 12809 छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनल -हावड़ा मेल 03 घंटे विलंब से रवाना होगी। 04 जुलाई, 2024 तक एलटीटी से रवाना होने वाली गाडी संख्या 12151 एलटीटी-शालीमार एक्सप्रेस 01 घंटे 45 मिनिट विलंब से रवाना होगी। 06 जुलाई, 2024 को हावड़ा से रवाना होने वाली गाडी संख्या 12222 हावड़ा-पुणे दुरन्तो एक्सप्रेस 01 घंटे 45 मिनट विलंब से रवाना होगी। दिनांक 04 जुलाई, 2024 को पोरबंदर से रवाना होने वाली गाडी संख्या 12905 पोरबंदर-शालीमार एक्सप्रेस 03 घंटे विलंब से रवाना होगी।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा मे. विश्व परिवार इंडस्ट्रीज, प्लॉट नं.-421 सेक्टर-सी, सड़क नं.-7 उरला इंडस्ट्रीयल एरिया उरला, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354